

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

18-मार्च-2017 22:20 IST

इंडिया टुडे कॉन्क्लेव में प्रधान मंत्री के भाषण (वीडियो कान्फ्रेंसिंग के माध्यम से) का मूल पाठ

सबसे पहले आप सभी को इस आयोजन के लिए बहुत-बहुत बधाई-शुभकामनाएं।

इंडिया टुडे कॉन्क्लेव से जुड़ने का मुझे पहले भी अवसर मिला है। मुझे बताया गया है कि कल इंडिया टुडे ग्रुप के एडिटर इन चीफ ने मुझे नया पद दे दिया है- “डिसरप्टर- इन- चीफ” का। दो दिन से आप लोग “द ग्रेट डिसरप्शन” पर मंथन कर रहे हैं।

दोस्तों, अनेक दशकों तक हम गलत नीतियों के साथ गलत दिशा में चले। सब कुछ सरकार करेगी यह भाव प्रबल हो गया। कई दशकों के बाद गलती ध्यान में आई। गलती सुधारने का प्रयास हुआ। और सोचने की सीमा बस इतनी थी कि दो दशक पहले गलती सुधारने का एक प्रयास हुआ और उसे ही रीफॉर्म मान लिया गया।

ज्यादातर समय देश ने या तो एक ही तरह की सरकार देखी या फिर मिली-जुली। उसके कारण देश को एक ही Set of Thinking या activity नजर आई।

पहले पॉलिटिकल सिस्टम से जन्मी election driven होती थी या फिर ब्यूरोक्रेसी के रिजिड फ्रेमवर्क पर आधारित थी। सरकार चलाने के यही दो सिस्टम थे और सरकार का आकलन भी इसी आधार पर होता था।

हमें स्वीकार करना होगा कि 200 साल में technology जितनी बदली, उससे ज्यादा पिछले 20 साल में बदली है।

स्वीकार करना होगा कि 30 वर्ष पहले के युवा और आज के युवा की aspirations में बहुत अंतर है।

स्वीकार करना होगा कि Bipolar World और Inter-dependent world की सभी equations बदल चुकी हैं।

आजादी के आंदोलन के कालखंड को देखें तो उसमें Personal aspiration से ज्यादा National Aspiration था। उसकी तीव्रता इतनी थी कि उसने देश को सैकड़ों सालों की गुलामी से बाहर निकाला। अब समय की मांग है-आजादी के आंदोलन की तरह विकास का आंदोलन- जो पर्सनल एस्पिरेशन को कलेक्टिव एस्पिरेशन में विस्तार करे और कलेक्टिव एस्पिरेशन देश के सर्वांगीण विकास का हो।

ये सरकार एक भारत-श्रेष्ठ भारत का सपना लेकर चल रही है। समस्याओं को देखने का तरीका कैसा हो, इस पर approach अलग है। बहुत साल तक देश में अंग्रेजी-हिंदी पर संघर्ष होता रहा। हिंदुस्तान की सभी भाषाएं हमारी अमानत हैं। ध्यान दिया गया कि सभी भाषाओं को एकता के सूत्र में कैसे बांधा जाए। एक भारत-श्रेष्ठ भारत कार्यक्रम में दो-दो राज्यों की pairing कराई और अब राज्य एक दूसरे की सांस्कृतिक विविधता के बारे में जान रहे हैं।

यानि चीजें बदल रही हैं और तरीका अलग है। इसलिए आपका ये शब्द इन सब बातों के लिए छोटा पड़ रहा है। ये व्यवस्थाओं को ध्वस्त करने वाली सोच नहीं है। ये कायाकल्प है जिससे इस देश की आत्मा अक्षुण्ण रहे, व्यवस्थाएं समय के अनुकूल होती चले। यही 21वीं सदी के जनमानस का मन है। इसलिए “डिसरप्टर- इन- चीफ” अगर कोई है तो देश के सवा सौ करोड़ हिन्दुस्तानी हैं। जो हिंदुस्तान के जन-मन से जुड़ा है वो भली-भांति समझ जाएगा कि डिसरप्टर कौन है।

बंधे-बंधाए विचार, बातों को अब भी पुराने तरीके से देखने का नजरिया ऐसा है कि कुछ लोगों को लगता है कि सत्ता के गलियारे से ही दुनिया बदलती है। ऐसा सोचना गलत है।

हमने Time bound इम्पलिमेंटेशन और Integrated thinking को सरकार की work-culture के साथ जोड़ा है। काम करने का ऐसा तरीका जहां सिस्टम में ट्रांसपेरेंसी हो, प्रोसेसेस को citizen friendly और development friendly बनाया जाए, efficiency लाने के लिए process को re-engineer किया जाए। दोस्तों, आज भारत दुनिया की तेजी से विकसित होती अर्थ-व्यवस्थाओं में से एक है। वर्ल्ड इन्वेस्टमेंट रिपोर्ट में भारत को दुनिया की टॉप तीन प्रॉस्पेक्टिव होस्ट इकोनोमी में

आंका गया है। वर्ष 2015-16 में 55 बिलियन डॉलर से ज्यादा का रिकॉर्ड निवेश हुआ। दो सालों में वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम के Global कम्पटीटिवनेस इन्डेक्स में भारत 32 स्थान ऊपर उठा है।

मेक इन इंडिया आज भारत का सबसे बड़ा इनीशिएटिव बन चुका है। आज भारत दुनिया का छठा सबसे बड़ा मैन्यूफैक्चरिंग देश है।

दोस्तों, ये सरकार कोओपरेटिव फेडरलिज्म पर जोर देती है। GST आज जहां तक पहुंचा है, वो डेलीबरेटिव डेमोक्रेसी का परिणाम है जिसमें हर राज्य के साथ संवाद हुआ। GST पर सहमति होना एक महत्वपूर्ण outcome है लेकिन इसकी प्रक्रिया भी उतनी ही महत्वपूर्ण है।

ये ऐसा निर्णय है जो आम सहमति से हुआ है। सभी राज्यों ने मिलकर इसकी ownership ली है। आपके नजरिए से ये डिसरपटिव हो सकता है, लेकिन GST दरअसल Federal structure के नई ऊंचाई पर पहुंचने का सबूत है।

सबका साथ-सबका विकास सिर्फ नारा नहीं है, इसे जी कर दिखाया जा रहा है।

दोस्तों, हमारे देश में वर्षों से माना गया कि labour laws विकास में बाधक हैं। दूसरी तरफ ये भी माना गया कि labour laws में सुधार करने वाले anti-labour हैं। यानि दोनों एक्सट्रीम स्थिति थी।

कभी ये नहीं सोचा गया कि इम्प्लायर, इम्प्लॉई और एम्प्लोयीन्ट्स तीनों के लिए एक होलिस्टिक अप्रोच लेकर कैसे आगे बढ़ा जाए।

देश में अलग-अलग श्रम कानूनों के पालन के लिए पहले एम्प्लॉयर को 56 अलग-अलग रजिस्ट्रारों में जानकारी भरनी होती थी। एक ही जानकारी बार-बार अलग-अलग रजिस्ट्रारों में भरी जाती थी। अब पिछले महीने सरकार ने नोटिफाई किया है कि एम्प्लॉयर को labour laws के तहत 56 नहीं सिर्फ 5 रजिस्ट्रारों को maintain करने होंगे। ये business को easy करने में उद्यमियों की बड़ी मदद करेगा।

जॉब मार्केट के विस्तार पर भी सरकार का पूरा ध्यान है। Public Sector, Private Sector के साथ ही सरकार का जोर Personal Sector पर भी है।

मुद्रा योजना के तहत नौजवानों को बिना बैंक गारंटी कर्ज दिया जा रहा है। पिछले ढाई वर्षों में छह करोड़ से ज्यादा लोगों को मुद्रा योजना के तहत तीन लाख करोड़ से ज्यादा कर्ज दिया गया है।

सामान्य दुकानें और संस्थान साल में पूरे 365 दिन खुले रह सकें उसके लिए भी राज्यों को सलाह दी गई है।

पहली बार कौशल विकास मंत्रालय बनाकर इस पर पूरी प्लानिंग के साथ काम हो रहा है। प्रधानमंत्री रोजगार प्रोत्साहन योजना और इनकम टैक्स में छूट के माध्यम से Formal Employment को बढ़ावा दिया जा रहा है।

इसी तरह अप्रेंटिसशिपएक्ट में सुधार करके अप्रेंटिसों की संख्या बढ़ाई गई है और अप्रेंटिस के दौरान मिलने वाले स्टार्डिपेंड में भी बढ़ोतरी की गई है।

साथियों, सरकार की शक्ति से जनशक्ति ज्यादा महत्वपूर्ण है। इंडिया टुडे कॉन्क्लेव के मंच पर मैं पहले भी कह चुका हूं कि बिना देश के लोगों को जोड़े, इतना बड़ा देश चलाना संभव नहीं है। बिना देश की जनशक्ति को साथ लिए आगे बढ़ना संभव नहीं है। दीवाली के बाद कालेधन और भ्रष्टाचार के खिलाफ हुई कार्रवाई के बाद आप सभी ने जनशक्ति का ऐसा उदाहरण देखा है, जो युद्ध के समय अथवा संकट के समय ही दिखता है।

ये जनशक्ति इसलिए एकजुट हो रही है क्योंकि लोग अपने देश के भीतर व्याप्त बुराइयों को खत्म करना चाहते हैं, कमजोरियों को हराकर आगे बढ़ना चाहते हैं, एक New India बनाना चाहते हैं।

अगर आज स्वच्छ भारत अभियान के तहत देश में 4 करोड़ से ज्यादा शौचालय बने हैं, 100 से ज्यादा जिले खुले में शौच से मुक्त घोषित हुए हैं तो ये इसी जनशक्ति की एकजुटता का प्रमाण है।

अगर एक करोड़ से ज्यादा लोग गैस सब्सिडी का फायदा उठाने से खुद इनकार कर रहे हैं तो ये इसी जनशक्ति का उदाहरण है।

इसलिए आवश्यक है कि जनभावनाओं का सम्मान हो और जनआकांक्षाओं को समझते हुए देशहित में फैसले लिए जाएं और उन्हें समय पर पूरा किया जाए।

जब सरकार ने जनधन योजना शुरू की तो कहा था कि देश के गरीबों को बैंकिंग सिस्टम से जोड़ेंगे। इस योजना के तहत अब तक 27 करोड़ गरीबों के बैंक अकाउंट खोले जा चुके हैं।

इसी तरह सरकार ने लक्ष्य रखा कि तीन वर्ष में देश के 5 करोड़ गरीबों को मुफ्त गैस कनेक्शन देंगे। सिर्फ 10 महीने में ही लगभग दो करोड़ गरीबों को गैस कनेक्शन दिए भी जा चुके हैं।

सरकार ने कहा था एक हजार दिन में उन 18 हजार गांवों तक बिजली पहुंचाएंगे, जहां आजादी के 70 साल बाद भी बिजली नहीं पहुंची। लगभग 650 दिन में ही 12 हजार से ज्यादा गांवों तक बिजली पहुंचाई जा चुकी है।

जहां नियम-कानून बदलने की जरूरत थी, वहां बदले गए और जहां समाप्त करने की जरूरत थी, वहां समाप्त किए गए। अब तक 1100 से ज्यादा पुराने कानूनों को खत्म किया जा चुका है।

साथियों, सालों तक देश में बजट शाम को 5 बजे पेश होता था। ये व्यवस्था अंग्रेजों ने बनाई थी क्योंकि भारत में शाम का 5 बजे ब्रिटेन के हिसाब से सुबह का साढ़े 11 बजे होता था। अटल जी ने इसमें बदलाव किया।

इस वर्ष आपने देखा है कि बजट को एक महीना पहले पेश किया गया। इमपलिमेंटेशन की दृष्टि से ये बहुत बड़ा परिवर्तन है। वरना इससे पहले फरवरी के आखिर में बजट आता था और विभागों तक पैसे पहुंचने में महीनों निकल जाते थे। फिर इसके बाद मॉनसून की वजह से काम में और देरी होती थी। अब विभागों को उनकी योजनाओं के लिए आवंटित धनराशि समय पर मिल जाएगी।

इसी तरह बजट में plan, non-plan का artificial partition था। सुर्खियों में आने के लिए नई- नई चीजों पर Emphasis दी जाती थी और जो पहले से चला आ रहा है, उसे नजरअंदाज किया जाता था। इस वजह से धरातल पर बहुत imbalance था। इस artificial division को खत्म करके हमने बहुत बड़ा बदलाव करने का प्रयास किया है।

इस बार आम बजट में रेलवे बजट का भी विलय किया गया। अलग से रेल बजट पेश करने की व्यवस्था भी अंग्रेजों की ही बनाई हुई थी। अब transport के आयाम बहुत बदल चुके हैं। रेल है, रोड है, aviation है,, वाटर वे, sea route है, इन सभी पर integrated तरीके से सोचना आवश्यक है। सरकार का ये कदम ट्रांसपोर्टेशन सेक्टर में टेक्नोलॉजिकल रीवोल्यूशन का आधार बनेगा।

पिछले ढाई वर्षों में आपने सरकार की नीति-निर्णय और नीयत, तीनों देखी है। मैं मानता हूं New India के लिए यही Approach 21वीं सदी में देश को नई ऊंचाइयों पर ले जाएगी, New India की नींव और मजबूत करेगी।

हमारे यहां ज्यादातर सरकारों की Approach रही है- दीए जलाना, रिबन काटना, और इसे भी कार्य ही माना गया, कोई इसे बुरा भी नहीं मानता था। आपको ये जानकर हैरानी होगी कि हमारे देश में 1500 से ज्यादा नए प्रोजेक्ट्स की घोषणा तो हुई लेकिन वो सिर्फ फाइलों में ही दबे रहे।

ऐसे ही कई बड़े-बड़े प्रोजेक्ट बरसों से अटके हुए हैं। अब परियोजनाओं की proper monitoring के लिए एक व्यवस्था develop की गई है- “प्रगति” यानि Pro-Active Governance and Timely इमपलिमेंटेशन प्रधानमंत्री कार्यालय में बैठता हूं और सारे केंद्रीय विभागों के सचिव, सारे राज्यों के चीफ सेक्रेटरी वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से जुड़ते हैं। जो प्रोजेक्ट रुके हुए हैं उनकी पहले से ही एक लिस्ट तैयार की जाती है।

अब तक 8 लाख करोड़ रुपए से ज्यादा की परियोजनाओं की समीक्षा प्रगति की बैठकों में हो चुकी है। देश के लिए बहुत महत्वपूर्ण 150 से ज्यादा बड़े प्रोजेक्ट, जो बरसों से अटके हुए थे, उनमें अब तेजी आई है।

देश के लिए Next Generation Infrastructre पर सरकार का फोकस है। पिछले 3 बजट में रेल और रोड सेक्टर को सर्वाधिक पैसा दिया गया है। उनके काम करने की क्षमता बढ़ाने पर भी लगातार नजर रखी जा रही है। यही वजह है कि रेल और रोड, दोनों ही सेक्टर में काम करने की जो Average Speed थी, उसमें काफी बढ़ोतरी हुई है।

पहले रेलवे के electrification का काम धीमी गति से चलता था। सरकार ने रेलवे के रूट-electrification कार्यक्रम को गति दी। इससे रेल के चलाने के खर्च में कमी आई और देश में ही उपलब्ध बिजली का उपयोग हुआ।

इसी तरह रेलवे को electricity act के अंतर्गत Open access की सुविधा दी गई। इस कारण से रेलवे द्वारा खरीदी जा रही बिजली के ऊपर भी रेलवे को बचत हो रही है। पहले बिजली वितरण कंपनियां इसका विरोध करती थीं जिससे रेलवे को उनसे मजबूरन महंगे दाम पर बिजली खरीदनी पड़ती थी। अब रेलवे कम दाम पर बिजली खरीद सकती है।

पहले Power Plants और coal की लिन्केज इस तरीके से थी कि अगर प्लांट उत्तर में है तो कोयला मध्य भारत से आएगा और उत्तर या पूर्व भारत से कोयला पश्चिम भारत में जाएगा। इस कारण Power Plants को कोयले के ट्रांसपोर्टेशन पर ज्यादा पैसा खर्च करना पड़ता था और बिजली महंगी होती थी। हमने कोल लिंकेज का रेशनलाइजेशन किया जिससे ट्रांसपोर्टेशन खर्च और समय दोनों में कमी आई और बिजली सस्ती हुई।

ये दोनों उदाहरण बताते हैं कि ये सरकार Tunnel Vision नहीं, Total Vision को ध्यान में रखते हुए काम कर रही है।

जैसे रेलवे ट्रैक के नीचे से सड़क ले जाने के लिए Rail Over Bridge बनाने के लिए महीनों तक रेलवे से ही permission नहीं मिलती थी। महीनों तक इसी बात पर माथापच्ची चलती थी कि Rail Over Bridge का डिजाइन क्या हो। अब इस सरकार में Rail Over Bridge के लिए Uniform Design बनाई गई है और proposal इस डिजाइन के आधार पर होता है तो तुरंत NOC दे दी जाती है।

बिजली उपलब्धता देश के आर्थिक विकास की पूंजी है। जब से हमारी सरकार आई है, हम पावर सेक्टर पर होलिस्टिकली काम कर रहे हैं और सफल भी हो रहे हैं। 46 हजार मेगावॉट की जनरेशन कपैसिटी को जोड़ा गया है। जनरेशन कपैसिटी करीब 25 प्रतिशत बढ़ी है। कोयले का ट्रांसपेरेंट रूप से ऑक्शन करना और पावर प्लांट को कोयला उपलब्ध कराना हमारी प्राथमिकता रही है।

आज ऐसा कोई थर्मल प्लांट नहीं है, जो कोयले की उपलब्धता की दृष्टि से क्रिटिकल हो। क्रिटिकल यानि, कोयले की उपलब्धता 7 दिन से कम की होना। एक समय बड़ी-बड़ी ब्रेकिंग न्यूज चलती थी कि देश में बिजली संकट गहरा गया है- पावर प्लांट के पास कोयला खत्म हो रहा है। पिछली बार कब ये वाली ब्रेकिंग न्यूज चलाई थी? आपको याद नहीं होगा। ये ब्रेकिंग न्यूज अब आपके आर्काइव में पड़ी होगी।

दोस्तों, सरकार के पहले दो सालों में 50 हजार सर्किट किलोमीटर ट्रांसमिशन लाइन बनाई गई। जबकि 2013-14 में 16 हजार सर्किट किलोमीटर ट्रांसमिशन लाइन बनाई गई थीं।

सरकारी बिजली डिस्ट्रिब्यूशन कंपनियों को हमारी उदय स्कीम द्वारा एक नया जीवन मिला है। इन सभी कामों से बिजली की उपलब्धता बढ़ी है और कीमत भी कम हुई है।

आज एक App - विद्युत प्रवाह - के माध्यम से देखा जा सकता है कि कितनी बिजली, कितनी कीमत पर उपलब्ध है।

सरकार Clean Energy पर भी जोर दे रही है। लक्ष्य 175 गीगावॉट renewable energy के उत्पादन का है जिसमें से अब तक 50 गीगावॉट यानी पचास हजार मेगावॉट क्षमता हासिल कर ली गई है।

भारत Global wind power Installed capacity के मामले में विश्व में चौथे नंबर पर पहुंच गया है।

सरकार का जोर बिजली उत्पादन बढ़ाने के साथ ही बिजली की खपत कम करने पर भी है। देश में अब तक लगभग 22 करोड़ LED बल्ब बांटे जा चुके हैं।

इससे बिजली की खपत में कमी आई है, प्रदूषण में कमी आई है और लोगों को 11 हजार करोड़ रुपये प्रतिवर्ष की अनुमानित बचत हो रही है।

साथियों, देश भर की ढाई लाख पंचायतों को ऑप्टिकल फाइबर से जोड़ने के लिए 2011 में काम शुरू किया गया था।

लेकिन 2011 से 2014 के बीच सिर्फ 59 ग्राम पंचायतों तक ही ऑप्टिकल फाइबर केबल डाली गई थी।

इस रफ्तार से ढाई लाख पंचायतें कब जुड़तीं, आप अंदाजा लगे सकते हैं। सरकार ने प्रक्रिया में जरूरी बदलाव किए, जो समस्याएं थीं, उन्हें दूर करने का mechanism तैयार किया।

पिछले ढाई वर्षों में 76 हजार से ज्यादा ग्राम पंचायतों को ऑप्टिकल फाइबर से जोड़ा जा चुका है।

साथ ही अब हर ग्राम पंचायत में wifi hot-spot देने की व्यवस्था की जा रही है, ताकि गांव के लोगों को आसानी से ये सुविधा मिल सके। ये भी ध्यान दिया जा रहा है कि स्कूल, अस्पताल, पुलिस स्टेशन तक भी ये सुविधा पहुंचे।

साधन वहीं हैं, संसाधन वही हैं, लेकिन काम करने का तरीका बदल रहा है, रफ्तार बढ़ रही है।

2014 से पहले एक कंपनी को Incorporate करने में 15 दिन लगते थे, अब सिर्फ 24 घंटे लगते हैं।

पहले Income Tax Refund आने में महीनों लग जाते थे, अब कुछ हफ्ते में आ जाता है। पहले पासपोर्ट बनने में भी कई महीने लग जाते थे, अब एक हफ्ते में पासपोर्ट आपके घर पर होता है। दोस्तों, हमारे लिए technology, good governance के लिए support system तो है ही इम्पॉवरमेंट of Poor के लिए भी है।

सरकार देश के किसानों की आय दोगुनी करने के उद्देश्य से काम कर रही है।

इसके लिए बीज से लेकर बाजार तक सरकार हर स्तर पर किसान के साथ खड़ी है।

किसानों को अच्छी क्वालिटी के बीज दिए जा रहे हैं, हर खेत तक पानी देने के लिए प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना शुरू की गई है।

प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के तहत ऐसे रिस्क कवर किए गए हैं जो पहले नहीं होते थे।

इसके अलावा किसानों को सॉयल हेल्थ कार्ड दिए जा रहे हैं, यूरिया की किल्लत अब पुरानी बात हो गई है।

किसानों को अपनी फसल का उचित दाम मिले इसके लिए e-NAM योजना के तहत देशभर की 580 से ज्यादा मंडियों को ऑनलाइन जोड़ा जा रहा है। स्टोरेज और सप्लाय चेन को मजबूत किया जा रहा है।

दोस्तों,

हेल्थ सेक्टर में भी हर स्तर पर काम किया जा रहा है।

बच्चों का टीकाकरण, गर्भवती महिलाओं की स्वास्थ्य सुरक्षा, प्रीवैन्टिव हेल्थकेयर, स्वच्छता, इन सभी पहलुओं को ध्यान में रखते हुए योजनाएं लागू की गई हैं।

हाल ही में सरकार ने National Health Policy को स्वीकृति दी है।

एक रोडमैप तैयार किया गया है जिससे healthcare system को देश के हर नागरिक के लिए एक्सेसेबल बनाया जाएगा।

सरकार इस कोशिश में है कि आने वाले समय में देश की GDP का कम से कम ढाई प्रतिशत स्वास्थ्य पर ही खर्च हो।

आज देश में 70 प्रतिशत से ज्यादा Medical Devices और equipment विदेश से आता है। अब प्रयास है कि Make In India के तहत local मैन्युफैक्चरिंग को बढ़ावा दिया जाए ताकि इलाज और सस्ता हो।

दोस्तों, सरकार का जोर social इनफ्रास्ट्रक्चर पर भी है।

हमारी सरकार दिव्यांग जनों के लिए सेवा भाव से काम कर रही है।

देशभर में लगभग 5 हजार कैंप लगाकर 6 लाख से ज्यादा दिव्यांगों को आवश्यक सहायता उपकरण दिए गए हैं। ये कैंप गिनीज बुक तक में दर्ज हो रहे हैं।

अस्पतालों में, रेलवे स्टेशन पर, बस स्टैंड पर, सरकारी दफ्तरों में चढ़ते या उतरते वक्त दिव्यांग जनों की मुश्किलों को ध्यान में रखते हुए सुगम्य भारत अभियान चलाया जा रहा है।

सरकारी नौकरी में उनके लिए आरक्षण भी 3 प्रतिशत से बढ़ाकर 4 प्रतिशत कर दिया गया है।

दिव्यांगों के अधिकार सुनिश्चित करने के लिए कानून में भी बदलाव किया गया है।

देशभर में दिव्यांगों की एक ही common sign language विकसित की जा रही है।

दोस्तों, सवा सौ करोड़ लोगों का हमारा देश संसाधनों से भरा हुआ है, सामर्थ्य की कोई कमी नहीं है।

2022, देश जब आज़ादी के 75वें वर्ष में पहुँचेगा तब क्या हम सब मिल कर महात्मा गाँधी, सरदार पटेल, बाबासाहेब अंबेडकर और स्वराज्य के लिए अपना जीवन देने वाले अनगिनत वीरों के सपनों के भारत को साकार कर सकते हैं?

हम में से प्रत्येक संकल्प ले - परिवार हो, संगठन हो, इकाइयों हो - आने वाले पाँच साल पूरा देश संकल्पित होकर नये भारत, न्यू इंडिया के सपने को साकार करने में जुट जाए।

सपना भी आपका, संकल्प भी, समय भी आपका, समर्पण भी आपका और सिद्धि भी आपकी।

न्यू इंडिया, सपनों से हकीकत की ओर बढ़ता भारत।

न्यू इंडिया, जहां उपकार नहीं, अवसर होंगे

न्यू इंडिया की नींव का मंत्र, सभी को अवसर, सभी को प्रोत्साहन

न्यू इंडिया, नयी संभावनाओं, नये अवसरों का भारत।

न्यू इंडिया, लहराते खेत, मुस्कुराते किसानों का भारत।

न्यू इंडिया, आपके हमारे स्वाभिमान का भारत।

AKT/SH

पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय

08-मार्च-2017 22:50 IST

गुजरात के गांधीनगर में महिला सरपंचों के समागम - स्वच्छ शक्ति 2017 में प्रधान मंत्री के भाषण का मूल पाठ

देश के कोने-कोने से आए हुए और अपनी जिम्मेवारी को बखूबी निभा करके एक प्रेरणा रूप काम किया है, ऐसी सभी माताएं, बहनें।

मेरा सौभाग्य है कि आज 8 मार्च को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर देश के कोने-कोने से आई हुई माताओं, बहनों का दर्शन करने का सौभाग्य मिला, उनके आशीर्वाद प्राप्त करने का सौभाग्य मिला।

मुझे बताया गया कि आप में से कुछ लोग 3 दिन से यहां हैं, कोई दो लोग दिन से हैं, कुछ लोग दो दिन के बाद भी रुकने वाले हैं, अलग-अलग जिलों में जाके आए हैं, गांव कैसे होते हैं; वो देख करके आए हैं। यहां भी आप लोगों ने दो प्रदर्शनी देखी होंगी; एक गांव- गांव का विकास और उसमें स्वच्छता का महात्म्य, आधुनिक Technology से बहुत ही उत्तम प्रकार की प्रदर्शनी यहां लगाई हुई है। मुझे आने में कुछ जो देर हुई, उसका एक कारण वो प्रदर्शनी में मेरा मन लग गया; मैं जरा देखता ही रह गया; तो उसके कारण यहां पहुंचने में देर हो गई। इतनी उत्तम प्रदर्शनी है, आपसे मेरा आग्रह है कि उसे सरसरी नजर से न देखें। एक विद्यार्थी की तरह उस पूरी प्रदर्शनी को आप देखिए। क्योंकि सरपंच के नाते आप जो दायित्व संभाल रहे हैं उस काम को करने में आपको एक नई दिशा मिलेगी, जानकारीयां मिलेगी, और आपका संकल्प और दृढ़ होगा, ये मेरा विश्वास है।

दूसरा ये स्वच्छ शक्ति का समारोह है। गांधी की जन्मभूमि गुजरात में है, गांधी के नाम से बने शहर में है, और गांधी जिसे हम महात्मा कहते थे, उस महात्मा मंदिर में है; इससे इसका कितना महात्म्य है, आप समझ सकते हैं। यहीं पर एक Digital प्रदर्शनी, Virtual Museum पूज्य बापू के जीवन पर है। गांधी कुटीर जो यहीं पर बनी हुई है, आप उसे भी जरूर देखिए। पूज्य बापू के जीवन के अगर हम समझेंगे तो स्वच्छता के लिए जो पूज्य बापू का आग्रह था, उसको परिपूर्ण करने का हमारा संकल्प और परिणाम लाने के लिए हमारे प्रयास कभी भी बेकार नहीं जाएंगे।

2019, महात्मा गांधी को 150 वर्ष हो रहे हैं। पूज्य बापू कहते थे कि हिन्दुस्तान गांवों में बसा हुआ है। दूसरी बात एक कहते थे, कि मुझे अगर आजादी और स्वच्छता, दोनों में से पहले कुछ पसंद करना है तो मैं स्वच्छता पसंद करूंगा। गांधी के जीवन में स्वच्छता का कितना महात्म्य था वो उनकी इस Commitment से पता चलता है। 2019 में जब हम गांधी 150 मना रहे हैं, क्या तब तक हम स्वच्छता के विषय में जो गांधी का प्रयास था, किसी एक सरकार का प्रयास नहीं है; गांधी के समय से चलता आ रहा है। हर किसी ने कुछ न कुछ किया है। लेकिन अब हमने तय करना है कि यहां तक में हमें काफी कुछ कर देना है। इसके बाद ये विषय अब हमारे स्वभाव का हिस्सा बन जाएगा, हमारी राष्ट्रीय पहचान बन जायेगा; हमारी रगों में स्वच्छता अनुभव होगी। ये स्थिति हम पैदा करना चाहते हैं। और ये देश कर सकता है।

ये वो सरपंच बहनें हैं, जिन्होंने अपने गांव में ये करके दिखाया है। खुले में शौच जाना, उसके खिलाफ उन्होंने संघर्ष किया है। गांव में इस व्यवस्था को विकसित करने के लिए प्रयास किया है। वैसी स्वच्छता के संदेश को सफलतापूर्वक अपने गांव में लागू करने वाली शक्तिरूपा लोग यहां बैठे हैं। और इसलिए मेरा विश्वास बनता है कि जो गति आई है उस गति को अगर हम बहुत ही समयबद्ध तरीके से और पूरी बारीकी से लागू करने का प्रयास करेंगे, तो गांधी 150 होते-होते हम बहुत कुछ बदलाव ला सकते हैं।

अभी आपने फिल्म देखी, उसमें बयां है, स्वच्छता के संबंध में पहले हमारा rank 42% तक था। इतने कम समय में हम 62 पर पहुंच गए। अगर इतने कम समय में 20 प्रतिशत हम सुधार कर सकते हैं, तो आने वाले डेढ़ साल में हम और अधिक कर सकते हैं, ये साफ-साफ आप लोगों ने करके दिखाया है।

आज जिन माताओं, बहनों को सम्मान करने का मुझे अवसर मिला, उनकी एक-एक मिनट की फिल्म छोटी-छोटी हमने देखी। कुछ लोगों का जो भ्रम रहता है, उन सबके भ्रम तोड़ने वाली ये सारी फिल्में हैं। कुछ लोगों को लगता है कि पढ़े-लिखे लोग ही कुछ काम कर सकते हैं, इन बहनों ने करके दिखाया।

कुछ लोगों को लगता है शहर में होंगे थोड़ी चपाचप अंग्रेजी बोल पाते होंगे वो ही कर पाते हैं। ये अपनी भाषा के सिवाय कोई भाषा नहीं जानते, तो भी ये कर पाते हैं। अगर किसी विषय के साथ व्यक्ति जुड़ जाता है, जीवन का मकसद अगर उसको मिल जाता है, तो वो उसे पार करके रहता है। बहुत लोगों को तो पता ही नहीं होता उनकी जिंदगी का मकसद क्या है। आप पूछोगे, कल क्या करोगे तो बोले शाम को सोचूंगा। जिनको अपने जीवन का मकसद ही पता नहीं है, वो जीवन में कभी कुछ नहीं कर पाते; जिंदगी गुजारा कर लेते हैं, दिन गिनते रहते हैं और कुछ चीजें दो-चार अच्छी हुई तो उसी के गाजे-बाजे के साथ गुजारा करके रात को सो जाते हैं।

लेकिन जिसको जिंदगी का मकसद मिल जाता है, Purpose of life जिसको पता चल जाता है, वह बिना रुके, बिना थके, बिना झुके, अपने लक्ष्य की पूर्ति के लिए, जिसकी भी जरूरत पड़े उसको साथ ले करके; संघर्ष करना पड़े तो संघर्ष करके, चुनौतियों से मुकाबला करना पड़े तो मुकाबला करके भी अपने मकसद को पूर्ण करने तक वो चैन से बैठते नहीं हैं।

आप में से सब सरपंच होना कोई छोटी बात नहीं है। कुछ लोग होंगे जिनको सरपंच बनने में शायद तकलीफ न हुई हो, लेकिन ज्यादातर ऐसे होंगे जिनको इस लोकतांत्रिक परम्परा में, यहां तक पहुंचने में काफी कुछ करना पड़ा होगा।

आज से 15 साल पहले कभी सरपंचों की मीटिंग हुआ करती थी, 33 percent reservation होता था, लेकिन मैं भी मीटिंगों में अनुभव करता था; मैं पहले गुजरात के बाहर काम करता था, कई अलग-अलग राज्यों में मैंने काम किया है। तो मैं पूछता था तो वो परिचय में बताते थे, पुरुष; कि मैं SP हूँ। तो मुझे भी होता था ये सरकारी आदमी यहां कैसे आ गया?

ये तो पार्टी की मीटिंग है, तो मैं पूछता था भाई आप SP यानी कहां नौकरी करते हैं? नहीं, नहीं बोले मैं SP हूं, तो मैंने कहा मतलब? तो बोले मैं सरपंच पति हूं। तो बोले मेरी बीवी सरपंच है लेकिन मीटिंग में मैं ही जाया करता हूं। अब किसी समय ऐसा था, आज ऐसा नहीं है। जिस महिला को सरपंच के नाते काम मिला है, उसको लगता है कि पांच साल मुझे जो मौका मिला है, मैं कुछ करके जाना चाहती हूं। वो अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों में सब adjust करती है। परिवार में भी अपनी Priority को लोग स्वीकार करें इसको वातावरण बनाती है। और अनुभव ये कहता है कि पुरुष सरपंच से ज्यादा महिला सरपंच अपने काम के प्रति ज्यादा समर्पित होती है। उसका Focus होता है। पुरुष सरपंच और पचासों चीजें करने में लगा रहता है। वो बना सरपंच होता है और अगली बार जिला परिषद में जाने के लिए सोचता रहता है। जिला परिषद में है तो धारा सभा में जाने के लिए सोचता रहता है। लेकिन महिलाएं जिस समय जो काम मिला उसको पूरी लगन से पूरा करने का प्रयास करती हैं। और उसका परिणाम है।

एक संस्था ने बड़ा मजेदार सर्वे किया है और उस सर्वे में उसने बड़ी महत्वपूर्ण चीजें पाई हैं। और उसने सारी जो professional महिलाएं हैं, उनका सर्वे किया था और उस सर्वे में पाया गया कि नई चीज सीखने की वृत्ति महिलाओं में ज्यादा होती है। जो काम उसको दिया गया, उसको पूरा करने के लिए जितनी अपनी क्षमता बनानी चाहिए, शक्ति लगानी चाहिए, उसमें कभी वो पीछे नहीं रहती है। जो काम उसको मिला, पूरा नहीं होता है वो चैन से बैठती नहीं है। वो उसको लगातार उसके पीछे लगी रहती है। अपना काम करने के लिए, जो तय किया हुआ है उसके जिम्मे है, उसको पूरा करने के लिए कौन-कौन से resource mobilize करने चाहिए, किस-किसकी शक्ति जोड़नी चाहिए, बड़ी आसानी से वो करती है उसको कोई Ego नहीं होता है। किसी को नमस्ते करके काम करवाना है तो नमस्ते करके करवा लेंगी, किसी से गुस्सा करके करवाना है तो गुस्सा करके करवा लेंगी। बड़ा Interesting Survey है ये।

हमारे देश की 50 प्रतिशत मातृ शक्ति भारत की विकास यात्रा की सक्रिय भागीदारी करे, हम देश को कहां से कहां पहुंचा सकते हैं। और इसलिए बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ, इस मंत्र को ले करके भी देश में काम करने की बहुत आवश्यकता है। कम से कम जहां महिला सरपंच हो उस गांव में तो भ्रूण हत्या नहीं होनी चाहिए। मां के गर्भ में बच्ची को मार देने का पाप उस गांव में कतई नहीं होना चाहिए। और वो जागरूकता का काम एक सरपंच बहन अगर तय करे तो कर सकती है। पारिवारिक दबाव में किसी अगर बहू के ऊपर जुल्म हो रहा है तो सरपंच उसकी रक्षक बनके खड़ी हो सकती है, और एक बार वो कहने लगेगी तो कोई कुछ नहीं कर सकता है। बेटी बचाओ! आज समाज, जीवन में कैसी दुर्दशा आई है! 1000 बेटे के सामने कहीं 800, कहीं 850, कहीं 900, कहीं 925 (सवा नौ सौ) बेटियां हैं। अगर समाज में इतना बड़ा असंतुलन पैदा होगा तो ये समाज ये समाज चक्र चलेगा कैसे? और ये पाप है, इसके खिलाफ समाज का दायित्व है।

सरपंच महिलाएं शायद उसमें ज्यादा सफलता पा सकती हैं। समाज में जो मानसिकता है, बेटी है! अब छोड़ो, उसको तो दूसरे के घर जाना है। बेटा है, जरा संभालो। आप भी जब छोटे होंगे, मां! मां भी तो नारी है; लेकिन जब खाना परोसती और घी परोसती तो बेटे को दो चम्मच घी डालती है बेटी को एक चम्मच डालती है। क्यों? उसको तो दूसरे के घर जाना है। बेटा है तो बहुत खुश है, ये बिल्कुल सत्य नहीं है। मैंने ऐसी बेटियां देखी हैं, मां-बाप की इकलौती बेटी, बड़े मां-बाप को जीवन में कष्ट न हो; इसलिए उस बेटी ने शादी न की हो, मेहनत करती हो और मां-बाप का कल्याण करती हो; और मैंने ऐसे बेटे देखे हैं कि चार-चार बेटे हों, और मां-बाप वृद्धाश्रम में जिंदगी गुजारते हों, ऐसे बेटे भी देखे हैं।

और इसलिए ये जो भेदभाव की मानसिकता है, उस मानसिकता के खिलाफ हमें दृढ़ संकल्प हो करके बदलाव लाना, बदलाव आ रहा है। ऐसा नहीं है, कि नहीं आ रहा है। आप देखिए इस बार हिन्दुस्तान का नाम ओलम्पिक में किसने रोशन किया है! सभी मेरे देश की बेटियां हैं। देश का माथ ऊंचा कर दिया। आज 10वीं, 12वीं परीक्षा के रिजल्ट देख लीजिए, पहले दस में बेटियां ही बेटियां होती हैं। बेटे को दूढ़ना पड़ता है कि नंबर लगा है क्या! क्षमता उन्होंने सिद्ध कर दी है।

जहां भी, जो भी अवसर मिला है, उस काम को देदिप्यमान करने का काम हमारी माताओं, बहनों ने किया है और इसलिए बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ। ये हमारा सामाजिक दायित्व है, राष्ट्रीय दायित्व है, मानवीय दायित्व है। अमानवीय बात समाज में स्वीकृत नहीं हो सकती है और हमारे यहां तो शास्त्रों में कहा गया है, बेटी का महात्म्य करते हुए,

यावत गंगा कुरुक्षेत्रे, यावत तिष्ठति मेदनी।

यावत सीता कथालोके, तावत जिवेतु बालिका।।

जब तक गंगा, कुरुक्षेत्र और हिमालय हैं, जब तक सीता की गाथा इस लोक में है, बालिका तुम तब तक जीवित रहो। तुम्हारा नाम तब तक दुनिया याद रखे। ये हमारे शास्त्रों में बेटी के लिए कहा गया है। और इसलिए बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ; कोई भेदभाव नहीं।

हमारे सरपंच महिलाओं से मेरा ये आग्रह है कि इस बात को आप अपने गांव में डंके की चोट पर देखें। अगर बेटा पढ़ता है गांव की बेटी भी पढ़नी चाहिए। गरीब से गरीब हो, और सरपंच ये न सोचे कि इसके लिए बजट की, बजट की जरूरत नहीं होती है। सरकार ने स्कूल बनाया हुआ है। सरकार ने टीचर रखा हुआ है। उसके लिए गांव को अलग खर्चा नहीं करना है, सिर्फ आपको निगरानी रखनी है कि बेटियां स्कूल में जाती हैं कि नहीं, जैसे कौन परिवार है जिसने अपनी बेटी को स्कूल में नहीं रखा है; इतना सारा देख लीजिए।

आप सरपंच हैं, एक काम कीजिए कभी, अच्छा लगेगा आपको भी। स्कूल में बच्चों को कहिए, कि वो गांव के सरपंच का नाम लिखें। उसी गांव के, दूसरे गांव के नहीं। आप गांव के सरपंच हैं, कोई दो साल से सरपंच होंगे, तीन साल से सरपंच होंगे, लेकिन आपके गांव के स्कूल का बच्चा आपका नाम नहीं जानता होगा कि वो जिस गांव में है, उस गांव के सरपंच

कौन हैं; पता नहीं होगा। उसे ये पता होगा प्रधानमंत्री कौन हैं, उसे ये पता होगा मुख्यमंत्री कौन हैं, लेकिन उसे ये पता नहीं होगा कि उसके गांव के सरपंच कौन हैं? और जिसको पता होगा जरा उसको कहिए नाम लिखें, तो आपको ध्यान में आएगा जिस गांव के आप सरपंच हैं, जिस गांव में आपके गांव में स्कूल है, टीचर को तनखावाह जा रही है, हजारों-लाखों रुपये का बिल्डिंग बना हुआ है, और उस गांव के बच्चे को आपके नाम को spelling भी ठीक से लिखना नहीं आता है तो आपको दुख होना चाहिए कि नहीं होना चाहिए? आप जरा जा करके प्रयोग कीजिए। देखने से तो बता देगा हां, ये हमारे प्रधान जी हैं, लेकिन नाम पता नहीं होगा।

मैं ये नहीं कहता हूं कि आप अपने गांव की पूरी खातिरदारी करते हैं कि नहीं करते हैं? महीने में एकाध बार आधा घंटा के लिए गांव के जितने टीचर हैं, अपने घर पर कभी चाय पीने के लिए बुला लीजिए। ऐसे उनसे कहिए कि भई देखिए, मैं सरपंच हूं और इस गांव में अपनी पढ़ाई में कोई बच्चा पीछे नहीं रहना चाहिए, तहसील में नंबर आना चाहिए, जिले में नंबर आना चाहिए, राज्य में नंबर आना चाहिए। बताओ फिर आपको कोई तकलीफ है क्या? देखिए एक बार आप चाय के लिए बुलाओगे ना महीने में एकाध बार, और साल में चार महीने तो छुट्टी रहती है तो 7-8 बार ही बुलाना पड़ेगा साल में। उसमें एकाध दिवाली का दिन आ जाएगा, एकाध होली का दिन आ जाएगा, कोई त्योहार का दिन आ जाएगा तो ऐसे तो सिर्फ दो बार ही बुलाना पड़ेगा। लेकिन उस टीचर को लगेगा सरपंच बहुत सक्रिय है, गांव में अच्छी शिक्षा की चिंता कर रहे हैं। लेकिन ज्यादातर सरपंच बाकी 50 काम करेंगे, इन मूलभूत काम, और आज गांव को, पहले की स्थिति ऐसी थी गांव के सरपंच ये नगरसेठ हुआ करते थे, क्यों? जो भी मेहमान आए उसको खिलाना, रखना, चाय पिलाना, वो एक ही आदमी घर रहता था। आज तो 14th Finance Commission के बाद दो लाख करोड़ रुपया सीधा-सीधा गांव में जाता है। दो लाख करोड़ रुपया छोटी रकम नहीं है।

आप गांव के अगर निर्धारित करें कि 5 साल में ये 25 कार्य मुझे पूरे करने हैं, आप आराम से कर सकते हैं। और आप सफलतापूर्वक कर सकते हैं। गांव की कभी आंगनवाड़ी में काम करने वाली बहनों को बुलाइए, कभी आप आंगनवाड़ी में चले जाइए, स्वच्छता है कि नहीं, टीचर ठीक है कि नहीं, खाना ठीक खिला रहे कि नहीं खिला रहे। बच्चों को जो खेलना चाहिए वो खिलाते हैं कि नहीं खिलाते हैं। अगर आपको थोड़ा सा ध्यान देंगे, आपको Leadership देनी चाहिए।

आपने देखा है कि सरकार खर्च करती हैं टीकाकरण के लिए, और मैं वो काम बता रहा हूं आपको, जिसके लिए अलग बजट की जरूरत नहीं है। आपको, आपके गांव को एक रुपया खर्च करने की जरूरत नहीं है। क्या कभी आपने सोचा है कि आपके गांव में 50 बालकों का टीकाकरण होना चाहिए? लेकिन इस बार 40 हुए, 10 क्यों नहीं हुए? उन 10 बच्चों का टीकाकरण कैसे करवाएंगे? अगर आपके यहां गांव के सभी बच्चों का टीकाकरण आप करवा लेते हैं, सरपंच के नाते पक्का कर लेते हैं, जितने भी टीका करवाने होते हैं, पूरा कोर्स करवा देते हो, क्या वो बच्चा कभी गंभीर बीमारी का शिकार होगा क्या? आपके गांव के हर बच्चे; आपके कार्यकाल में जितने बच्चे छोटे होंगे, वे अगर सलामत रहें, कोई बीमारी आने की संभावना नहीं रही तो जब वो 20 साल होंगे, 25 साल के होंगे तो आपको गर्व होगा कि हां हमारे गांव में मैंने शत-प्रतिशत टीकाकरण करवाया था तो मेरे कालखंड के जितने बच्चे हैं गांव के, सारे के सारे तंदुरुस्त बच्चे हैं। आप बताइए बुढ़ापे में आपको जीवन में कितना आनंद मिलेगा।

लेकिन टीकाकरण आए हैं। अच्छा, अच्छा आप लोगों ने कुछ खया-पिया, चाय पिया, ठीक है, ठीक है कर लीजिए। नहीं, मैं सरपंच हूं, मेरे गांव में कोई टीकाकरण के बिना रहना नहीं चाहिए। मैं सरपंच हूं, मेरे गांव में कोई बच्ची स्कूल जाए बिना रहनी नहीं चाहिए। मैं सरपंच हूं, मेरे गांव के अंदर कोई बच्चा स्कूल छोड़ करके घर भाग नहीं जाना चाहिए। मैं सरपंच हूं, मेरे गांव का टीचर आता है कि नहीं आता है, मैं पूरा ध्यान रखूं।

ये काम अगर Leadership हमारे सरपंचों के द्वारा दी जाती है, कोई भी खर्च किए बिना, नया कोई पैसा लगाना नहीं है, सरकार की योजनाएं लागू करने से ही बहुत बड़ा लाभ होगा। कभी-कभी हमने सोचा होगा कि गांव के अंदर बीमारी का कारण है।

अब सब हम देखते हैं शौचालय क्योंकि ओर हमारा ध्यान केन्द्रित हो रहा है इन दिनों। लेकिन ये कभी सोचा है कि स्वच्छता से कितना आर्थिक लाभ होता है? World Bank की रिपोर्ट कहती है कि गंदगी के कारण जो गरीब परिवारों में बीमारी आती है, औसत 7 हजार रुपया एक गरीब परिवार को साल में दवाई का खर्चा हो जाता है। अगर हम स्वच्छता रखें, गांव में बीमारी को घुसने न दें तो इन गरीब का साल का 7 हजार रुपया बचेगा का नहीं बचेगा? उन पैसों से वो बच्चों को दूध पिलाएगा कि नहीं पिलाएगा? वो तंदुरुस्त बच्चे आपके गांव की शोभा बढ़ाएंगे कि नहीं बढ़ाएंगे, और इसलिए गांव के सरपंच के नाते, गांव के प्रधान के नाते, मेरे कार्यकाल में, मेरे गांव में ये चीजें होनी चाहिए। इसमें मैं कोई समझौता नहीं होने दूंगी, इस विश्वास के साथ हम लोगों ने काम करना चाहिए।

हमारे देश में गांव का महात्म्य हर किसी ने व्यक्त किया है लेकिन रवीन्द्रनाथ जी टैगोर ने 1924 में, शहर और गांव, उसके ऊपर कुछ पंक्तियां लिखी थीं, बांग्ला भाषा में लिखी थीं, लेकिन उसका हिन्दी अनुवाद मैं थोड़ा बताता हूं। आपको लगेगा हां हमारे साथ बराबर फिट, और 1924 में लिखा था। यानी करीब-करीब आज से 90 साल से पहले। उन्होंने लिखा था- और यहां महिला वर्ष है तो बहुत सटीक बैठता है-

रवीन्द्रनाथ टैगोर ने लिखा था-

"गांव महिलाओं के समान होता है, यानी जैसा गांव; गांव वो होता है जैसे महिला होती है; उन्होंने कहा। उनके अस्तित्व में समस्त मानव जाति का कल्याण निहित है, नारी के स्वभाव का प्रतिबिंब है। शहरों के मुकाबले गांव प्रकृति के अधिक समीप हैं, और जीवन धारा से अधिक जुड़े हुए हैं। उनमें प्राकृतिक रूप से Healing Power यानी समस्त धारों को भरने

की शक्ति है। महिलाओं की तरह ग्राम भी मनुष्यों को भोजन, खुशी, जैसी बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं जीवन की एक सरल कविता के समान। साथ ही महिलाएं गांव में स्वतः जन्म लेने वाली सुंदर परम्पराओं की तरह उल्लास से भर देती हैं, लेकिन यदि ग्राम या महिलाओं पर अनवरत भार डाला जाए, गांवों के संसाधनों को शोषण किया जाए, तो उनकी आभा चली जाती है।"

अब हमने भी सोचा होगा कि गांव का संसाधनों का शोषण होना चाहिए क्या? प्राकृतिक रक्षा होनी चाहिए कि नहीं होनी चाहिए? पेड़-पौधे, हरियाली, पानी, शुद्ध हवा के लिए हम ऐसा गांव क्यों न बनाएं कि शहर में रहने वालों को भी मन कर जाए कि एक छोटा सा घर गांव में भी बनाएं। और कभी सप्ताह में एकाध-दो दिन गांव में आ करके जिंदगी गुजारने का मन कर जाए ऐसा हम गांव क्यों न बनाएं। बन सकता है, आज जो Trend चला है ना, रहते गांव में हों लेकिन एकाध घर शहर में हो। छुट्टी के दिन चले जाना, बच्चों को लेके जाना। वो भी Trend शुरू हो सकता है कि गांव ऐसा हो कि छुट्टी के दिन दोस्तों को ले करके गांव चले जाएंगे, कुछ पल गांव में बिता करके आ जाएंगे। गांव ऐसा बनाया जा सकता है।

सरकार का भी प्रयास है, Rurban Mission। आत्मा गांव की हो, सुविधा शहर की हो। Optical Fibre Network से हिन्दुस्तान की हर पंचायत को जोड़ने की दिशा में काम चल रहा है। ढाई लाख पंचायतें हैं। करीब-करीब 70 हजार पंचायतों तक काम पूरा हुआ है। स्कूल तक Cable लगेगा, पंचायत घर तक Cable लगेगा। गांव की आवश्यकता के अनुसार उस Cable को विस्तृत किया जायेगा। आधुनिकता गांव को भी मिले, उस दिशा में सरकार काम कर रही है। इन दिनों गांव में भी, मैं अभी जब प्रदर्शनी देख रहा था, तो हमारे सचिव महोदय मुझे बता रहे थे कि गांव की जो सरपंच बहनें आई हैं वो बड़े मन से प्रदर्शनी देख रही थीं और बोले हर कोई सेल्फी ले रहा था। कभी-कभी हम पार्लियामेंट में सुनते हैं कि Technology कैसे आएगी, गांव में लोगों के पास Technology नहीं है, अब वो भाषण करने के लिए कहते हैं कि क्या कारण है मुझे मालूम नहीं, लेकिन मेरा अनुभव अलग है। Technology ने इतना बड़ा revolution किया है, मैं जब गुजरात में मुख्यमंत्री था तो यहां कपराड़ा करके एक स्थान है, वहां गया था। बड़ा पिछड़ा हुआ तहसील है, एकदम से एकदम से remote एरिया में और एक छोटा सा कार्यक्रम था Milk का chilling center का उद्घाटन, आदिवासी गांव में। और उन्होंने अब मैदान भी नहीं था क्योंकि जंगल है तो सभा करने के लिए वहां से तीन किलोमीटर दूर एक स्कूल के मैदान में सभा रखी और chilling center एक जगह पर बना हुआ था। मैं chilling center के उद्घाटन के लिए गया तो दूध भरने वाली 25-30 महिलाएं भी वहां थीं। वो बहनें वहां खड़ी थीं। हम लोग उसकी दीया जलाना, रिबन काटना, सब कर रहे थे। और मैं देखा कि सारी महिलाएं, और ये बात मैं करीब 10 साल पहले की कर रहा हूं, सारी महिलाएं, आदिवासी महिलाएं अपने मोबाइल फोन से फोटो निकाल रही हैं। मैं हैरान था, मैं उनके पास गया; मैंने कहा कि आपकी फोटो तो आ नहीं रही, मेरी फोटो निकाल के क्या करोगे? क्या आपको फोटो निकालनी आती है? आदिवासी बहनें थीं, अनपढ़ थीं। उन्होंने मुझे क्या जवाब दिया, वो जवाब मेरे लिए और प्रभावी था मेरे मन पर। उन्होंने कहा ये तो हम जा करके download करवा लेंगे। मैं हैरान था जी ये पढ़ी-लिखी बहनें नहीं थीं और वो कह रही हैं कि हम जा करके download करवा लेंगे।

किस प्रकार से Technology ने जन-सामान्य के जीवन में प्रवेश कर लिया है। हमने अपनी व्यवस्था में, अब आप यहां गांवों में Common Service Centre भारत सरकार ने खोले हैं। आपने कभी देखा है क्या कि Common Service Centre में Technology के माध्यम से ये जो नौजवान को वहां रोजगार मिला है, उसके पास कम्प्यूटर है, क्या-क्या सेवाएं दे रहा है? उन सेवाएं आपके गांव के लिए कैसे उपलब्ध हो सकती हैं, आप इस व्यवस्था का लाभ ले सकते हैं कि नहीं? मेरा कहने का तात्पर्य ये है कि हम लोग आवश्यकता के अनुसार, पूरा प्रयत्न करके, Technology का उपयोग भी अपने गांव में लाने की दिशा में प्रयास करें। आप देखिए आपके गांव में एक बहुत बड़ा बदलाव इस Technology के माध्यम से आ सकता है।

हो सकता है हमें सब कुछ नहीं आता है लेकिन जिनको आता है उनको हम साथ में रख सकते हैं। पुरुषों को Ego होता है वो नहीं रखेंगे, आपको अपने घर में 12th का बच्चा होगा ना तो उसको भी पूछोगे तो बता देगा कि ऐसे-ऐसे करना चाहिए। लेकिन एक बार आप देखिए कि आपकी ताकत अनेक गुना बढ़ जाएगी।

हम गांव में रहते हैं, कभी हमने सोचा है कि हमारे गांव में सरकारी तिजौरी से पगार लेने वाले कितने लोग रहते हैं? किसी ने नहीं सोचा होगा। जो भी सरकारी पगार लेते हैं तिजौरी से, वे एक प्रकार से सरकार ही हैं। क्या महीने में एक बार आपके गांव में ऐसी एक छोटी सी सरकार की मीटिंग कर सकते हो? कोई ड्राइवर होगा जो आपके गांव का होगा, सरकारी बस चलाता होगा। कोई Compounder होगा, कोई Peon होगा, कोई clerk होगा, कोई teacher होगा; जिनको सरकार से तनखाह मिलती है। हर गांव में 15-20 लोग ऐसे मिलेंगे जो किसी न किसी रूप में सरकार से जुड़े हुए हैं। क्या महीने में एक बार ये जो सरकार का प्रतिनिधित्व करते हैं, सरकार से तनखाह लेते हैं, सरकार क्या है जिनको अता-पता है, सरकार के ऊपर के लोगों को जानते हैं। क्या कभी आपने हर महीने में एक बार, अपने गांव के और कहीं पर भी काम करने वाले और गांव में रहते हैं, शाम को गांव आ जाते हैं; ऐसे लोगों की महीने में एक बार बैठ करके, भई अपने गांव में क्या कर सकते हैं? सरकार से क्या मदद ला सकते हैं? कैसे ला सकते हैं? तुम्हारी कोई जान-पहचान है क्या? ये अगर व्यवस्था विकसित करोगे तो आपकी ताकत।

आज क्या होता है, सरकार यानी एक पटवारी से ज्यादा आपको कोई दिखता नहीं है, लेकिन आंगनवाड़ी वर्कर हो, आशा वर्कर हो, टीचर हो, ये सारे सरकार के ही प्रतिनिधि हैं। आपने कभी उस व्यक्ति को जोड़ा नहीं है तो मेरा आग्रह है कि आप उनको जोड़िए, आपकी शक्ति अनेक गुना बढ़ जाएगी और आपको काम की सरलता रहेगी।

एक दूसरा काम, साल में एक बार जरूरी कीजिए। आपके गांव से बहुत लोग गांव छोड़ करके शहर में चले गए होंगे। कभी शादी-ब्याह के लिए आते होंगे, रिश्तेदारी में कभी आते होंगे। गांव का जन्मदिन मनाना चाहिए। क्या कभी आपने सोचा है, जिन गांवों को पता नहीं कि उनके गांव का जन्मदिन क्या है वो चिट्ठी निकालकर तय करें कि भई ये फलानी तारीख हमारे गांव का जन्मदिन है। और फिर हर वर्ष बड़े आन-बान-शान से गांव का जन्मदिन मनाना चाहिए, हर वर्ष। और उस दिन आपके गांव के जितने लोग बाहर गए हैं उनको बुलाना चाहिए। तीन-चार दिन का कार्यक्रम करना चाहिए। गांव में 75 से ज्यादा आयु के जितने लोग हैं उनका सम्मान करना चाहिए, गांव में हर किसी को पौधा लगाने के लिए कहना चाहिए; गांव के बच्चों को स्वच्छता के अभियान के साथ जोड़ना चाहिए; और गांव के जो लोग बाहर रहते हैं उनको विशेष रूप से बुलाना चाहिए और उनको कहना चाहिए बताओ भाई गांव के लिए आप क्या कर सकते हैं। आप देखिए पूरे गांव एक प्राणवान गांव बन जाएगा। जीवंत गांव बन जाएगा। गांव यानी अब बस छोड़ो भाई, जल्दी 18 साल की उम्र हो जाए, चले जाएं, छोड़ दें, क्या करें जिंदगी ऐसी जी करके। इससे उलटा करने का समय आया है और आप अगर इस बात को करेंगे, मुझे विश्वास है आपके गांव में एक नया जीवन आ जाएगा।

और जैसा मैंने कहा हमारे गांव में पशु होते हैं। कुछ लोग यहां देखने गए होंगे, मुझे बताया गया कि कुछ यहीं गांधीनगर के ही पास में पशुओं का होस्टल वाले कुछ गांव हैं। देखा होगा कि गांव में कूड़ा-कचरा कैसे, waste में से wealth create किया जा सकता है। ये जो हम waste मानते हैं वो waste नहीं है वो wealth है।

आप गांव में कोशिश कीजिए, कुछ लोगों को लगाइए, Self-help group बनाइए। गांव के कूड़े-कचरे में से Compost खातर बनाइए, गांव खातर की बिक्री होगी, पंचायत की आय होगी। और जमीन का सुधार होगा तो गांव के लोगों की खेती भी अच्छी होगी। छोटे-छोटे काम जिसमें अलग बजट की जरूरत नहीं है, आप स्वयं थोड़ा initiative लें, आप अपने गांव को जैसे स्वच्छ बनाया है वैसे समर्थ भी बना सकते हैं। स्वच्छता को आपने स्वभाव बना करके सीखा है और स्वच्छता एक ऐसा विषय है जो हमें खुद को करनी पड़ती है। मान लीजिए हम कहीं जा रहे हों, अचानक हमारे शरीर पर कोई गंद पड़ी, कोई गंदी चीज पड़ गई। हम इंतजार करते हैं क्या? अड़ोस-पड़ोस में जो चल रहा है वो साफ करे, ऐसा करते हैं क्या? तुरंत, हम कितने ही बड़े महान पुरुष क्यों न हों, जब से hanker chief निकालते हैं यं करके साफ करना शुरू कर देते हैं, क्यों? गंदगी एक पल भी हमें पसंद नहीं है। हमारे शरीर पर अगर थोड़ी सी भी गंद पड़ी तो हम तुरंत साफ करते हैं। वैसे ही ये हमारी मां है भारतमाता, उस पर भी कोई गंद पड़े तो उसकी सफाई हम सबको मिल करके करनी होगी। ये स्वच्छता का स्वभाव बना लो। ये अगर स्वच्छता का स्वभाव बनाएं, और एक बार अगर गंदगी गई; आप देखिए फिर देश में कुपोषण की समस्या, बीमारी की समस्या, बीमारी के पीछे खर्चा, ये सब में कटौती आ जाएगी।

गरीब को सबसे ज्यादा फायदा होगा। गंदगी की सबसे ज्यादा परेशानी किसी को है तो गरीब को है, झुग्गी-झोंपड़ी में जिंदगी गुजारने वालों को है, गंदा पानी पीने वालों को है। ये मानवता का काम है, इस मानवता के काम का अगर हम उसी भाव से करेंगे, जनसेवा, यही प्रभुसेवा, ये हमारे कहा गया है; उसी भाव से अगर हम करेंगे तो मुझे विश्वास है कि 2019 में, स्वच्छ भारत में कुछ achieve करना है, बदलाव महसूस हो ऐसी स्थिति पैदा करनी है और ये सरकार के नाम करने की बात नहीं है मेरी। ये समाज का स्वभाव बनाना पड़ेगा, समाज में आंदोलन करना पड़ेगा, गंदगी के प्रति नफरत का वातावरण पैदा करना पड़ेगा; तो अपने आप होगा। शौचालय उसमें एक हिस्सा है। शौचालय हो गया मतलब स्वच्छता हो गई, ये हमारी कल्पना नहीं है। और पूरे देश में पहले कभी स्वच्छता पर चर्चा ही नहीं होती थी। अच्छा हुआ है पिछले दो साल से लगातार स्वच्छता पर चर्चा हो रही है। और मैं ये भी बात publically स्वीकार करता हूं कि आमतौर पर सरकार की तरफ से कोई बात कही जाए, उसी दिन media उसमें नुक्स निकालने में लग जाता है, क्यों कमी है, क्या गलत है, क्या झूठ बोलते हैं, उसे वो पकड़ता है।

स्वच्छता एक ऐसा विषय मैंने देखा, media ने भी उसे गले लगाया है और सरकार जितना काम करती है उससे दो कदम ज्यादा media के लोग भी कर रहे हैं। ये एक ऐसा है जिसको देश के हर किसी ने स्वीकार किया है; हर किसी ने स्वीकार किया है। जिस काम को हर किसी ने स्वीकार किया हो उसमें सफलता मिलना स्वाभाविक है, उसका systematic ढंग से करना पड़ेगा। सिर्फ स्वच्छता के मंत्र बोलने से नहीं होगा। ये हमें actually physically करना पड़ेगा। और गांव में सफाई हुई, हिन्दुस्तान बदला हुआ नजर आएगा। हमारा जीवन बदला हुआ नजर आएगा।

मेरा आप सबसे, जिन-जिन लोगों का सम्मान हुआ है उनको मैं बहुत-बहुत बधाई देता हूं और उनका कार्य उनका जीवन, उनका पुरुषार्थ, उनका संकल्प हम सबके लिए प्रेरणा बनेगा। और देशभर से आई हुई महिलाएं अंतराष्ट्रीय महिला दिवस पर स्वच्छता और महिला; सीधा-सीधा संबंध है। क्योंकि आज तक हर प्रकार की स्वच्छता बनाए रखने में अगर सबसे ज्यादा किसी ने योगदान दिया है तो हमारे देश की नारी शक्ति ने दिया हुआ है। हर प्रकार की स्वच्छता, सामाजिक जीवन के हर पहलु की स्वच्छता, अगर आज भी बची है, संस्कार बचे हैं, सदेगुण बचे हैं, सतकार्य बचे हैं, तो उसमें सबसे ज्यादा योगदान मातृ-शक्ति का है।

स्वच्छता के इस अभियान को भी मातृ-शक्ति के आशीर्वाद मिलेंगे, अभूतपूर्व सफलता मिलेगी, इस विश्वास के साथ फिर एक बार आपको बहुत-बहुत शुभ कामनाएं। बहुत-बहुत धन्यवाद।

अतुल कुमार तिवारी/शाहबाज हसीबी/निर्मल शर्मा

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

02-अप्रैल-2017 20:30 IST

इलाहाबाद उच्च न्यायालय की 150 वीं वर्षगांठ के समापना समारोह पर प्रधानमंत्री के भाषण का मूल पाठ 02-04-2017

मंच पर विराजमान सभी उपस्थित महानुभाव।

150 वर्ष के समारोह का एक प्रकार से आज समापन हो रहा है लेकिन साल भर चला ये समारोह समापन के साथ नई ऊर्जा, नई प्रेरणा, नए संकल्प और नए भारत के सपने को पूरा करने में एक बहुत बड़ी ताकत बन सकता है। भारत का जो न्यायविश्व है उस न्यायविश्व में इलाहाबाद डेढ़ सौ साल पुरानी एक और मैं समझता हूं कि भारत के न्यायविश्व का ये तीर्थ क्षेत्र है और उस तीर्थ क्षेत्र में इस महत्वपूर्ण पड़ाव पर आप सबके बीच आकर के आपको सुनने का समझने का अवसर मिला, कुछ बात मुझे बताने का मौका मिला, मैं इसे अपना गौरव मानता हूं।

चीफ जस्टिस साहब अभी अपने दिल की बात रहे थे और मैं मन से सुन रहा था। मैं उनके हर शब्द में एक पीड़ा अनुभव करता हूं कुछ कर गुजरने का इरादा मैं अनुभव करता हूं। भारत के न्यायाधीशों को, ये नेतृत्व मुझे विश्वास है कि उनके संकल्प पूरे होंगे, हर कोई जिसकी जिम्मेवारी है उनका साथ निभाएगा जहां तक सरकार का सवाल है मैं विश्वास दिलाता हूं कि जिस संकल्प को लेकर के आप लोगों को प्रेरित कर रहे हैं। हमारे जिम्मे जो योगदान देना होगा हम उसे पूरा करने का भरपूर प्रयास करेंगे, जब इलाहाबाद कोर्ट के 100 साल हुए थे शताब्दी का अवसर था तब उस समय के भारत के राष्ट्रपति डॉ राधाकृष्णन जी, यहां आए थे और उन्होंने जो वक्तव्य दिया था उसका एक पैराग्राफ मैं समझता हूं मैं पढ़ना चाहूंगा कि सौ साल पहले, सौ साल जब पूरे हुए 50 साल पहले जो बात कही गई थी उसका पुनर्स्मरण कितना आवश्यक है।

डॉ. राधाकृष्ण जी ने ये कहा था “कानून एक ऐसी चीज है जो लगातार बदलती रहती है, कानून लोगों के स्वभाव के अनुकूल होना चाहिए, पारंपरिक मूल्यों के अनुकूल होना चाहिए और साथ ही कानून को आधुनिक प्रवृत्तियों और चुनौतियों का भी ध्यान रखना चाहिए। कानून की समीक्षा के समय इन सब बातों पर ध्यान दिया जाना चाहिए। किस तरह की जिदंगी हम गुजारना चाहते हैं। कानून का क्या कहना है, कानून का अंतिम लक्ष्य क्या है, सभी लोगों का कल्याण है सिर्फ अमीर लोगों का कल्याण नहीं। बल्कि देश के हर नागरिक का कल्याण है। यही कानून का लक्ष्य है और इसे पूरा किए जाने का प्रयास किया जाना चाहिए।”

मैं समझता हूं कि डॉ. राधाकृष्णन जी ने 50 वर्ष पूर्व इसी धरती से देश के न्यायविश्व को, देश के शासकों को एक मार्मिक संदेश दिया था और वो आज भी उतना ही Relevant है इतना ही स्तुत्य है। अगर एक बार जैसे गांधी जी कहते थे अगर हम कोई भी निर्णय करें ये सही है कि गलत है, इसकी कसौटी क्या हो। तो गांधी ने सरकारों के लिए खास कहा था कि आप जब भी कोई निर्णय करें कोई दुविधा है तो आप पलभर के लिए हिन्दुस्तान के आखिरी छोर पर बैठे हुए इंसान का स्मरण कीजिए और कल्पना कीजिए कि आप के निर्णय का उसके जीवन पर प्रभाव क्या होगा। अगर प्रभाव सकारात्मक होता है तो बेझिझक आगे बढ़िए आप का निर्णय सही होगा।

इस भाव को हम कैसे हमारे जीवन का हिस्सा बनाएगा। ऐसे महापुरुषों ने कही हुई बात हमारी जिदंगी का मकसद कैसे बन सकता है और वही तो है जो परिवर्तन का पुरोधा बन जाता है।

इस इलाहाबाद की और भारत का पूरा न्यायजगत आजादी के पूर्व हिन्दुस्तान की आजादी के आंदोलन को अगर किसी ने बल दिया भारत के सामान्य मानवी ने, अंग्रेज शासन के सामने अभय का जो सुरक्षा चक्र दिया, सुरक्षा कवच दिया। ये भारत के न्याय जगत से जुड़े हुए ज्यादातर वकीलों ने दिया।

अंग्रेज सल्तनत के खिलाफ लड़ते थे और उनका लड़ने का मौका एक, दो, चार या पांच लोगों के लिए आता होगा लेकिन करोड़ों लोगों को लगता था कि हमें अभय से जीना चाहिए, कोई तो मिल जाएगा अंग्रेज जुल्म के सामने हमारी रक्षा कर देगा और यही तो पीढ़ी थी जिसने देश के आजादी के आंदोलन को सक्रिय भागीदारी देश के जितने गणमान्य नेताओं के नाम हम याद करते हैं अधिकतम का बैकग्राउंड यही तो अदालतें हैं जहां से संघर्ष करते करते जन सामान्य के कल्याण के लिए राजनीति का रास्ता उन्होंने पकड़ा। आजादी का आंदोलन चलाया आजादी के आंदोलन के बाद से देश की शासन व्यवस्था में अपनी भागीदारी देश में जो मिजाज था आजादी के आंदोलन का हर किसी का सपना था आजाद हो जाएं और अगर हर इंसान का सपना न होता तो आजादी आनी संभव ही नहीं थी। और गांधी जी की ये विशेषता थी कि उन्होंने हर हिन्दुस्तानी के दिल में आजादी का जज्बा जगाया जो झाड़ू लगाता था तो उसे ये लगता था कि मैं आजादी के लिए काम कर रहा हूं, प्रौढ़ शिक्षा का काम था तो भी उसको लगता था मैं देश की आजादी के काम कर रहा हूं, वो खादी भी पहन लेता था तो उसको लगता था कि मैं आजादी के लिए काम कर रहा हूं। उन्होंने देश के कोटि-कोटि जनों के दिलों में आजादी का जज्बा उस व्यक्ति की क्षमता के अनुसार उसको ढाल दिया, मैं ऐसी जगह पर खड़ा हूं आज इलाहाबाद ने इस आंदोलन को बहुत बड़ी ताकत दी।

आजादी के 70 साल पूरे हो गए 2022 में आजादी के 75 साल होंगे क्या इलाहाबाद से देश को प्रेरणा मिल सकती है क्या? कि 2022 जो ललक, जो जुनून, जो त्याग, जो तपस्या, परिश्रम की पराकाष्ठा आजादी के आंदोलन में दिखाई देती थी क्या इस पांच साल के लिए सवा सौ करोड़ देशवासियों में वो जज्बा पैदा किया जाए कि जब आजादी के 75 साल होंगे हम हिन्दुस्तान को यहां ले जाएंगे जो जहां है वहां जिन जिम्मेदारियों के साथ जी रहा है वो 2022 का कोई सपना, कोई संकल्प, कोई रोडमैप तय कर सकता है हर नागरिक अगर ये कर लेता है मैं नहीं मानता कि देश के किसी नागरिक को ऐसी आशंका पैदा होगी कि परिणाम नहीं मिलेंगे।

सवा सौ करोड़वासियों की अपनी ताकत है, हमारी संस्थाये, हमारी सरकारें, हमारे सामाजिक जीवन से जुड़े लोग और आज जब 150 वर्ष की समापन समारोह में हम बैठे हैं तब एक नया संकल्प लेकर के जा सकते हैं कि 2022 तक हम जिस क्षेत्र में हैं उस क्षेत्र में जो डॉ. राधाकृष्णन जी ने कहा था वो, महात्मा गांधी ने कहा था वो उन मूल्य आधारों पर देश के लिए कुछ कर सकते हैं क्या मुझे विश्वास है कि चीफ साहब ने जो सपना देखा है आप सबके दिल में भी जो आग है वो आग एक ऊर्जा बन सकती है जो ऊर्जा देश के परिवर्तन के लिए काम आ सकती है। मैं भी आपको निमंत्रण देता हूं मैं इस मंच के माध्यम से देशवासियों को निमंत्रण देता हूं कि आइए 2022 का कोई संकल्प तय करें जब आजादी के 75 साल हो तो आजादी के दीवानों ने देश के लिए जिस प्रकार के सपने देखे थे उन सपनों को पूरा करने के लिए हम भी अपनी तरफ से कुछ कोशिश करें। मुझे विश्वास है सवा सौ करोड़ देशवासियों के सपने, सवा सौ करोड़ देशवासियों का एक कदम देश को सवा सौ करोड़ कदम आगे ले जा सकता है ये ताकत है उस ताकत को हम कैसे बल दें उस दिशा में प्रयास करेंगे, युग बदल चुका है।

जब मैं चुनाव प्रचार कर रहा था 2014 में, मैं देश कई लोगों के लिए अपरिचित था, मेरी पहचान नहीं थी एक छोटे से समारोह में मुझसे कई सवाल पूछे गए थे और मैंने कहा था मैं नए कानून कितने बनाऊंगा वो तो मुझे मालूम नहीं है लेकिन मैं हर दिन एक कानून खत्म जरूर करूंगा अगर मैं प्रधानमंत्री बन गया तो इस कानूनों की जंजाल सरकारों जो ने बनाई है इस कानूनों का बोझ सामान्य मानवों पर जो लादा गया है जैसे चीफ जस्टिस साहब कह रहे हैं कि उसमें से कैसे बाहर निकला जाए, सरकार भी कहती है कि इस बोझ को कम कैसे किया जाए। और आज मुझे खुशी है कि अभी पांच साल पूरे नहीं हैं अब तक करीब-करीब 1200 कानून हम खत्म कर चुके हैं प्रतिदिन एक से ज्यादा कर चुके हैं। ये जितना सरलीकरण हम कर पाएंगे जितना बोझ कम कर पाएंगे न्याय व्यवस्था को ताकत मिलेगी और इस काम को करना है बदले हुए युग में टेक्नोलॉजी को बहुत बड़ा रोल है चीफ साहब अभी कह रहे थे कि कोई Document की जरूरत नहीं है फाइल अपने आप चली जाएगी friction और सेकंड में चली जाएगी। भारत सरकार ने भी डिजिटल इंडिया के माध्यम से भारत की न्याय व्यवस्था को आधुनिक टेक्नोलॉजी ICT से Information Communication Technology से कितना मजबूत बनाया जाए कितना सरल बनाया जाए और पहले कोई जमाना था जो आज judges के रूप में बैठे हैं वे जब वकालत करते होंगे उन्होंने एक एक केस की बारीकियों को लेकर के घंटों तक किताबों को उलटना पड़ता था।

आज के वकील को वो मेहनत नहीं करनी पड़ती वो Google guru को पूछ लेता है Google guru तुरंत बता देता है कि 1989 में ये केस था, ये मैटर था ये जज थे इतनी सरलता आई है टेक्नोलॉजी से पूरे वकील बिरादरी के पास इतनी बड़ी ताकत आई है कि क्वालिटी ऑफ बहस अत्याधुनिक Information के साथ तर्क ये हमारा वार अपने आपको टेक्नोलॉजी की मदद से सत्य करता है और जब कोर्ट के अंदर क्वालिटी के अंदर ये change आएगा sharpness आएगी date लेने के लिए sharpness की जरूरत नहीं होगी लेकिन मसले सुलझाने के लिए sharpness की जरूरत होगी और मुझे विश्वास है कि judges के सामने sharpness के साथ बहस होगी तो उनको दूध का दूध, पानी का पानी कर करके उसमें से सत्य खोजने में देर नहीं लगेगी हमारी न्यायप्रक्रिया को गति अपने आप आना शुरू होगा हम हर तर्क पर टेक्नोलॉजी का उपयोग कैसे करें आज हम डेट जब देते हैं आएंगे, दो मिनट लेंगे बात करेंगे अच्छा फलानी तारीख, इतनी तारीख, ये सारी मोबाइल फोन पर एसएमएस डेट देने की परंपरा कब शुरू होगी।

आज एक अफसर कहीं नौकरी करता है। उसके जमाने के एक केस हुआ है उसकी ट्रांसफर हो गई है लेकिन अगर उसके जमाने का केस निकलता है तो उसको नौकरी छोड़कर के अपना इलाका छोड़ कर के कोर्ट में जाकर करके क्यों न हम उन्हें वीडियो कांफ्रेंसिंग से ऐसे लोगों के लिए सुविधा खड़ी करें। कम समय में जो चीज पूछनी है पूछ ली जाए ताकि उन अफसरों का समय भी शासन के काम में लग सके। ये सारी चीजें जेल से कैदियों को अदालत में लाना, सुरक्षा में इतनी खर्चा और उस मार्ग में क्या क्या नहीं होता है ये सभी जानते हैं।

अब योगी जी आए हैं तो शायद अब यह बंद हो, अगर वीडियो कांफ्रेंस में जेल और कोर्ट को हम कनेक्ट कर दें तो कितना खर्चा बच सकता है, कितना समय बच सकता है, कितनी सरलता हम पैदा कर सकते हैं। भारत सरकार का प्रयास है कि हमारी न्याय व्यवस्था को आधुनिक आई सी टी टेक्नोलॉजी का पूरा लाभ मिले। उसको priority प्रायोरिटी मिले। मैं देश के स्टार्ट अप वाले नौजवानों से भी कहूंगा कि भावी देश की न्याय प्रक्रिया के लिए अपने स्टार्ट अप में नये नये innovation करें। वे भी टेक्नोलॉजी के माध्यम से जुडिशियरी को ताकत दे सकते हैं। अगर जुडिशियरी के हाथ में उस प्रकार के नये innovation आ जाएं। मुझे विश्वास है कि जुडिशियरी के लोग इसका उपयोग कर कर के गति लाने में बहुत बड़ी मदद कर सकते हैं। वह एक चहुं दिशा में अगर हम प्रयास करेंगे तो हम एक-दूसरे के पूरक बनेंगे। इच्छित परिणाम लेकर रहेंगे।

मैं फिर एक बार दिलीप जी को उनकी पूरी टीम को, यहां सभी आदरणीय judges को, बाहर के मित्रों को, 150 वर्ष की इस यात्रा के समापन के समय पर आदरपूर्वक बहुत-बहुत शुभकामनाएं देता हूं और मुझे विश्वास है कि 2022 भारत की आजादी के 75 साल का सपना संजो करके यहां से चले, जितना हो सका जल्दी उस सपने को संकल्प में परिवर्तित करें और उस संकल्प को फिर से करने के लिए अपनी सारी क्षमताओं को जुटा दें। देश को नई ऊँचाइयों पर ले जाएं। न्यू इंडिया का न्यू जनरेशन के लिए जो सपना है उसको पूरा करने का हम सब प्रयास करें। इसी एक अपेक्षा के साथ मैं आप सब का बहुत आभारी हूं। धन्यवाद

डॉ.अतुल तिवारी/हिमांशु सिंह/सुरेन्द्र कुमार/ममता/मधुप्रभा

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

19-मई-2017 19:30 IST

एम्. एस. स्वामीनाथन की पुस्तक के लोकार्पण के अवसर पर प्रधानमंत्री के भाषण का मूल पाठ

आदरणीय श्री डॉ. एम्. एस. स्वामीनाथन जी मंत्री परिषद् में मेरे साथी श्रीमान राधा मोहन सिंह जी और उपस्थित सभी महानुभव,

जब मैं गुजरात में मुख्यमंत्री के नाते कार्यभार संभाल रहा था तब डॉ. स्वामीनाथन जी से मेरा परिचय आया और उस समय हमने एक soil health card योजना को प्रारम्भ किया था। जब उस विचार को मैं कर रहा था तो मेरे यहाँ से भी काफी bureaucratic resistance रहता था कि क्या कर रहे हो, क्या कर रहे हो वगैरह-वगैरह लेकिन जब स्वामीनाथन जी ने Public के लिए एक बयान दिया शायद Chennai से दिया था और ये कितना बड़ा महत्वपूर्ण कदम हमने उठाया है और इससे आगे चल के कितना लाभ होगा और एक दम मेरी सरकार में मेरे साथियों को जो चीज़ में समझा नहीं पा रहा था मुझे बड़ी मेहनत करनी पड़ रही थी कि नहीं नहीं भई इसको करना है कैसे करना है लेकिन जैसे ही डॉ. स्वामीनाथन जी का Statement आया अखबार में सारे Bureaucracy का मूड बदल गया सब को लगा अरे यह तो बड़ा महत्वपूर्ण काम कर रहा है अब करना है। यह मैं इसलिए कह रहा हूँ कि उनकी जो तपस्या है साधना है इसका कितना मूल्य है वो वहाँ मैंने खुद ने अनुभव किया अब तो वो योजना पूरे देश में लागू करने का हमारा प्रयास है और अब वैसे वो कहे जाते हैं कृषि वैज्ञानिक लेकिन कभी-कभी मुझे लगता है वो किसान वैज्ञानिक है उनके भीतर एक किसान जिंदा है सिर्फ Laboratory वाला कृषि, Production, Quality इससे ज्यादा उनके जो Papers वगैरह देखे तो भारतीय संदर्भ में है। भारत की कृषि के संदर्भ में हैं। भारत के किसान केंद्रित है यह जब चीज़ आती है तो वो relevant हो जाती है वरना कभी-कभार जमीन से काफी ऊपर बहुत सी चीज़ आती हैं लेकिन फिर वो बीच का Gap पूरा नहीं होता है डॉ. स्वामीनाथन जी की विशेषता रही है कि उन्होंने जो चीज़ जब भी प्रस्तुत की वो जमीन से जुड़ी हुई थी और उसका परिणाम यह हुआ कि बहुत ही relevant लगी और ज्यादातर उसका उपयोग भी हुआ।

आज के यूवा को डॉ. स्वामीनाथन कैसे प्रेरणा दे सकते हैं हमारे देश का एक problem है की राज नेताओं को सब जानते हैं वैज्ञानिक को बहुत कम लोग जानते हैं हर गली मोहल्ले में राज नेताओं के नाम जाने जाते हैं लेकिन इतना बड़ा Contribution करने वाले लोगों की पहचान हमारे यहाँ होती नहीं है शायद व्यवस्था का दोष होगा या स्वभाव का दोष होगा जो भी होगा लेकिन लम्बे अरसे से कमी महसूस हो रही है और उसके कारण शायद आज के यूवा पीढ़ी को भी एक खिलाड़ी से Inspiration मिल सकता होगा एक senior कलाकार से मिल सकता होगा, किसी राज नेता से मिल सकता होगा, किसी बड़े उद्योगी घराने से मिल सकता होगा लेकिन mass Level पर यूवा को वैज्ञानिकों की तरफ ध्यान नहीं जाता।

आप कल्पना कीजिये कि एक वैज्ञानिक अपनी यूवा अवस्था में दुनिया की एक कल्पना के भारत तो भूखा मरेगा भारत तो खत्म होगा निराशा का माहौल हो भारत को बिल्कुल या मान लिया गया कि ये तो गया ऐसे समय एक यूवा वैज्ञानिक संकल्प पकड़ कर कहे नहीं स्थिति बदली जा सकती है और हम बदल के रहेंगे पुरे Green Revolution के मुड़ में एक यूवा वैज्ञानिक का वो संकल्प है जो डॉ. स्वामीनाथन के रूप में हमारे सामने दौड़ रही है ये चीज़ आज की यूवा पीढ़ी को पता नहीं है आज के यूवा के सामने भी अगर ये विशाए हैं startup की दुनिया है उनके सामने आये हुए Malnutrition एक चुनौती है। तिलहन, दलहन pulses हमारे pulses में productivity भी कम है उसमें protein contained value भी बढ़ाने की आवश्यकता है। अब यह चुनौतियाँ आज की यूवा पीढ़ी अगर मन में दम मान के चले के malnutrition की अवस्था में बदल के रहेंगे हम देश के Agriculture Revolution में इस प्रकार की चीज़ लायेंगे और महात्मा गाँधी भी कहा करते थे भूखे का भगवान तो रोटी होता है और यही बात हम वैज्ञानिक तौर-तरीके से कैसे आगे बढ़ाये, मुझे कुछ चीज़ व्यक्तिगत जीवन में बड़ी अपील हो जाती है जैसे मैं मानता हूँ शायद हिन्दुस्तान के सभी प्रधानमंत्रियों के साथ आपने काम किया है पहले से लेकर के मेरे तक आपने दुनिया में देखा है किसी एक प्रधानमंत्री के पास पुरानी भी फोटो खड़ी हो तो आदमी 2 ft. ऊपर चलता है यह इतनी सादगी इतनी सरलता कभी यह चीज़ स्वामीनाथन जी में reflect नहीं देखी मैंने और यह चीज़ मैं किताब के आधार पर नहीं कह रहा हूँ अपने अनुभव से कह रहा हूँ। मैं गुजरात में था ऐसे ही simple way में आते थे मिलते थे और जब मिलते थे तो पता भी नहीं चलता था कि ये इतने बड़े आदमी हैं, पता ही नहीं चलता था जी, यह अपने आप में सावर्जनिक रूप में सफलता को पचाना कैसे यह बहुत सीखने जैसी चीज़ें हैं। एक व्यक्ति के रूप में चेहरे पर प्रसन्नता शायद ही किसी ने उनको चेहरे पर अप्रसन्न देखा हो वरना ज्यादातर वैज्ञानिक (मुझे माफ़ करना)

यहां बैठे हुए हैं, वो 21वीं सदी में भी ऐसे जीते हैं जैसे 18वीं शताब्दी में रहते हों सारी दुनिया का बोझ उनके ऊपर होता है खोये से रहते हैं परिवार के लोग भी परेशान रहते हैं कि यह बोलते क्यों नहीं हैं इनके जीवन में बड़ा उल्टा है सदा प्रसन्नचित यह अपने आप में बड़ी और यह तब होता है कि जब जीवन की कुछ चीजों को internalize किया हो दिमागी ज्ञान से संभव नहीं है रंगों में वो बातें जब दौड़ती हैं तब यह संभव होता है और मैं मानता हूं कोई न कोई ईश्वर कृपा रही होगी कोई न कोई उनकी मात-पिता के संस्कारों के कारण रहा हो, यह उन्हें जीवन में पहुंचाया है।

हमारे देश में कृषि क्षेत्र को लेकर आज भी चुनौतियां वैसे की वैसे हैं Green Revolution से 2nd Green Revolution की चर्चा होती है लेकिन Evergreen revolution भारत जैसे देश के सामने लक्ष्य हैं और Evergreen Revolution ही हमारा लक्ष्य हैं तो हमने भारत का Potential कहा है उसको पहले एक बार mapping करने की आवश्यकता है कुछ मात्रा में होता है अब हिन्दुस्तान का पूर्वी हिस्सा आर्थिक रूप से हमें बहुत imbalance दिखता है पश्चिमी भारत की आर्थिक स्थिति एक पूर्वी भारत की आर्थिक स्थिति दूसरी कोई भी देश ऐसे imbalance अवस्था में लम्बी दौड़ नहीं दौड़ सकता है कही ना कही तो वो लड़खड़ा जायेगा जब की दोनों पैरों में सामान ताकत हो दोनों हाथों में सामान ताकत हो यह आवश्यक है अब पूर्वी हिन्दुस्तान में जैसे पश्चिमी भारत में गेहूं के द्वारा धान के द्वारा 1st agro Revolution को Lead किया Evergreen Revolution को lead की ताकत पूर्वी हिन्दुस्तान के Rice में है चावल में है और मैं मानता हूं पानी है जमीन है मेहनती लोग हैं वैज्ञानिक Intervention की आवश्यकता है Technology Intervention की आवश्यकता है यह अगर हम करने में हैं और सरकार इन उस दिशा में काम कर रही है डॉ. साहब से भी हम काफी सुझाव लेते रहते हैं अभी पिछले दिनों में मिला तो इसी विषय पर मैंने उनसे चर्चा की है मुझे ज़रा इसमें ज़रा आप Guide कीजिये। आज वो आये और हमारे Team को काफी दिन पुरे दिन सुबह उनको पढ़ाया भी कि देखो भई देखो यह हो सकता है, यह हो सकता है तो कोशिश यह है कि हमारी के इस क्षेत्र में कैसे काम करें अब यह बात सही है कि जनसंख्या बढ़ रही है ज़मीन बढ़ने वाली नहीं है कम होने वाली है तब Soil management ये अहम आवश्यकताएं होती है।

holistic approach कैसे हो इसके लिए हमारी productivity कैसे बढ़े हमारे पास marginal farmers 85% हैं देश में ऐसी स्थिति में हमारे किसान कम जमीन में भी ज्यादा उत्पादन और उत्पादिक चीजें भी सिर्फ खुद के पेट भरने के लिए नहीं उसके अपने इसकी अपनी market value ऐसे हो quality ऐसी हो ताकि वो अपनी रोजी रोटी कमा सके हम इस दिशा में किस तरह बल दे सकते हैं उसी प्रकार से पानी का संकट सारी दुनिया में इसकी चर्चा है हम recycling करें हम water conservation करें यह सारा करने के बावजूद भी पानी एक चुनौती है ऐसा मान के चलना चाहिए और पानी एक ऐसा विषय नहीं है की जब आयेगा तब देखा जाएगा जी नहीं अगर 20 साल 50 साल पहले सोच करके एक-एक चीज़ को अभी से करना शुरू करेंगे तब जा कर के अब इस विषय पर समाज में वो sensitivity तुरंत नहीं आती है जैसे air pollution even कितने ही पढ़े लिखे व्यक्ति होंगे इसका कितना संकट होगा समझते समझते देर चली जाती है।

पानी के संकट को भी सामान्य मानवीय को संकट के रूप में अनुभूति कराना बड़ा कठिन है और इसलिए water conservation के साथ-साथ हम पानी का उपयोग किस प्रकार से वैज्ञानिक तरीके से करें per drop more crop इस philosophy को लेकर के काम करने का प्रयास वर्तमान में चल रहा है नदियों को जोड़ने का एक अभियान अगर cost effective farming की और जाना है तो हमें पानी पहुंचाना पड़ेगा उसी प्रकार से soil management ही मैं एक हिस्सा मानता हूं की हम अनाप शनाप जो chemical का उपयोग कर रहे हैं हैं fertilizer का उपयोग कर रहे हैं जो हमारी ज़मीन को तबाह कर रहे हैं। नदी तट पर जो खेत हैं वहां पर लोगों को लगता है Pollution Industries से होता है। कभी-कभी चिंता का विषय है उसके 2 चार Km के रैंज में जो खेत हैं जहां chemical उपयोग होता है और वो पानी बारिश के बाद जब ज़मीन को धोकर कर के नदी में जाता है तो कैसे भयंकर chemical लेके जाता है और इसलिए हमारी नदियों को बचाना नदियों के पानी को maximum उपयोग करना तो एक प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना एक बहुत बड़ा mission mode में काम शुरू किया है उसी प्रकार से एक आवश्यक है हमारे यहां कभी-कभार कुछ न कुछ कारण से जो बोलचाल में जो विषय होते हैं उसे हम neglect करते हैं यह बहुत आवश्यक है कि समाज जीवन में दशकों से सदियों से जो बोलचाल के विषय होते हैं उसके अन्दर एक बहुत बड़ी ताकत होती है और laboratory में ले जाकर के उस बोलचाल की चीजों को सिद्ध करने का कोशिश करना चाहिए मेरा इसलिए अनुभव है गुजरात में एक क्षेत्र है जिसको भाल कहते हैं समुंद्री तट के पास में हैं खम्भात की खाड़ी के इलाके में अब हम बचपन से सुनते आये हुए थे भालिया गेहूं कहते थे उसको और upper class के लोग रहते हैं वो भालिया गांव गेहूं खरीदना और preserve करना यह उनका स्वभाव था और बड़े मंहंगे दाम से लेते थे तो हमारे मन में रहता था यह भालिया गांव भालिया गांव इसका क्या कारण होगा कुछ तो होगा तो मैं मुख्यमंत्री बना तो मैंने उसमें रुचि लेना शुरू किया और यह पाया गया कि Normally गेहूं carban rich छोड़ता है surprising यह गेहूं protein rich है और बहुत ही कम इलाके में हैं तो मैं कभी Switzerland गया था तो मैं वह Nestle वगैरह के लोगो से मिला था मैंने कहा भई nutrition की समस्या का समाधान करने के लिए इसको कैसे उपयोग हो सकता है मेरे यहां मैंने एक university को इसका काम दिया इसके जीन के विषय में research किया काफी काम हुआ है जैसे basmati शब्द हम जानते थे लेकिन हमने देखा इसकी ताकत क्या है मुझे याद है अमरेली District गुजरात में एक इलाका ऐसा है सामूहिक समुद्र तट से हर कोई अमीर व्यक्ति अगर बाजरा चाहे तो वही से खरीदना चाहता है तो मैंने पूछा भई और मुझे भी जब

मुख्यमंत्री बना तो वहां के जो MLA थे वो मेरे लिए बाजरे एक थैले में भरकर एक gift के रूप में लाये थे तब तो मुझे भी मालूम नहीं था उस इलाके की बाजरे की ताकत तो बाद में मैंने कुछ वैज्ञानिकों को कहा ज़रा इसको सोचिये हिन्दुस्तान के कई कोने में ऐसी कोई ना कोई variety की चर्चा लोग जीभ पर होगी हम उसको कैसे identify करें और उसकी genetic value क्या है।

उसको हम और अगर वो सचमुच में कोई extra ताकत वाली चीज़ है या उसकी productivity की ताकत हो या कोई ना कोई ऐसा शरीर के लिए उपयोगी हो या मानव जात के लिए उपयोगी तो उसका research यह परंपरागत चीज़ और विज्ञान दोनों का मेल हम जितना जल्दी करेंगे और इसलिए मैंने अभी हमारे विभाग के लोगों को कहा भई हर जिले की अपनी एक कृषि लती पहचान कौन होते हैं उस district में enter कर रहें हो के यह जिला चावल का जिला है और चावल की नाम हो पहचान हो यह जिला इसाबगुल का जिला है यह जिला जीरा पैदा करता है हमारे इलाके की पहचान कृषि से identify हम कैसे करें यह हम लोगों की आदत नहीं है इससे एक awareness आती है यह district अब जैसे मुझे याद है हमारे यहां धूमल जी की सरकार है हिमाचल, मैं उस समय हिमाचल में रहता था उस समय मैंने कहा यह सोलन में मशरूम के लिए इतना काम होता है हम इसको capture क्यों नहीं कर पाते इसका branding क्यों नहीं करते और आज आप देखते होंगे कभी सोलन जायेंगे तो वहां board लगे हुए हैं की मशरूम City में आपका स्वागत है अब धीरे धीरे उन्होंने शायद और शुरू किया है apple का board लगाया है Kiwi का board लगाया है हमारे देश में समान्यजन को इन चीजों से कैसे जोड़ा जा सकता है इससे एक पहचान बनती है और वो किसान भी identify होता है और जो market से जुड़े लोग हैं और उनको भी ध्यान रखना भई यह 16 जिले हैं जिसकी चावल के लिए पहचान है तो व्यापार करना है खरीद के लिए तो यह 20 जिले हैं तिलहन के लिए famous है वहीं की पहचान है और एक Agriculture cluster एक concept develop होगा जैसे industrial cluster का concept है वैसे Agriculture cluster को हमने विकसित करना जरूरी है उसके कारण है product, product के साथ उसका processing और processing से value addition इसकी संभावना बढ़ जाती है अगर यह हम चैन व्यवस्था खड़ी करते हैं उसी प्रकार से फल होंगे तो उसके storage अलग प्रकार के होंगे, धान होंगे अलग प्रकार के होंगे फल होगा तो transformation अलग होगा packaging धान होगा packaging transportation होगा एक specialisation भीतर भीतर आयेगा हमारे इतने बड़े विशाल देश को अगर इन चीजों के अन्दर हम जितना जल्दी से ले जायेंगे हम क्योंकि हमारा सपना है 2022 जब देश की आजादी के 75 साल हो हमारे देश की किसान की income double होनी चाहिए किसान की income double हो सकती है कुछ दिन पहले मैं जब स्वामीनाथन जी से मिला था तो मैंने उनसे कहा था तो मैंने कहा था कुछ Agro economists से बुलाइए और चर्चा कीजिये उन्होंने मुझे एक paper पर लिख कर भेजा कि यह यह चीज़ है जिसपर ध्यान दीजिये तो मैं काम कर रहा हूं उस पर मेरे कहने का तात्पर्य यह है हम एक target के साथ काम करें एक तो cost कैसे कम हो और उत्पादन कैसे बढ़े और उत्पादन का value addition कैसे हो इन 3 चीजों की ओर अब जैसे neem coating urea अब कोई आसमान से टपका हुआ कोई विज्ञान नहीं था लेकिन हम इन चीजों को लागू करना महत्व नहीं देते थे आज neem coating urea का परिणाम यह आया है कि यूरिया की चोरी तो खत्म हुई हुई बेईमानी तो खत्म हुई लेकिन साथ-साथ urea की खपत भी कम हो रही है और तुरंत नज़र में आया है गेहूँ और चावल के उत्पादन बढ़ा है कम यूरिया का उपयोग करते हुए भी उत्पादन बढ़ा है तो यह अपने आप में ऐसी चीज़ें हम जितनी सरलता से प्रचारित करेंगे उतना उसका लाभ होगा भारत सरकार का इस दिशा में प्रयास है स्वामीनाथन जी की सक्रियता उनका यह प्रयास और भारत को evergreen revolution की ओर एक sustainable agriculture system की ओर ले जाने की दिशा में हम लोगों को वैज्ञानिक प्रयोगों को क्योंकि सबसे बड़ी जो एक हमारी समस्या है lab to land उसमें बहुत बड़ी खाया है lab to land यह हमारे टारगेट होना चाहिए वैज्ञानिक जो जिंदगी खपा देता है एक चीज़ देश को देने के लिए वो खेत तक नहीं पहुंचती हैं खेत तक कैसे पहुंचती और खेत तक तो तब तक नहीं पहुंचती जब तक की वो किसान के दिमाग में पहले नहीं पहुंचती यह एक ऐसा उद्योगपति के दिमाग में कुछ हो जाये जब मैं पैसा आ जाना चाहिए वो करेगा किसान का ऐसा नहीं है किसान जल्दी risk नहीं लेता है इन दिनों प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना जो लाये हैं उसने एक बहुत बड़ा contribution किया है इसके पूर्व कृषि में फसल बीमा योजना में जितने लोग आते थे इस नई प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के कारण 7 गुना लोग उसके cover में रहें अभी तो शुरुआत है प्रचार भी उतना नहीं हुआ है किसान में भी ifs and buts रहते हैं लेकिन एक दम से 7 गुना एक ही साल में jump लगाना यह हमारे farmers को security का एहसास दिलाता है और एक बार security का एहसास हो गया तो उसकी risk taking capacity बढ़ जाती है और जब risk taking capacity बढ़ जाती है तो वो वैज्ञानिकों के द्वारा कहे हुए प्रयोग करने के लिए तैयार हो जाता है एक chain शुरू हो जाती है तो प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना उसमें एक बहुत बड़ी ताकत है lab to land process को आगे बढ़ाने की उस दिशा में काम चल रहा है मैं फिर एक बार स्वामीनाथन जी को हृदय से बहुत-बहुत बधाई देता हूं देश की बहुत सेवा की है देश के किसानों की बहुत सेवा की है देश के गरीब के पेट को भरने के लिए एक तपस्वी की तरह काम किया है।

बहुत बहुत बधाई

धन्यवाद

अतुल कुमार तिवारी, शाहबाज हसीबी, सौरभ कुमार, ममता

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

10-मई-2017 20:15 IST

सुप्रीम कोर्ट की डिजिटल कोर्ट की ओर यात्रा के शुभारंभ के अवसर पर प्रधानमंत्री के संबोधन का मूल पाठ

सभाग्रह में उपस्थित सभी आदरणीय वरिष्ठ सुप्रीम कोर्ट के judges, बाहर के मित्रों, भाइयों और बहनों,

आज बुद्ध पूर्णिमा है। इस बुद्ध पूर्णिमा के पावन पर्व पर मेरी आपको और देशवासियों को बहुत-बहुत शुभकामनाएं हैं। देश बदल रहा है, छुट्टी है, हम लोग काम कर रहे हैं। आज 10 मई का एक और भी महत्व है, 1857 का स्वतंत्रता संग्राम देश की आजादी का एक बहुत बड़ा व्यापक संघर्ष का प्रारंभ 10 मई, आज शुरू हुआ था।

आज आधुनिकता की ओर एक और कदम वो भी न्यायव्यवस्था की तरफ से हो रहा है। मैं चीफ जस्टिस साहब और उनकी पूरी टीम को हृदय से बहुत-बहुत बधाई देता हूं, अभिनंदन करता हूं। वैसे तो हम इलाहाबाद में एक कार्यक्रम में मिले थे, तो चीफ साहब ने बड़ा ही विस्तार से आंकड़ों का एक पूरा चित्र वहां प्रस्तुत किया था वहां सबके सामने और देश में जो cases बाकी पड़े हैं pendency हैं और उन्होंने देश की Judiciary को अपील की थी कि आप vacation का कुछ समय दीजिए। एक तो वो सुनना ही मेरे लिए बहुत आनंददायक था वहां बैठकर के और बड़ा प्रेरक था और मुझे खुशी है कि मुझे कई जगह से खबरें आ रही हैं कि बहुत बड़ी मात्रा में हाई कोर्ट में, सुप्रीम कोर्ट में judges अपने vacation को कम करके इस देश के गरीबों के लिए अपना समय देने वाले हैं, मैं इसके लिए आपका बहुत आभारी हूं। Quantum के रूप में इसका परिणाम क्या आता है वो अलग बात है लेकिन इस प्रकार का भाव पूरे वातावरण को बदल देता है। एक sense of responsibility को बल देता है और सामान्य मानवी के मन में भी एक नया विश्वास पैदा होता है और 'New India' के लिए नया विश्वास भी उतना ही आवश्यक है और मैं इसके लिए हृदय से आप सबका बहुत आभार व्यक्त करता हूं।

आज हम technology के संबंध में सरकार का जो अनुभव है, मैंने राज्य में भी काम किया है यहां भी काम किया है, सरकारें या सरकार से जुड़ी हुई सारी व्यवस्थाएं दुर्भाग्य से technology का हमारा बड़ा सीमित अर्थ रहा वो hardware से रहा, hardware खरीदना, hardware बसाना, उसी को हमने technology मान लिया। कई दफ्तरों में आप जाएंगे तो पहले के जमाने में टेबल पर एक flower-pot रहता था, बड़ा अफसर आए तो बड़ा ताजे फूलों वाला रहता था। छोटा अफसर आए तो थोड़ा छोटा, लेकिन Flower-pot रहता था। युग बदल गया आधुनिकता आई तो Flower-pot की जगह बढिया सा computer रहता है, न उसने उसको कभी खोला है, न कभी हाथ लगाया है, लेकिन बड़ा अच्छा लगता है। इसलिए समस्या technology की कम है, बजट की भी कम है mind-set is a problem. अब आज बुद्ध पूर्णिमा हैं तो भगवान बुद्ध की एक बात बड़ी प्रेरक है, वो हमेशा कहते थे कि मन बदले, मत बदले, मंतव्य बदले तभी बदलाव की शुरुआत होती है। भगवान बुद्ध का एक बड़ा ही प्रेरक संदेश है ये। और उस अर्थ में आज भी हमने देखा है कि हर किसी को लगता है कि अब छः महीने हो गए मोबाइल फोन का मॉडल पुराना हो गया जरा नया मॉडल ला दें, कितना ही नया मॉडल लाएगा फिर भी उसकी जेब में contact list की डायरी रहती है। जबकि मोबाइल फोन में contact list की पूरी व्यवस्था है फिर भी उसकी डायरी रहती है क्योंकि हम दोस्तों के बीच में बैठते हैं तो हाथ में मोबाइल तो अच्छा होना चाहिए और green या red button से ज्यादा कुछ पता नहीं होता है। हम इतने, हमारी स्थिति ऐसी है कि हम बदलते कैसे नहीं हैं हम किसी को अगर SMS करते हैं बाद में फोन करते हैं, मेरा SMS मिला। चुनौती software में नहीं है, चुनौती hardware में भी नहीं है और इसके लिए एक सामूहिक मन बनाना पड़ता है एक chain अगर टूट गई तो process अटक जाती है। किसी को लगा कि मैं... अब देखिए हममें से कोई including myself जब तक अखबार हाथ में लेकर के अखबार नहीं पढ़ते तब तक मजा नहीं आता है। अखबार पड़ा ऐसा रहता है आज के बच्चे अखबार को छूते नहीं हैं यूं-यू करते हुए दुनिया भर की खबर लेकर के आ जाते हैं। तो ये जो बदलाव है इस बदलाव के साथ अपने आप को जोड़ना और ये एक environment create करना पड़ता है, तब जाकर के होता है जी। एकाध व्यक्ति का interest होगा वो करता रहेगा तो एकदम से पूरी व्यवस्था में isolate हो जाता है।

और इसलिए अभी चीफ साहब मुझे कह रहे हैं कि हम अभी एक प्रकार से Training का लगातार discussion का काम कर रहे हैं ताकि ये नीचे तक कैसे percolate हो इसके लिए हम प्रयास कर रहे हैं technology की ताकत बड़ी अदभुत है जो इसको अनुभव करेगा उसको अंदाज आएगा कि इसको कैसे उपयोग में लाना चाहिए। शुरू में उसको बड़ा डर लगता है कि यार ये मेरे बस का रोग नहीं है। आपने देखा होगा आप घर में बहुत बढिया VCR ले आए हैं, बढिया टीवी ले आए हैं,

लेकिन आपका पोता जब आपको कुछ समझ में नहीं आता तो पोते को बुलाते हो अरे देखो यार कैसे ये अटक गया तो वो ठीक कर देता है यानि इतना बड़ा gap है generation का इस सारे मामले में।

और इसलिए इसको cop-up करना, एक generation के लिए थोड़ा कठिन है, लेकिन अगर वो generation इसको cop-up नहीं करेगी तो नीचे percolate होना impossible है। और इसलिए ये सबसे बड़ी चुनौती है, इसके साथ जुड़ी हुई है।

मेरे हिसाब से E-Governance, Easy-Governance, Effective Governance, Economical Governance, Environment Friendly Governance हम इस e-Governance को जीवन के हर क्षेत्र में कैसे लाएं? अब जो हम एक कागज A-4 size का एक कागज उपयोग करते हैं Research कहता है कि A-4 size का एक कागज पूरी प्रक्रिया के दरम्यान 10 लीटर पानी consume करता है। 10 लीटर पानी ... इसका मतलब ये हुआ कि मैं अगर इस Paper-less दुनिया की ओर जाता हूँ, तो मैं कितनी बड़ी आने वाली पीढ़ियों की सेवा करना वाला हूँ। मैं कितने जंगल बचाऊंगा, मैं कितनी बिजली बचाऊंगा, जब मैं बिजली बचाऊंगा तो मैं कितने बड़े environment के issues को address करूंगा, यानि एक प्रकार से ये व्यवस्था की अपनी एक ताकत है। लेकिन जब तक उस पूरे स्वरूप को हम नहीं जानते तब तक छोड़ो यार ये मेरा काम नहीं है। अगर हम इसको इसके व्यापक रूप में भी लोगों को provoke करेंगे, ये कोई पहले का सब बुरा था, और पुराना था, और ये करता है वही आधुनिक है, इस रूप में इसको देखने की इसको जरूरत नहीं है, ये बहुत ही सरल है, बहुत ही उपयोगी है और आज के समय में जब समय की कठिनाई है तो कम समय में करने वाला काम इससे होता है।

सरकार में by and large हमारा अनुभव ये है कि हम लोग ये मानते हैं, हमारे विभाग ये मानते हैं कि हम जो करते हैं बहुत अच्छा है। हमारी कोई गलतियां नहीं, होती हमारी कोई कमियां नहीं होती हैं। स्वाभाविक है जो जहां काम करता है वो ये मानता ही है। अभी दो महीने पहले जरा मैंने जरा एक रिस्क लिया मैंने सब डिपार्टमेंट को कहा कि आप मुझे बताएं कि आपके यहां आपको लगता है कुछ कठिनाईयां हैं, कुछ गलत हो रहा है या इसको ठीक करना है या कुछ process को simplify करना है, जरा दिखाइये? कुछ दिन तो नहीं-नहीं साहब हमारा सब बढ़िया चल रहा है, कुछ खास problem नहीं है। मैं पीछे लगा रहा तो करीब 400 issues को identify किया अलग-अलग department का on date कि जिसमें सुधार की जरूरत थी या कुछ न कुछ intervention की जरूरत थी। अब बाद में मैंने Universities को ये काम दिया खासकर के 18 से 20-22 साल की उम्र के बच्चों को, कालेज के बच्चों को दिया और उनका एक हैकाथान का कार्यक्रम बनाया है 36 hours nonstop एक ही छत के नीचे बैठकर के काम करना और उसके solution ढूढ़ना, 400 issues उनको दे दिए सरकार के। 42,000 बच्चों ने इसमें हिस्सा लिया more than hundred universities & colleges ने उसमें भाग लिया और 36 hours nonstop एक ही छत के नीचे बैठकर के उन्होंने exercise की। I was surprised अधिकतम issues के solutions उन्होंने दिए हैं। Process के solutions दिए हैं। ज्यादातर फिर सरकार के साथ उनका interface हुआ, सरकार को उन्होंने बताया कि देखो इसका रास्ता ये है, इसका ये है। कई department ने इसको adopt भी किया है। और ये पिछले दो महीने में ही हो चुका है। इसका मतलब हुआ कि हमारे पास इतना बड़ी संभावनाएं हैं, अगर हम कोशिश करें। और मैं जो चाहता हूँ कि आप भी देश के technology की field के students को ऐसे अगर issue देंगे उनको कहें के ढूढ़ के लाओ रास्ता क्या निकल सकता है रास्ता, क्या हो सकता है, क्या software बन सकता है, कैसी technique काम आ सकती है मैं विश्वास से कहता हूँ कि वो इतना बढ़िया चीजें देते हैं और solution देते हैं हम सरलता से उसको accept कर सकते हैं मायने स्वीकार कर सकते हैं। और मेरा मत है कि IT+IT = IT अब ये arithmetic वालों के भी काम नहीं है। जब मैं कहता हूँ बड़े विश्वास से कहता हूँ IT+IT = IT means Information Technology + Indian talent = India Tomorrow ये सामर्थ्य है इसमें। इस सामर्थ्य का हम उपयोग करके कैसे आगे बढ़ें।

अब एक जमाना था जबकि currency terracotta के, मिट्टी के coin बनते थे दुनिया चलती थी। वक्त बदल गया कभी तांबे के सिक्के आए, कभी चांदी के आए, कभी सोने के आए, कभी चमड़े के आए, धीरे-धीरे करके कागज के आए। अभी ये बदलाव हमीं लोगों ने स्वीकार किया युग के अनुसार अब वक्त आ चुका है कि अब कागज वाली currency का वक्त जा रहा है अब digital currency हमको हमारे स्वभाव को बनाना पड़ेगा।

मैं इन दिनों खासकर के 8 नवंबर के बाद जिस क्षेत्र में मेरा कोई अनुभव नहीं था उसमें जरा ज्यादा interest लेने का मौका आया Digital Currency के लिए, Demonetization का दिन था 8 नवंबर। और मैंने अनुभव किया कि नोट छापना, उसको सुरक्षित रखना, उसको पहुंचाना transportation, अरबों खरबों रुपयों का खर्च है जी एक ATM को संभालने के लिए एक.. एक ATM को संभालने के लिए छः-छः पुलिस वाले लगते हैं जी। जबकि technology available है जेब में एक currency न हो तो भी आप अपना गुजारा कर सकते हैं इतनी technology आज उपलब्ध है। हम अगर जैसे सरकार initiative लेकर के BHIM App बनाया है। एक रुपये का खर्चा नहीं है, आप अपने मोबाइल पर डाउनलोड कीजिए, सामने वाले के पास हो, अपना कारोबार शुरू कर दीजिए, कोई problem नहीं है। देश के अरबों खरबों रुपये अगर बचेंगे तो किसी

न किसी गरीब के घर बनाने के लिए, गरीब बच्चों की शिक्षा देने के लिए काम आना वाला हैं।

Technology पूरे economical atmosphere को change कर सकती है, ये ताकत है इसकी। हम इसको किस प्रकार से उपयोग में लाए और जीवन के हर क्षेत्र में हम इसको किस प्रकार से प्रयोग लाए हमने प्रयास करना चाहिए। मेरा स्वयं का अनुभव है कि बहुत तेजी से इसका महात्मय लोगो की समझ में आने लगा है। अगर खुद को नहीं आता है तो एक हम नौजवान रख लेते हैं, देखो भई तुम मुझे मेरे इस काम में assist करो, मुझे आदत नहीं है लेकिन तुम करो वो कर देता है। आज हम जिस technology के युग में जी रहे हैं शायद हजार साल में technology ने जो रोल play किया होगा, पिछले तीस साल में उससे हजार गुना ज्यादा technology ने रोल play किया है। जो काम हजार साल में नहीं हुआ है, वो तीस साल में हुआ है। और आज जो हो रहा है यहां से निकलने के बाद वही technology हो सकता है out dated हो जाए इतनी तेजी से technology बदल रही है, बहुत दूर तक दिन होंगे जबकि Artificial Intelligence dominate करेगा। Artificial Intelligence का पूरा field पूरी मानव जात को drive करने वाला है। Job बचेगी कि नहीं बचेगी उसका debate होगा, driver-less car आएगी, Artificial Intelligence से चलने वाली कार आने वाली है। ड्राइवर का क्या होगा? क्या Artificial Intelligence आने के बाद भी job-creation की संभावना है क्या? और जो उसके expert हैं उनका कहना है कि Artificial Intelligence के बाद job-creation की भारी संभावनाएं बढ़ने वाली हैं। पूरा विश्व एक नई सोच की ओर जाने वाला है। उसके लिए नई generation तैयार होने वाली है। यानि जगत कितनी तेजी से बदल रहा है, technology मनुष्य को जिस प्रकार से drive कर ले जा रहा है, अगर हम उसके साथ अपने आप को थोड़ा सा भी cop-up नहीं रखेंगे, तो फासला इतना बढ़ जाएगा कि फिर हम इतने irrelevant हो जाएंगे कि हमें कोई पछेगा तक नहीं ये अवस्था दूर नहीं है।

और इसलिए Space Technology हम लोग आज हिन्दुस्तान में Space Technology and Science में बड़ी इज्जत कमाई है, दुनिया में हमारी प्रतिष्ठा बनी हैं। हम जो Mars में गए दुनिया को वहां पर first trial में कोई सफल नहीं हुआ था, भारत first trial में सफल हुआ। और खर्चा कितना हुआ आज अगर हम टेक्सी किराए पर लेते हैं एक किलोमीटर का मानो 10 रुपया 11 रुपया होता है हम Mars पर गए एक किलोमीटर 7 रुपये में गए। और दुनिया में हॉलीवुड की फिल्म का जो खर्च होता है, उससे कम बजट में हिन्दुस्तान ने Mars success किया है आज ये हमारे Scientists की talent की कमाल है, ये हमारे देश के वैज्ञानिकों का सामर्थ्य है। लेकिन दुर्भाग्य से इतना बड़ा Space Technology भारत की इतनी बड़ी achievements, लेकिन applicable science में हम, Science को apply करने की दिशा में हम बहुत पीछे पड़ गए हैं। मेरे यहां आने के बाद मैंने एक workshop किया सभी Joint Secretaries का कई दिनों तक किया Department-wise किया Space Technology का Governance में कैसे उपयोग होता है। आज हम रोड बनाते हैं, तो ऐसे-ऐसे बनाते हैं। Space Technology का उपयोग करिए तो आप minimum curves के साथ straight-way road बना सकते हैं, आप design कर सकते हैं और सारी चीजें कर सकते हैं। मुझे tribal को rights देना था जमीन का। मैंने Space Technology का उपयोग किया। और मुझे कोई proof की जरूरत नहीं थी, Space Technology से मैं सीधे कर सकता था कि ये Forest land है, जो कभी farming के लिए आती थी, 15 साल के पुराने फोटोग्राफ से, मैं तय कर सकता हूं कि यदि उसका right बनता है, हम उसको provide कर सकते हैं।

आज Justice System में जितनी खासकर के Criminal Justice के field में, न्याय की संभावना बढ़ गई है क्योंकि technology बहुत बड़ा support कर रही है। मोबाइल फोन ऐसे सबूत छोड़ कर के जाता है कि आपको evidence के लिए एकदम से scientific सुविधाएं मिल जाती हैं। Forensics Science का बहुत बड़ा रोल हो रहा है! Accident के मसले CCTV Camera के फुटेज से आप Judgement देने के नतीजे पर पहुँच जाते हैं। कहने का तात्पर्य है कि पूरी Judiciary System को और अधिक सक्षम बनाना, और सरल बनाने में technology Forensics Science बहुत बड़ा role play कर सकती है। हम जितनी तेजी से इन चीजों को adopt करेंगे, हम बड़े सटीक निर्णय देंगे।

अब कोई कल्पना कर सकता था क्रिकेट पहले umpire तय करता था हारा कि जीता। अब third umpire तय करता है कि भई तुम्हारा बाल सही था, पकड़े नहीं पकड़े, वो बता देता है, तो ऊपर से light कर देता है। अब कोई कहेगा umpire की नौकरी चली गई, umpire की नौकरी नहीं चली गई efficiency आई है। और इसलिए मैं समझता हूँ कि technology के संबंध में हम जितनी सरलता के साथ उसको स्वीकारेंगे उतनी सरलता से मुझे जरूर लगता है कि इसका बहुत ही लाभ मिलने वाला है।

अभी रविशंकर जी pro-bono की बात कर रहे थे। मैं जरूर इसका आप सबके सामने उल्लेख करना चाहूंगा। ये जो हमारे देश में सोच है, ये देश के नागरिक ऐसे हैं, लोग ऐसे हैं, लोगों को तो अपना ही है, ये reality नहीं हैं। ये देश का मिजाज हम पहचानें, देश का मिजाज अलग है। ये platform ऐसा नहीं, मैं उदाहरण देने जा रहा हूँ, उचित है लेकिन फिर भी वो ज्यादा suitable है इसलिए मैं दे रहा हूँ, मुझे क्षमा करना, 2014 का जो इलेक्शन हुआ है। मेरी पार्टी ने मुझे प्रधानमंत्री के

रूप में, उम्मीदवार के रूप में मुझे प्रस्तुत किया था, सामने भी कांग्रेस की पार्टी के लोग चुनाव लड़ रहे थे और उस चुनाव के पहले आपको मालूम होगा दिल्ली में एक बहुत बड़ी मीटिंग हुई थी कांग्रेस पार्टी की। और देश का पूरा ध्यान था कि वो क्या लेकर के देश के सामने आते हैं देश में चुनाव के लिए और जब प्रेस कांफ्रेंस हुआ था तो उन्होंने कहा था कि हमने निर्णय किया है कि 9 गैस की cylinder की बजाय 12 cylinder देंगे, यानि 2014 का चुनाव एक तरफ 9 cylinder और 12 cylinder इस तरफ था और दूसरी तरफ अलग ही वो एक। मैं उस समय की दृश्य की इसलिए याद दिलाता हूँ, अब आप देखिए कि technology के बारह जिस देश में 9 और 12 cylinder की debate लोकसभा तक भविष्य तय करने के लिए हो रही थी, सरकार बनने के बाद मैंने देशवासियों से एक छोटी सी अपील की थी, लालकिले पर से और मैंने कहा था कि भाई अगर आप कोई afford कर सकते हैं तो आप सब्सिडी छोड़ दीजिए ना! इतना सा कहा और मैं आज बड़े गर्व के साथ कहता हूँ कि मेरे देश के एक करोड़ 20 लाख परिवारों ने गैस की सब्सिडी surrender कर दी। हमने अपनी सोच के कारण 9 और 12 में हम उलझे थे, उनकी ताकत क्या है कभी उसको हमने address ही नहीं किया था जी।

एक बार मैंने डाक्टरों से अपील की थी कि आप के पास बहुत काम होगा बहुत patient होंगे जब एक काम मेरी मदद कर सकते हैं क्या? मैंने कहा हर महीना 9 तारीख को कोई भी गरीब pregnant women आपके दरवाजे पर आएगी आप बिना फीस लिए उस गरीब pregnant मां की चिंता करिए। आपको जानकर के आनंद होगा कि इस देश के हजारों gynecologists doctors ने अपने अस्तपताल के बाहर बोर्ड लगाया है और नौ तारीख को वो बिना charge लिए गरीब pregnant women को सेवा करते हैं, उनको मदद करते हैं उनको guide करते हैं, दवाई करते हैं।

जब मैं गुजरात में था बड़ा भयंकर भूकंप आया था, मैंने इंजीनियरिंग के students को कहा था छः महीने के लिए समय दिये। बहुत बड़ी मात्रा में इंजीनियरिंग के students आए थे और मिशन तक मेरे साथ काम करने को खड़े हो गए थे। आज मैं देश की Legal fraternity को, खासकर के मेरे वकील मित्रों से आग्रह कर रहा हूँ ये जो pro-bono की क्रमशः हमने एक App तैयार किया है आप अपने आप को register करवाइए किसी गरीब को मदद चाहिए तो मैं गरीब के लिए मुफ्त में तैयार हूँ। एक पूरा देश में movement खड़ा हो गरीबों को legal help करने के लिए हम आगे आएँ। और ये एक technology का कमाल है कि ये pro-bono के द्वारा व्यवस्था खड़ी की गई है। Technology से आप उसमें register कर सकते हैं, technology के माध्यम से जो requirement वाला है वो आ सकता है, या हमारे छोटे-मोटे organization हैं उनके द्वारा link up कर सकते हैं, लेकिन एक नया initiative अगर मेरे देश के गरीब, विधवा रिटायर टीचर वो जाकर के कतार में खड़ी रहकर के गैस सेलेंडर की सब्सिडी surrender कर सकती हैं, मेरे देश का Gynecologist doctor नौ तारीख को गरीब मां की सेवा करने को तत्पर रहता है, मेरे देश का नौजवान आपदा के समय अपने इंजीनियरिंग skill को लगा देने के लिए तैयार होता है, मेरे देश के IT का professional मैं उसको कहूँ कि 36 घंटे खाये-पिये बिना एक छत के नीचे आ जाओ और देश की समस्याओं के समाधान के लिए कोई रास्ते निकालने आ जाओ और 42 thousand नौजवान 36 घंटों के लिए 400 समस्याओं के समाधान के लिए रास्ता खोजते हैं, मुझे विश्वास है मेरे देश के वकील भी मेरे के गरीबों की मदद करने के लिए इस technology के माध्यम से आगे आएँगे, और देश का भविष्य बदलने के लिए काम आएँगे।

इसी अपेक्षा के साथ ये जो नया काम आपने शुरू किया है, खान्विलकर जी को मैं बहुत-बहुत शुभकामनाएं देता हूँ, बधाई देता हूँ चीफ साहब का मैं बहुत अभिनंदन करता हूँ। मैं मानता हूँ Digital India की दिशा में, न्याययिक व्यवस्था में technology का आना अपने आप में बहुत सेवा करेगा। बहुत-बहुत धन्यवाद।

अतुल कुमार तिवारी/ अमित कुमार/ ममता

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

07-मई-2017 17:50 IST

शिलाँग में भारत सेवाश्रम संघ के शताब्दी समारोह में प्रधानमंत्री के भाषण का मूल पाठ (07 मई, 2017 को वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से)

देवियो और सज्जनों,

दिल्ली और शिलाँग के बीच लगभग 2000 किलोमीटर की दूरी है। लेकिन तकनीक ने इस दूरी को मिटा दिया है। पिछले वर्ष मई के महीने में ही मैं शिलाँग आया था, आज जब video conference के माध्यम से आप सभी से बात करने का अवसर मिला है, आपके आशीर्वाद पाने का अवसर मिला है तो अनेक विगत समृद्धियां ताजा होना बहुत स्वाभाविक है। गुजरात में मुझे भारत सेवाश्रम संघ के सदस्य स्वर्गीय स्वामी अक्षयानंद जी महाराज के साथ बहुत निकट वात्सल्य का अवसर मिला, काम करने का मौका मिला था। मंच पर उपस्थित स्वामी अम्बरीशानंद जी, उनके सभी बाल काले थे; तब से जानता हूँ। कई वर्षों तक उनके एक मित्र भाव से उनके साथ काम करता रहा। स्वामी गणेशानंद जी, कई वर्ष हो गए मिलना नहीं हुआ है लेकिन उनको भी भली भांति मेरा, उनके साथ भी निकट संपर्क रहा। आचार्य श्रीमंत स्वामी प्रणबानंद जी महाराज, जिन्होंने भारत सेवा संघ की स्थापना की। इस वर्ष सेवा यात्रा के 100 वर्ष पूरे हो रहे हैं। सेवा और श्रम को भारत के निर्माण के लिए साथ-साथ लेकर चलने वाले संघ के सभी सदस्यों को मेरी तरफ से बहुत-बहुत शुभकामनाएं हैं।

किसी भी संस्था के लिए ये बहुत ही गौरव का विषय है कि उसकी सेवा का विस्तार 100 वर्ष पूरे कर रहा हो। और विशेषकर उत्तर-पूर्व के राज्यों में भारत सेवाश्रम संघ ने जन-कल्याणकारी कार्य बहुत ही प्रशंसनीय रहे हैं। बाढ़ हो या सूखा, या फिर भूकंप; भारत सेवाश्रम संघ के सदस्य पूरी तन्मयता से, सेवा भाव से, पीड़ितों को राहत पहुंचाते नजर आते हैं। संकट के समय जब इंसान को मदद की सबसे ज्यादा आवश्यकता होती है तो स्वामी प्रणबानंद जी के शिष्य सब कुछ भूल करके सिर्फ और सिर्फ मानव-सेवा में जुट जाते हैं। पीड़ित मनुष्य की सेवा तो हमारे शास्त्रों में तीर्थाटन के रूप में मानी जाती है। कहा गया है :-

एकतः क्रतवः सर्वे सहस्रत्र वरदक्षिणा अन्यतो रोग-भीतानाम् प्राणिनाम् प्राण रक्षणम्

यानी एक ओर विधिपूर्वक सब को अच्छी दक्षिणा दे करके किया गया यज्ञ कर्म और दूसरी तरफ दुखी और रोग से पीड़ित मनुष्य की सेवा करना, ये दोनों कर्म उतने ही पुण्यप्रद हैं। यानी यज्ञ करना और दुखियारों की सेवा करना, दोनों की पवित्रता एक बराबर है; ये हमारे शास्त्रों ने हमें सिखाया है।

साथियो,

स्वामी प्रणबानंद जी ने अपनी आध्यात्मिक यात्रा के चरम पर पहुंचने पर भी, और ये कहा था- ये समय महा-मिलन, महा-जागरण, महा-मुक्ति और महा-समान न्याय का है। आज जो हम social justice की बात कर रहे हैं, स्वामी प्रणबानंद जी ने उस समय अपने कार्यकाल में social justice के लिए आवाज उठाई थी। इसी के बाद उन्होंने भारत सेवाश्रम संघ की नींव रखी थी।

1917 में स्थापना के बाद जिस सेवाभाव के साथ इस संस्था ने काम शुरू किया था, और उसे बड़ौदा के उस समय के महाराजा, महाराजा सयाजीराव गायकवाड़ भी बहुत ही प्रभावित हुए थे। महाराजा सयाजीराव गायकवाड़ स्वयं जिस अथक परिश्रम से लोगों के उत्थान के लिए कार्य करते थे, वो जग-जाहिर है। लोक-कल्याण के कार्यों की चलती-फिरती संस्था की तरह वो थे, इसलिए श्रीमंत स्वामी प्रणबानंद जी के देशभर में भेज सेवा-दूतों को उन्होंने जमीनी स्तर पर कार्य करते देखा तो महाराजा उनकी प्रशंसा किए बिना नहीं रह सके।

जनसंघ के संस्थापक, हम सबके प्रेरणा-पुरुष, श्रद्धेय श्यामाप्रसाद मुखर्जी तो स्वामी प्रणबानंद जी को अपने गुरु की तरह मानते थे। डॉक्टर मुखर्जी के विचारों में स्वामी प्रणबानंद जी के विचारों की झलक भी हम देख सकते हैं। राष्ट्र निर्माण के जिस vision के साथ स्वामी प्रणबानंद जी ने अपने शिष्यों को अध्यात्म और सेवा से जोड़ा, वो अतुलनीय है। जब 1923 में बंगाल में सूखा पड़ा और तब तो भारत सेवाश्रम संघ की उम्र सिर्फ छह साल थी। जब 1946 में नोआखली में दंगे हुए,

जब 1950 में जलपाईगुड़ी में बहुत बाढ़ आई, जब 1956 में कच्छ के अंदर अंजार में पहला भूकंप आया था, जब 1977 में आन्ध्र प्रदेश में भीषण चक्रवात आया था, जब 1984 में भोपाल में गैस-त्रासदी हुई; तो भारत सेवाश्रम संघ के लोगों ने पीड़ितों के बीच रहकर उनकी सेवा; वो आज भी लोग याद करते हैं।

हमें ध्यान रखना होगा कि ये वो समय था जब देश में disaster management को ले करके न इतनी एजेंसियां बनी थी, न इतनी चर्चा थी, न इतना कोई awareness था। संकट आता था तो वहीं स्थानीय लोग अपनी बुद्धि, शक्ति के अनुसार कुछ न कुछ अपना काम कर लेते थे। प्राकृतिक आपदा हो, या इंसान के आपसी संघर्ष से पैदा हुए संकट, हर मुश्किल घड़ी में भारत सेवाश्रम संघ ने उससे निपटने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

मुझे लगता है कि आप लोग जहां बैठे हैं वहां बिजली चली गई लगता है। अंधेरा नजर आ रहा है मुझे यहां से। लेकिन मुझे तो देख पा रहे हो ना आप लोग? मेरी बात की सुनाई दे रही है? चलिए मुझे आपकी आवाज तो सुनाई दी।

बीते कुछ वर्षों की बात करें तो जब 2001 में गुजरात में भूकंप आया, 2004 में सुनामी आई, 2013 में उत्तराखंड में त्रासदी आई, 2015 में तमिलनाडु में बाढ़ आई, आप कोई भी ऐसी दुर्घटना देख लीजिए; भारत सेवाश्रम संघ की तरफ से जो भी उनकी शक्ति है, भक्तिपूर्वक सेवा करने में वो कभी पीछे नहीं रहे हैं।

भाइयों और बहनों, स्वामी प्रणबानंद जी कहा करते थे बिना आदर्श के जीवन मृत्यु के समान है। अपने जीवन में उच्च आदर्श स्थापित करके ही कोई भी व्यक्ति मानवता की सच्ची सेवा कर सकता है। भारत सेवाश्रम संघ के सभी सदस्यों ने उनकी इन बातों को अपने जीवन में उतारा है।

आज स्वाम प्रणबानंद जी जहां भी कहीं होंगे, मानवता के लिए आपके प्रयासों को देखकर बहुत ही प्रसन्न होते होंगे। देश ही नहीं, विदेश में भी प्राकृतिक आपदा आने पर भी भारत सेवाश्रम के सदस्य लोगों को राहत देने के लिए पहुंच जाते हैं। इसके लिए आप सभी का जितना अभिनंदन किया जाये उतना कम है।

हमारे शास्त्रों में भी कहा गया है-

आत्मार्थम् जीव लोके अस्मिन् को न जीवति मानवः।

परम परोपकार आर्थम यो जीवति स जीवति॥

यानी संसार में अपने लिए कौन मनुष्य नहीं जीता है, परंतु जिसका जीवन परोपकार के लिए है, उसका ही जीवन सच्चे अर्थ में जीवन है। इसलिए परोपकार के अनेक प्रयासों से सुशोभित भारत सेवाश्रम संघ 100 वर्ष पूरे होने पर अनेक-अनेक बधाई के पात्र हैं।

साथियों,

बीते कुछ दशकों में देश में एक मिथक बनाया गया कि अध्यात्म और सेवा के रास्ते अलग-अलग हैं। कुछ लोगों द्वारा ये बताने की कोशिश की गई कि जो अध्यात्म की राह पर है वो सेवा के रास्ते से अलग है। आपने इस मिथक को सिर्फ गलत साबित कर दिया, लेकिन अध्यात्म और भारतीय मूल्यों पर आधारित सेवा को एक साथ आगे बढ़ाया। आज देशभर में भारत सेवाश्रम संघ की सौ से ज्यादा शाखाएं और 500 से ज्यादा इकाइयां, स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा के क्षेत्र में, नौजवानों को ट्रेनिंग देने के कार्य में जुटी हुई हैं और बहुत बड़ी सेवा कर रही हैं।

भारत सेवाश्रम संघ ने साधना और समाज-सेवा के संयुक्त उपक्रम के तौर पर लोकसेवा का एक मॉडल विकसित किया है। दुनिया के कई देशों में ये मॉडल सफलतापूर्वक चल भी रहा है। संयुक्त राष्ट्र तक ने भारत सेवाश्रम संघ के कल्याणकारी कार्यों की प्रशंसा की है। स्वामी प्रणबानंद जी महाराज पिछली शताब्दी में देश की आध्यात्मिक चेतना की रक्षा करने वाले, उसे स्वतंत्रता आंदोलन से जोड़ने वाले, कुछेक महान अवतारों में से एक थे। स्वामी विवेकानंद जी, महर्षि अरविंद, ऐसे अनगिनत उन्हीं लोगों की तरह प्रणबानंद जी महाराज का नाम भी पिछली शताब्दी के उन महान संतों में लिया जाता है। और स्वामीजी कहा करते थे मनुष्य को अपने एक हाथ में भक्ति और एक हाथ में शक्ति रखनी चाहिए। उनका मानना था, कि बिना शक्ति के कोई मनुष्य अपनी रक्षा नहीं कर सकता, और बिना भक्ति के उसके खुद के ही भक्षक बन जाने का खतरा होता है।

समाज के विकास के लिए शक्ति और भक्ति को साथ लेकर जन-शक्ति को एकजुट करने का काम, जन-चेतना को जागृत करने का काम, उन्होंने अपनी बाल्यावस्था से ही शुरू कर दिया था। निर्वाण की अवस्था से बहुत पहले जब वो स्वामी प्रणबानंद नहीं हुए थे; सिर्फ बिनोद के नाम से जाने जाते थे। अपने गांव के घर-घर जाकर चावल और सब्जियां जमा करते

थे, और फिर उन्हें गरीबों में बांट देते थे। जब उन्होंने देखा कि गांव तक पहुंचने के लिए सड़क नहीं है, तो सभी को प्रेरित करके, जनशक्ति को जगा करके उन्होंने गांव तक पहुंचने के सड़क निर्माण का भी काम करवाया था। जातपात, छुआछूत के जहर ने कैसे समाज को विभक्त करके रखा है, इसका एहसास उन्हें बहुत पहले ही हो गया था। इसलिए सभी को बराबरी का मंत्र सिखाते हुए वो गांव के हर व्यक्ति के साथ बिठाकर ईश्वर की पूजा किया करते थे। 19वीं सदी के आखिरी में और 20वीं सदी के प्रारंभ में बंगाल जिस तरह की राजनीतिक गतिविधियों का केंद्र बना हुआ था, उस दौरान राष्ट्रीय चेतना जगाने के स्वामी प्रणबानंद जी के प्रयास और ज्यादा बढ़ गए थे। बंगाल में ही स्थापित अनुशीलन समिति के क्रांतिकारियों को वो खुला समर्थन देते थे। अंग्रेजों के खिलाफ लड़ते हुए वो एक बार जेल भी गए। अपने कार्यों से उन्होंने साबित किया कि साधना के लिए सिर्फ गुफाओं में रहना आवश्यक नहीं, बल्कि जन-जागरण और जन-चेतना जागृत करके भी साधना की जा सकती है, ईश्वर को प्राप्त किया जा सकता है।

भाइयो और बहनों,

आज से 100 वर्ष पहले देश जिस मनोस्थिति से गुजर रहा था, गुलामी की बेड़ियों से, अपनी कमजोरियों से मुक्ति पाना चाहता था। उसमें देश अलग-अलग भू-भागों पर जनशक्ति को संगठित करने के प्रयास अनवरत चल रहे थे। 1917 का ही वो वर्ष था, जब महात्मा गांधी ने चम्पारण में सत्याग्रह आंदोलन का बीजारोपण किया। हम सभी के लिए सुखद संयोग है कि इस वर्ष देश चम्पारण सत्याग्रह के 100 वर्ष का भी उत्सव मना रहा है। सत्याग्रह आंदोलन के साथ-साथ ही महात्मा गांधी ने लोगों को स्वच्छता के प्रति जागरूक भी किया था। आपकी जानकारी में होगा कि पिछले महीने चम्पारण सत्याग्रह की तरह ही देश में स्वच्छाग्रह का अभियान की शुरुआत की गई है। आजादी के लिए सत्याग्रह, तो भारत के उज्ज्वल भविष्य के लिए स्वच्छाग्रह, यानी स्वच्छता के प्रति आग्रह।

आज इस अवसर पर मैं स्वच्छाग्रह को भी आपकी साधना का, सेवा का अभिन्न अंग बनाने का आग्रह करना चाहता हूं। इसकी एक वजह भी है; आपने देखा होगा कि अभी तीन-चार दिन पहले ही इस साल के स्वच्छ सर्वेक्षण में शहरों की रैंकिंग घोषित की गई है। उत्तर-पूर्वी राज्यों के 12 शहरों का भी सर्वे किया गया था, लेकिन स्थिति बहुत अच्छी नहीं है, सिर्फ गंगटोक ऐसा शहर है जो 50वें नंबर पर आया है। चार शहरों की रैंकिंग 100 से 200 के बीच है, और बाकी 7 शहर 200 और 300 के दायरे में आ गए हैं। शिलॉग जहां आप बैठे हुए हैं, वो भी Two hundred and seventy six नंबर पर है। ये स्थिति हमारे लिए, राज्य सरकारों के लिए, भारत सेवाश्रम संघ जैसी संस्थाओं के लिए; मैं समझता हूं कि हम सब के लिए एक बहुत बड़ी चुनौती है। स्थानीय एजेंसियां अपना काम कर रही हैं, लेकिन इनके साथ-साथ प्रत्येक व्यक्ति को ये एहसास कराया जाना बहुत आवश्यक है कि वो अपने-आप में स्वच्छता मिशन का एक सिपाही है। हर व्यक्ति ने अपने प्रयास से ही स्वच्छ भारत, स्वच्छ उत्तर-पूर्व के लिए, उस लक्ष्य को हम हासिल कर सकते हैं।

भाइयो और बहनों,

स्वामी प्रणबानंद जी महाराज कहते थे देश के हालात को बदलने के लिए लाखों निःस्वार्थ कर्मयोगियों की आवश्यकता है। यही निःस्वार्थ कर्मयोगी देश के प्रत्येक नागरिक का मनोभाव बदलेंगे, और उस बदले हुए मनोभाव में एक नये राष्ट्र का निर्माण होके रहेगा। स्वामी प्रणबानंद जी, ऐसी महान आत्माओं की प्रेरणा से देश में आप जैसे करोड़ों निःस्वार्थ कर्मयोगी हैं। बस हम सभी मिल करके अपनी ऊर्जा, स्वच्छाग्रह के इस आंदोलन को सफल बनाने में लगा देनी है। मुझे बताया गया है कि जब स्वच्छ भारत अभियान शुरू हुआ था, तब आप लोगों ने उत्तर-पूर्व के पांच रेलवे स्टेशनों का चयन किया था कि उन स्टेशनों में सफाई की जिम्मेदारी उठाएं; वहां हर पखवाड़े स्वच्छता का अभियान चलाया। अब आपके प्रयासों को और ज्यादा बढ़ाए जाने की जरूरत है।

आपको आश्चर्य होता होगा, मोदी जी हमें काम बता रहे हैं, अब मैं आपको इसलिए बता रहा हूं कि आप लोग करते हैं, और बताने का मन भी तो उन्हीं को होता है, जो करने की आदत रखता है। तो मुझे भी मोह हो जाता है कि मैं भी आपको कुछ कह दूं। इस वर्ष जब आप सभी अपनी संस्था के घटन के 100 वर्ष मना रहे हैं तो इस महत्वपूर्ण वर्ष को क्या पूरी तरह स्वच्छता पर केन्द्रित कर सकते हैं? क्या आपकी संस्था जिन इलाकों में काम कर रही है, वहां पर पर्यावरण की रक्षा के लिए, पूरे इलाके को प्लास्टिक-फ्री बनाने के लिए, और स्वच्छता के ऐसे और कामों को भी कर सकती है क्या? क्या जल संरक्षण और जल प्रबंधन के फायदों के लिए लोगों को जागरूक कर सकती है क्या? क्या अपने लक्ष्यों को, संस्था के कुछ कार्यों को आप वर्ष Twenty twenty two, 2022, उसके साथ जोड़ सकते हैं क्या? 2022, भारत अपनी स्वतंत्रता के 75वें वर्ष में प्रवेश कर रहा है। इसमें अभी पांच वर्ष का समय है, और इस समय का उपयोग कर हर व्यक्ति, हर संस्था को अपने आसपास व्याप्त बुराइयों को खत्म करके, पीछे छोड़कर; आगे बढ़ने का प्रयास करना चाहिए, संकल्प लेना चाहिए, चल पड़ना चाहिए।

साथियो,

आपको ज्ञात होगा कि 1924 में स्वामी प्रणबानंद जी ने देशभर में स्थित अनेक तीर्थस्थलों का पुनरुद्धार करवाया था। तीर्थशंकर नाम से आपने एक कार्यक्रम शुरू करके उस समय हमारे तीर्थस्थलों से जुड़ी जो कमजोरियाँ थीं, उसको दूर करने का उन्होंने भरसक प्रयास किया था। आज हमारे तीर्थस्थलों की एक बड़ी कमजोरी अस्वच्छता है। क्या भारत सेवाश्रम संघ, प्रणबानंद जी ने जिस काम को शुरू किया था, वो तीर्थशंकर कार्यक्रम को पुनः एक बार शुरू करके, स्वच्छता से जोड़ते हुए, नए सिरे से उसको और अधिक प्राणवान बना करके आगे बढ़ा सकता है क्या? आपदा प्रबंधन के अपने अनुभवों को भारत सेवाश्रम संघ कैसे ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुंचा सकता है, उस बारे में भी सोचा जाना चाहिए। हर वर्ष देश में हजारों जिंदगियाँ प्राकृतिक आपदा की वजह से संकट में आती हैं। प्राकृतिक आपदाओं के समय कैसे कम से कम नुकसान हो, इसी को ध्यान में रखते हुए पिछले वर्ष देश में पहली बार National disaster management plan बनाया गया है। सरकार बड़े पैमाने पर लोगों को जागरूक कर रही है, लोगों को Mock exercise के जरिए भी disaster management के तरीकों के बारे में बताया जा रहा है।

साथियों,

आपके उत्तर-पूर्व के राज्यों में सक्रियता और संगठन शक्ति का disaster management में बहुत उपयोग हो सकता है। आपकी संस्था आपदा के बाद और आपदा से पहले, दोनों ही स्थितियों से निपटने के लिए लोगों को तैयार कर सकती है।

इसी तरह जैसे स्वामी प्रणबानंद जी देशभर में प्रवचन दल भेज करके अध्यात्म और सेवा का संदेश देश-विदेश तक पहुंचाया, वैसे ही आपकी संस्था उत्तर-पूर्व के कोने-कोने में जा करके, आदिवासी इलाकों में जाकर, खेल से जुड़ी प्रतिभाओं की तलाश में प्रभावी भूमिका निभा सकती है। इन इलाकों में पहले से आपके दर्जनों स्कूल चल रहे हैं। आपके बनाए Hostel में सैकड़ों आदिवासी बच्चे पढ़ रहे हैं। इसलिए ये काम आपके लिए मुश्किल नहीं है। आप जमीन पर काम करने वाले लोग हैं। लोगों के बीच में काम करने वाले लोग हैं। आपकी पारखी दृष्टि खेल प्रतिभाओं को सामने लाने में मदद कर सकती है।

स्वामी प्रणबानंद जी कहते थे कि देश की युवा शक्ति जागरूक नहीं हुई तो सारे प्रयास विफल हो जाएंगे। अब एक बार फिर अवसर आया है। सुदूर उत्तर-पूर्व में छिपी इस युवा शक्ति को, खेल की प्रतिभाओं को, मुख्यधारा में लाने का, इसमें आपकी संस्था की बड़ी भूमिका हो सकती है। बस मेरा आग्रह है कि आप अपनी इस सेवा-साधना के लिए जो भी लक्ष्य तय करें वो measurable हो। यानी जिसे आंकड़ों में तय किया जा सके, नापा जा सके। स्वच्छता के लिए आप उत्तर-पूर्व के दस शहरों तक पहुंचें या एक हजार गांवों तक पहुंचें, ये निर्णय आप करें। Disaster management के लिए 100 कैम्प लगाए या 1000 कैम्प लगाएं, इसका निर्णय आप करें। लेकिन मेरा फिर आग्रह है जो भी तय करें, उसको नापा जा सकना चाहिए, हिसाब-किताब निकलना चाहिए, measurable होना चाहिए।

2022 तक, भारत सेवाश्रम संघ ये कहने की स्थिति में हो कि हमने सिर्फ अभियान ही नहीं बल्कि 50 हजार या एक लाख लोगों को इससे जोड़ा है। जैसे स्वामी प्रणबानंद जी कहा करते थे, हमेशा एक डायरी maintain करनी चाहिए, वैसे ही आप भी संस्था की एक डायरी बना सकते हैं, जिनमें लक्ष्य भी लिखें जाएं और तय अंतराल पर ये भी लिखा जाए कि उस लक्ष्य को कितना प्राप्त किया। आपका ये प्रयास, आपका ये श्रम देश के निर्माण के लिए New India, इस सपने को पूरा करने के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है।

श्रम को तो हमारे यहां सबसे बड़ा दान माना गया है। और हमारे यहां हर स्थिति में दान देने की प्रेरणा दी जाती है।

श्रद्धया देयम्, अ-श्रद्धया देयम्, श्रिया देयम्, हया देयम्, भिया देयम्, सम्विदा देयम्

हमारे यहां तो कहते हैं व्यक्ति को चाहिए कि वो श्रद्धा से दान दे, और यदि श्रद्धा न हो तो भी बिना श्रद्धा को दान देना चाहिए। धन में वृद्धि हो तो दान देना चाहिए और यदि धन न बढ़ रहा हो तो फिर लोकलाज से दान देना चाहिए; भय से देना चाहिए अथवा प्रेम से देना चाहिए। कहने का तात्पर्य ये है कि हर परिस्थिति में मनुष्य को दान देना चाहिए।

साथियों,

उत्तर-पूर्व को लेकर मेरा जोर इसलिए है, क्योंकि स्वतंत्रता के बाद इतने वर्षों में देश के इस क्षेत्र को संतुलित विकास नहीं हुआ है। अब केंद्र सरकार पिछले तीन वर्षों से अपने सम्पूर्ण संसाधनों से उत्तर-पूर्व के संतुलित विकास का प्रयास कर रही है। पूरे इलाके में connectivity बढ़ाने पर भी जोर दिया जा रहा है। 40 हजार करोड़ के निवेश से उत्तर-पूर्व में Road Infrastructure तैयार किया जा रहा है। रेलवे से जुड़े 19 बड़े Project शुरू किस गए हैं। बिजली की व्यवस्था सुधारी जा रही है।

पूरे इलाके को पर्यटन के लिहाज से, Tourism की दृष्टि से मजबूत किया जा रहा है। उत्तर-पूर्व के छोटे हवाई अड्डों का भी आधुनिकीकरण किया जा रहा है। आपके इस शिलॉंग Airport में भी Runway की लम्बाई बढ़ाने की मंजूरी दे दी गई है। बहुत जल्द ही उत्तर-पूर्व को उड़ान योजना से भी जोड़ा जाएगा। ये सारे प्रयास North-East को South-East Asia का gateway बनाने में मदद करने वाले हैं। South-East Asia का ये खूबसूरत gateway अगर अस्वच्छ होगा, अस्वस्थ होगा, अशिक्षित होगा, असंतुलित होगा तो देश विकास के gateway को पार करने में पिछड़ जाएगा। साधनों और संसाधनों से भरपूर हमारे देश में कोई ऐसी वजह नहीं जो हम पिछड़े रहें, गरीब रहें। "सबका साथ, सबका विकास" मंत्र के साथ हमें सभी को सशक्त करते हुए आगे बढ़ना है। हमारा समाज समन्वय, सहयोग और सौहार्द से सशक्त होगा। हमारा युवा चरित्र, चिन्तन और चेतना से सशक्त होगा। हमारा देश जनशक्ति, जनसमर्थन और जनभावना से सशक्त होगा। इस परिवर्तन के लिए, हालात बदलने के लिए, New India बनाने के लिए हम सभी को, करोड़ों-करोड़ों निस्वार्थ कर्मयोगियों का भारत सेवाश्रम संघ जैसी अनेकानेक संस्थाओं को मिल करके काम करना होगा।

इसी आह्वान के साथ मैं अपनी बात समाप्त करता हूं, और एक बार फिर भारत सेवाश्रम संघ के सभी सदस्यों को बहुत-बहुत शुभकामनाएं देता हूं। देवस्त विराजमान परमानंद जी महाराज के चरणों में भी वंदन करता हूं, और आप सभी को अनेक-अनेक शुभ कामनाओं के साथ बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूं।

अतुल कुमार तिवारी / शाहबाज हसीबी / निर्मल शर्मा

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

29-जून-2017 20:13 IST

गुजरात के राजकोट में सामाजिक अधिकारिता शिविर में प्रधानमंत्री के संबोधन का मूल पाठ

मेरे प्यारे परिवारजन, ऐसे सभी दिव्यांगजन, भाइयो और बहनों।

अभी विजय भाई, हमारे मुख्यमंत्री जी बता रहे थे कि प्रधानमंत्री के तौर पर किसी शासकीय कार्यक्रम के निमित्त 40 साल के बाद किसी प्रधानमंत्री का राजकोट आना हुआ है। मुझे बताया गया कि आखिर में प्रधानमंत्री के तौर पर राजकोट में श्रीमान मोरारजी भाई देसाई आए थे। मेरा ये सद्भाग्य है कि मुझे आज राजकोट के जनता-जनार्दन के दर्शन करने का अवसर मिला है। मेरे जीवन में राजकोट का विशेष महत्व है। अगर राजकोट ने मुझे चुन करके गांधीनगर न भेजा होता तो आज देश ने मुझे दिल्ली में न पहुंचाया होता।

मेरी राजनीतिक यात्रा का प्रारंभ राजकोट के आशीर्वाद से हुआ, राजकोट के भरपूर प्यार से हुआ, और मैं राजकोट के इस प्यार को कभी भी नहीं भूल सकता। मैं फिर एक बार राजकोट के जनता-जनार्दन को सिर झुका करके नमन करता हूँ, प्रणाम करता हूँ, वंदन करता हूँ, और बार-बार आपसे आशीर्वाद की कामना करता हूँ।

जिस समय NDA के सभी सांसदों ने मुझे नेता के रूप में चुना, प्रधानमंत्री पद का दायित्व निश्चित हुआ, और उस दिन मैंने भाषण में कहा था कि मेरी सरकार इस देश के गरीबों को समर्पित है। ये मेरे दिव्यांगजन, देश में करोड़ों की तादाद में दिव्यांगजन हैं। और दुर्भाग्य से अधिकतम मात्रा में जिस परिवार में ये संतान जन्म लेता है, ज्यादातर उस परिवार के जिम्मे ही उसका लालन-पालन होता है। मैंने ऐसे कई परिवार देखे हैं, मैंने कई ऐसी माताएं देखी हैं। 25 साल, 27 साल, 30 साल की उम्र है, जीवन के सारे सपने बाकी हैं, शादी के बाद पहला संतान हुआ, और वो भी दिव्यांग हुआ। और मैंने देखा है उस पति-पत्नी ने, उन मां-बाप ने अपने जीवन के सारे सपने उस बालक को न्यौछावर कर देते हैं। जीवन में एक ही सपना रहता है कि परिवार में पैदा हुआ ये दिव्यांगजन, ईश्वर ने हमें दायित्व दिया है और इस दायित्व को ईश्वर-भक्ति की तरह हमें निभाना है। ऐसे लाखों परिवार हमारे देश में हैं।

लेकिन मेरे प्यारे देशवासियो, ईश्वर ने शायद एक परिवार पसंद किया होगा, उसके घर में किसी दिव्यांगजन का आगमन हुआ होगा। परमात्मा को शायद भरोसा होगा कि यह परिवार है, उसकी संवेदनशीलता है, उसके संस्कार हैं, वही शायद इस दिव्यांग बच्चे को पालन करेगा। इसलिए शायद परमात्मा ने उस परिवार को पसंद किया होगा। लेकिन भले वो किसी एक परिवार में पैदा हो, लेकिन दिव्यांग इस समग्र समाज की जिम्मेवारी होती है, पूरे देश का दायित्व होता है और इस दायित्व को हमें निभाना चाहिए। हमारे भीतर वो संवेदनशीलता होनी चाहिए।

जब मैं गुजरात में था, तब भी इन कामों पर मैं बल दे रहा था। राजकोट के अंदर ही हमारे डॉक्टर P V Doshi, वे इस प्रकार की एक स्कूल के साथ जुड़े थे। उसके कारण मुझे लगातार उन बच्चों से मिलने का मौका मिलता था, उनके साथ जाने का मौका मिलता था। और मैं डॉक्टर Doshi साहब जिस प्रकार से भक्तिभाव से उस स्कूल में उन दिव्यांग बालकों के प्रति प्यार भरा नाता जोड़ करके रहते थे। उनकी एक बेटी भी इस काम के लिए समर्पित थी। ये चीजें जो मैंने देखी थीं, तब तो मैं राजनीति में भी नहीं था। बहुत छोटी आयु थी। Dr. Doshi ji के घर कभी आया करता था। और कभी उनके साथ जाता था, तो मन पर एक संस्कार हुआ करते थे, एक संवेदना, चेतना जगती रहती थी। और जब सरकार में आया, जिम्मेवारी मिली। आपको याद होगा हमने एक बड़ा महत्वपूर्ण निर्णय किया था। सामान्य रूप से स्वस्थ सामान्य बालक को Exam पास करने के लिए 35 marks की जरूरत पड़ती है, 100 में से। हमने निर्णय किया था कि दिव्यांग बालक को minimum 25 marks हों तो भी उसको पास माना जाए, क्योंकि एक स्वस्थ बालक को अपनी जगह से उठ करके किताब लेने में जितना, अलमारी से किताब लेने में जितना समय जाता है, दिव्यांग बालक को उससे तीन गुना समय जाता है, तीन गुना शक्ति लग जाती है, ऐसे बालक को विशेष व्यवस्था मिलनी चाहिए। और गुजरात में हमारी सरकार थी, मैं जब यहां काम करता था, उस समय मुझे ऐसे कई निर्णय करने का अवसर मिला था।

जब हम दिल्ली गए, बारीकी से एक, एक, एक चीज देखने लगे कि भाई आखिर इन विषयों में क्या हाल है? सिर्फ हमने

दिव्यांगजनों के लिए दिव्यांग शब्द खोज कर ही अपना काम पूरा नहीं किया। आप यहां देख रहे हैं, एक बहन जो सुन नहीं सकते, बोल नहीं सकते, उनको निशानी से मेरा भाषण सुना रही है। उनको समझा रही है कि मैं क्या बोल रहा हूं। आपको जान करके हैरानी होगी, आजादी के 70 साल बाद भी ये जो निशान की जाती है, signing की जाती है अलग-अलग भाषा समझाने के लिए, हिन्दुस्तान के हर राज्य में वो अलग-अलग थी। भाषाएं अलग थीं वो तो मैं समझता था, लेकिन दिव्यांगजनों के लिए एक्शन जो थी उसमें भी बदलाव था। इसके कारण अगर तमिलनाडू का दिव्यांगजन है और गुजरात की कोई टीचर है तो दोनों के बीच में संवाद संभव नहीं था। ये भी जानती थी कि दिव्यांग के साथ कैसे बात करना, वो भी जानता था कौन सी निशानियां। लेकिन तमिल भाषा में जो पढ़ाई गई वो निशानियां अलग थीं, गुजराती में पढ़ाई गई निशानियां अलग थीं, और इसलिए पूरे देश में, मेरा दिव्यांगजन कहीं जाता था, और कुछ कहता था तो समझने के लिए interpreter नहीं मिलता था। हमने सरकार में आने के बाद काम बड़ा है या छोटा, वो बाद का विषय है, लेकिन सरकार संवेदनशील होती है, वो कैसे सोचती है। हमने कानून बनाया और देश के सभी बालकों को एक ही प्रकार की निशानी सिखाई जाए, एक ही प्रकार के टीचर तैयार किए जाएं। ताकि हिन्दुस्तान के किसी भी कोने में, इतना ही नहीं हमने उस signing system को स्वीकार किया है कि अब हिन्दुस्तान का बालक दुनिया के किसी देश में जाएगा, तो भी निशानी से अगर उसको सीखना है तो वो language उसको available हो गई है। काम भले छोटा लगता हो लेकिन एक संवेदनशील सरकार किस प्रकार से काम करती है, इसका ये जीता-जागता उदाहरण है।

Ninety Two (1992) से, याद रखिए, Nineteen Ninety two से सामाजिक अधिकारिता विभाग के द्वारा दिव्यांगजनों को साधन देने के विषय में विचार हुआ, बजट देना शुरू हुआ, आजादी के इतने साल के बाद हुआ। आपको जान करके हैरानी होगी Ninety Two (1992) से लेकर 2013 तक, जब तक हमारी सरकार नहीं बनी थी; तब तक इतने सालों में देश में सिर्फ 55 ऐसे कार्यक्रम हुए थे, जिसमें दिव्यांगजनों को बुला करके कोई साधन दिए गए थे, 55! भाइयो, बहनों! 2014 में आए, आज 2017 है। तीन साल के भीतर-भीतर हमने 5500 कार्यक्रम किए, पांच हजार पांच सौ। 25-30 साल में 55 कार्यक्रम, तीन साल में 5500 कार्यक्रम, ये इस बात का द्योतक है कि ये सरकार की संवेदना कितनी है। सबका साथ-सबका विकास, इस मंत्र को चरितार्थ करने का हमारा मार्ग क्या है।

और भाइयों, बहनों! एक से बढ़कर एक नए world record स्थापित कर रहे हैं हम दिव्यांगजनों की मदद पे बल दे रहे हैं। आज भी राजकोट ने साढ़े अठारह हजार (18,500) दिव्यांग जनों को एक साथ, एक ही छत्र के नीचे साधन-सहायता एक विश्व रिकॉर्ड आज प्रस्थापित कर दिया है। मैं गुजरात सरकार को, राजकोट के अधिकारियों को और सभी मदद करने वाले बंधुओं को हृदय से बहुत-बहुत अभिनंदन करता हूँ कि मेरे दिव्यांगजनों की चिंता करने के लिए इतना आगे आए।

अभी मैं कुछ साधन यहां token स्वरूप दिव्यांगजनों से दे रहा था। मैं उनसे बात करने का प्रयास करता था। उनके चेहरे पर जो आत्मविश्वास दिखता था, जो खुशी नजर आती थी, इससे बड़ा जीवन का संतोष क्या हो सकता है दोस्तों! और हमारे गहलोत जी जब भी कोई कार्यक्रम बनाते हैं और कभी मुझे आग्रह करते हैं, तो मेरे और कार्यक्रम को आगे-पीछे करके भी दिव्यांगजनों के कार्यक्रम में मैं जाना पसंद करता हूँ। मैं इसे प्राथमिकता देता हूँ। क्योंकि एक समाज के अंदर ये चेतना जगना बहुत आवश्यक है।

हमारे यहां रेल के डिब्बे में जाना है, सामान्य मानवी के लिए तो सब कुछ मुश्किल लगता नहीं है, बस मैं चढ़ना है सामान्य मानवी को लगता नहीं है। हमने आ करके एक सुलभ योजना का बड़ा अभियान चलाया है। देशभर में सरकारी हजारों की ऐसी जगह ढूँढकर निकाली है, जहां सामान्य ऐसे नागरिकों को जाना है तो वहां दिव्यांगजनों को भी जाना है। तो उनके लिए रेलवे प्लेटफॉर्म अलग प्रकार से हो, ट्रेन के अंदर चढ़ने के लिए उनके लिए अलग व्यवस्था विकसित की जाए, सरकारी दफ्तर हो तो tricycle लेकर आता है तो सीधी सीधी cycle अंदर चली जाए। टॉयलेट हो, आप कल्पना कर सकते हैं, अगर दिव्यांगजन को उसके अनुकूल टॉयलेट नहीं मिलेगा तो उसका हाल क्या होता होगा? कितनी तकलीफ होती होगी? और जब तक हम इन चीजों को देखते नहीं, समझते नहीं, सोचते नहीं हैं, तो हमें अंदाज नहीं आता है कि चलो यार चल जाएगा वो तो adjust कर लेगा। जी नहीं भाई, हम लोगों को जागरूक हो करके, अरे अपना मकान बनाएंगे, society बनाएंगे, flat बनाएंगे, तो भी ये सोचकर बनाएंगे कि कोई भी दिव्यांगजन मेहमान बन करके आएगा तो भी उसको लिफ्ट पर जाना है तो सरलता से जा पाएगा, टॉयलेट जाना है तो उसके लिए अलग से व्यवस्था होगी। समाज का एक character develop होना चाहिए। और हम लोगों ने निरंतर एक प्रयास किया है और उसका परिणाम आज हजारों ऐसे स्थान पर ये सुलभ व्यवस्थाएं निर्माण होने लगी हैं, उसका काम होने लगा है, model पक्के हो गए। अब जितनी नई इमारतें बनती हैं उन इमारतों में दिव्यांगजनों के लिए व्यवस्था, ये भारत सरकार में compulsory कर दिया गया है।

मैं गुजरात सरकार का भी आभारी हूँ, उन्होंने इस चीज को adopt किया है। उसको आगे बढ़ाने की दिशा में उन्होंने स्वीकृति दी है। मेरा कहने का तात्पर्य ये है कि बड़े कार्यक्रम से एक तो सरकार की जिम्मेवारी fix होती है कि जाओ भाई इलाके में ढूँढो, कौन दिव्यांगजन जो मदद के पात्र हैं और सरकार के दरवाजे तक पहुंच नहीं पाते, सरकार उनके दरवाजे पर

जाए, उनको खोजे और इस camp लगा करके उनको मदद की जाए, एक हमने ये दिशा पकड़ी है। और उसी के कारण आज 18 हजार से ज्यादा दिव्यांगजन आज यहां मौजूद हैं। और उसके कारण समाजवादी जो संस्थाएं काम करती हैं, उन संस्थाओं को भी इसके कारण प्रोत्साहन मिलता है, उनको ताकत मिलती है। भारत सरकार की innovation institutes हैं जो काफी काम कर रही हैं।

अभी मैं, उन बालकों का मैंने demo देखा, Parliament में मैंने मेरे office में बुलाया था सबको। हाथ नहीं था, उनको artificial हाथ दिया गया, लेकिन मैं देख रहा था कि मेरे से भी सुंदर अक्षरों में वो लिख पाता था, प्लास्टिक का हाथ था उसका, लेकिन उसमें technology की व्यवस्था थी, मेरे से भी सुंदर अक्षरों से लिख रहा था। वो खुद पानी भर सकता था, पानी पी सकता था, चाय का कप पी करके चाय पी सकता था। अभी एक सज्जन मेरे पास आये, उन्होंने बताया साहब मैं दौड़ सकता हूं, मेरे पैर को एक नई ताकत दी है आपने, मैं दौड़ सकता हूं। मुझे बता रहे थे, बोले आप कहें तो मैं यहां दौड़ूं। मैंने कहा नहीं, यहां दौड़ने की जरूरत नहीं है।

कहने का तात्पर्य कितना बड़ा विश्वास नया पैदा हो रहा है। और इसके लिए innovation का भी काम हो रहा है। सरकार की अपनी institutions काम कर रही हैं। कई नौजवान हैं वो आगे आ रहे हैं। और मैं देश के startup की दुनिया में काम करने वाले नौजवानों से आग्रह करता हूं कि आप थोड़ा सा study कीजिए। दुनिया में दिव्यांगजनों के लिए किस-किस प्रकार के नए आविष्कार हुए हैं, कौन सी नई चीजें develop हुई हैं, कौन से नए innovation हुए हैं, दिव्यांगजन सरलता से अपनी जिंदगी का गुजारा उस एक extra साधन से कर सकता है, वो कौन सा है? अगर आप study करेंगे मेरे नौजवान तो आपका भी मन करेगा कि आप भी innovation करें, आप इंजिनियर हैं तो आप भी सोचेंगे, आपके पास कौशल्य है आप भी सोचेंगे, और आप startup के द्वारा, innovation के द्वारा उन नई चीजों को product कर सकते हैं, जिसका हिन्दुस्तान में आज बहुत बड़ा मार्केट है। करोड़ों की तादाद में हमारे दिव्यांगजन हैं, उनके लिए अलग-अलग प्रकार के साधनों के संशोधनों की जरूरत है। रोजगार के लिए ऐसे नए अवसर हैं।

मैं startup की दुनिया के नौजवानों को निमंत्रण देता हूं कि आप दिव्यांगजनों के लिए इस प्रकार की चीजें बनाने के लिए प्रयोग ले करके आइए, सरकार जितनी मदद कर सकती है, उतनी मदद करने का भरपूर प्रयास करेगी, ताकि दिव्यांगजनों की जिंदगी में बदल लाने में ये नए आविष्कार काम आ सकें।

भाइयो, बहनों! हमने वो Insurance Scheme तो लाए हैं, एक महीने में एक रुपया। आज एक रुपये में एक कप चाय भी नहीं मिलती है। एक महीने में सिर्फ एक रुपया दे करके गरीब से गरीब मेरे दिव्यांग भाई भी Insurance निकाल सकता है। और परिवार में कोई आपत्ति आ गई, व्यक्ति के जीवन में कोई आपत्ति आ गई तो एक महीने का एक रुपया, 12 महीने का 12 रुपये में वो Insurance होता है, दो लाख रुपया उस परिवार को तुरंत मिलते हैं। उसके संकट के दिन कुछ पल के लिए निकल जाते हैं। उसी प्रकार से एक दिन का एक रुपया ऐसी भी Insurance Scheme निकाली है। 30 दिन के 30 रुपये, साल भर के 360 रुपये, और उसके तहत भी उसको बहुत बड़ी मात्रा में राशि, कोई संकट आया तो मिल सकती है। अब तक 13 करोड़ परिवार; भारत में कुल परिवार 25 करोड़ हैं। कुल परिवार 25 करोड़ हैं, 13 करोड़ परिवार इस योजना के साथ जुड़ चुके हैं। मैं सभी दिव्यांगजनों के परिवारों से आग्रह करता हूं, इस योजना का लाभ सामान्य नागरिक के लिए तो है ही है, लेकिन मेरे दिव्यांग परिवारों को सबसे ज्यादा फायदा उठाएं। जिस परिवार में एक आदमी दिव्यांग है, आप इस योजना का लाभ उठाएं। आपके बालक के भविष्य के लिए ये सरकार प्रतिबद्ध है, आप आगे आइए। साल भर के 12 रुपये निमित्त हैं, स्टेशनरी का भी खर्चा नहीं है लेकिन एक प्रक्रिया के लिए है।

भाइयो, बहनों! ऐसी अनेक योजनाएं भारत सरकार ने गरीबों के लिए हमारा सपना है। 2022, भारत की आजादी के 75 साल होंगे। 70 साल बीत गए। करोड़ों लोग ऐसे हैं जिनके पास रहने का अपना घर नहीं है। भाइयो, बहनों, 2022 तक हिन्दुस्तान के हर उस परिवार को अपना मकान हो, ये सपना पूरा करने के लिए हम आगे बढ़ रहे हैं। हर परिवार को अपना छत हो, रहने के लिए घर हो, और घर भी जिसके अंदर शौचालय हो, बिजली हो, पानी का नलका हो, नजदीक में बच्चों के लिए स्कूल हो, बुजुर्गों के लिए नजदीक में दवाई की व्यवस्था हो। 2022 तक, काम बहुत बड़ा है मैं जानता हूं, जो काम 70 साल में करने में दिक्कत आ गई, उसको पांच साल में करना कितना कठिन होगा इसका मुझे पूरा अंदाज है। लेकिन भाइयो, बहनों, अगर 30 साल में 55 camp लगते हों, और तीन साल में 5500 कैम्प लग सकते हैं; तो जो 75 साल में नहीं हुआ, वो पांच साल में भी हो सकता है; करने का मादा चाहिए, इरादा चाहिए, देश के लिए जीने की तमन्ना चाहिए। परिणाम अपने-आप मिलता है दोस्तों। और उसी भाव से इस काम को करने का हमारा प्रयास है।

गरीब परिवार को किस प्रकार से लाभ मिले। मध्यम वर्ग परिवार बहुत कुछ अपने बलबूते पर करता है। लेकिन उसको जितना अवसर मिलना चाहिए, गरीबी के कारण वहां की तरफ divert करनी पड़ती है। अगर मेरे देश का गरीब बाहर आया तो मेरा देश का मध्यम वर्ग हिन्दुस्तान को कहां से कहां पहुंचाने की ताकत लेके खड़ा हो जाएगा, जिसका शायद ही किसी

को अंदाज होगा भाइयों। दुनिया चकित है, जिस प्रकार से विश्व में आज भारत एक ताकत बन करके उभरा है। विकास की नई ऊंचाइयों को पार करने लगा है। और इसलिए मेरे प्यारे राजकोट के भाइयो, बहनों, आपने मुझे बहुत कुछ सिखाया है, बहुत कुछ दिया है, मेरी जिंदगी का रास्ता तय करने का काम इस राजकोट के लोगों ने किया है। ये भाव जीवनभर मन में रखते हुए आज इस धरती को नमन करने के लिए आने का मौका मिला, आप सबके आशीर्वाद लेने का मौका मिला, मेरे दिव्यांगजनों के आशीर्वाद लेने का मौका मिला, इससे मेरा बड़ा कोई सौभाग्य नहीं हो सकता है।

मैं फिर एक बार श्रीमान गहलोत जी, उनका department, वो सचमुच में हिन्दुस्तान में कभी किसी department की इतनी सक्रियता भूतकाल में इस department की किसी ने देखी नहीं। वो सक्रियता देने का काम श्रीमान गहलोत जी ने करके दिखाया है और वो आज आपके सामने हैं कि 18 हजार से ज्यादा मेरे दिव्यांगजनों को जो भी उनकी आवश्यकता है, उसकी पूर्ति करने का एक प्रयास आज हो रहा है।

मैं फिर एक बार इस धरती को नमन करता हूँ। यहां के लोगों को नमन करता हूँ। आप सबका बहुत-बहुत धन्यवाद।

अमित कुमार/निर्मल शर्मा

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

01-जुलाई-2017 22:15 IST

दिल्ली जुलाई 1, 2017 को आईजीआई स्टेडियम में चार्टर्ड एकाउंटेंट दिवस पर प्रधानमंत्री के भाषण का मूल पाठ

नमस्ते!

श्रीमान निलेश विक्रमसे, अध्यक्ष Institute of Chartered Accountant of India (ICAI) के सभी पदाधिकारी, वित्तमंत्री श्री अरुण जेटली जी, केन्द्र सरकार में मंत्री परिषद के मेरे सभी साथी बंधु यहां और देश भर में करीब करीब 200 स्थान पर उपस्थित Chartered Accountant Field के सभी महानुभाव, राज्यों में उपस्थित सभी आदरणीय मुख्यमंत्री, आप सबको दिल्ली में बारिश के बीच भी ये उमंग और उत्साह के साथ आप सबको मेरी तरफ से नमस्कार।

आज के शुभ अवसर पर जिनका Felicitation किया गया है। आज इस सभागृह और देश में अलग अलग स्थान पर इतनी बड़ी तादाद में आप लोग उपस्थित हैं उद्योग और व्यापार से जुड़े हुए महानुभाव, टीवी और रेडियो पर देखने और सुनने वाले सभी देशवासी, नौजवान दोस्तों, भाइयों और बहनों,

आज Institute of Chartered Accountant of India (ICAI) का स्थापना दिवस है। मेरी तरफ से आप सबको बहुत-बहुत शुभकामनाएं। और ये शुभ संयोग है कि आज से ही आपका स्थापना दिवस और भारत के अर्थ जगत में एक नई राह का आरंभ दिवस। आज से ही भारत में GST यानी के Good and Simple Tax की शुरुआत भी हुई है। मेरे लिये ये खुशी का विषय है कि इस ऐतिहासिक अवसर पर मैं आप लोगों के बीच उपस्थित हूं, ये मेरे लिये सौभाग्य है।

नौजवानों, Chartered Accountant Field के साथ अनेक वर्षों से जुड़े हुए सभी महानुभाव, आपको देश की संसद ने एक पवित्र अधिकार दिया है। बही खातों में सही को सही और गलत को गलत कहने का, Certify करने का, Audit करने का, ये अधिकार सिर्फ और सिर्फ आपके पास है। जैसे डॉक्टर समाज के और व्यक्ति के शारीरिक स्वास्थ्य की चिंता करते हैं वैसे ही आप पर समाज के आर्थिक स्वास्थ्य की जिम्मेदारी होती है। और कोई डॉक्टर नहीं होगा ऐसा जो लोगों को ये कहे कि आप फलाना खाओ, ठीकना खाओ... ऐसा करो, वैसा करो क्योंकि आप बीमार हो जाओ और मेरी आमदनी बढ़ जाए। डॉक्टर को पता है कि कोई बीमार होगा तो मेरी रोजी रोटी कमाई बढ़ेगी, लेकिन फिर भी डॉक्टर कहता है कि आपको स्वस्थ रहने के लिये ये करना होगा। मेरे साथियों, समाज की आर्थिक व्यवस्थाएं स्वस्थ रहें उनमें गलत चीजों का प्रवेश न हो, ये आप देखते हैं। आप देश के अर्थतंत्र के बड़े स्तंभ हैं और इसलिये आप सबके बीच आना मेरे लिये स्वयं के लिये भी और एक शिक्षा और दीक्षा का भी बड़ा अवसर है।

दुनिया भर में भारत के Chartered Accountants को उनकी समझ और बेहतरीन Financial Skills के लिये जाना जाता है। आज मुझे अवसर मिला एक नये Chartered Accountancy Course Curriculum की शुरुआत करने का।

आपके Dynamic Course और Exam की Credibility की पहचान यही है। मुझे उम्मीद है कि नया Course इस Profession में आने वाले नए लोगों की Financial Skills को और मजबूत करेगा। और हमें अब हमारे Institutions और Human Recourse Development में जो Global BenchMark है Global Requirement हैं उसके अनुरूप हमारे

Human Resource develop करने की दिशा में हमें लगातार Dynamic व्यवस्थाओं को विकसित करना होगा। हमारे Courses में Accountant Field की Technological चीजों को किस प्रकार से लाएं, हमारे कुछ Chartered Neutral Firms, Technology में क्या Innovation करें, Accountant Filled Innovation. नए- नए Software वो भी अपने आप में एक बहुत बड़ा market आपका इंतजार कर रहा है।

Friends,

हमारे शास्त्रों में चार पुरुषार्थ बताए गए हैं। हमारे शास्त्रों में चार पुरुषार्थ की चर्चा की गई है। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष! आपने कभी सोचा है क्या जिस प्रकार से धर्म और मोक्ष की चर्चा करें तो ऋषि मुनि हमको दिखाते हैं। उसी की बराबरी में अर्थजगत का कारोबार भी आपके हाथ में है। उसकी बराबरी में है। और इसलिये अगर आपको मैं अर्थजगत का ऋषिमुनि कहूंगा, तो गलत नहीं होगा। जितना महत्व उन ऋषिमुनियों का रहा है जो मोक्ष का मार्ग दिखाते हैं। उतना ही महत्व मानव जीवन में अर्थव्यवस्था में आपके मार्गदर्शन का रहता है। अर्थ का सही आचरण क्या है कौन सा मार्ग सही है। ये दिशा दिखाने का दायित्व Chartered Accountant field के हर छोटे-मोटे व्यक्ति का है।

मेरे प्यारे साथियों जो प्यार मुझपे आप बरसा रहे हो, जिस प्रकार से आप मेरा हौसला बढ़ा रहे हो और ये आपका प्यार ही है, जो मुझे आज दिल खोलकर के कुछ बातें करने के लिये प्रेरित करता है। मेरी और आपकी देशभक्ति में कोई कमी नहीं है। जितना मैं देश आगे बढ़े चाहता हूँ उतना आप भी ये देश आगे बढ़े ये चाहते हैं। लेकिन कुछ सच्चाइयां हैं। जो कभी - कभी सोचने के लिये मजबूर करती हैं। आप लोगों ने जो पुराने अनुभवी लोग हैं उनसे सुना होगा कि अगर किसी घर में आग लग जाए, उनकी सम्पत्ति पूरी जल जाए, कहते हैं वो परिवार स्वपुरुषार्थ से बहुत जल्द फिर से खड़ा हो जाता है। कष्ट होता है कभी कभी लेकिन वो फिर बैठकर के अपना कारोबार शुरू कर लेता है। समय रहते संकट से बाहर आ जाता है। लेकिन हमारे बुजुर्ग लोग कहते हैं आग लगने के बाद घर को खड़ा करना है तो परिवार कर देता है, लेकिन परिवार का एक सदस्य अगर चोरी करने की आदत रखता है, तो वो परिवार कभी खड़ा नहीं हो सकता है। भाइयों बहनों पूरा परिवार चोरी नहीं करता है। परिवार का एकाध सदस्य परिवार के नियमों को बीच बीच में से तोड़कर निकाल देता है, परिवार समाप्त हो जाता है।

बही को सही करने वाले मेरे साथियों, इसी तरह कोई भी देश बड़े से बड़े संकटों से खुद को उबार सकता है। बाढ़ हो, भूकम्प हो, कोई भी संकट हो देश की जनता जनार्दन में सामर्थ्य होता है, शासन व्यवस्था, जनता मिलकर के संकट से बाहर निकल आते हैं, लेकिन उस देश में कुछ लोगों को चोरी करने की आदत लग जाए, तो जैसे परिवार उठ खड़ा नहीं हो पाता है, वो देश वो समाज भी उठ खड़ा नहीं हो पाता है। सारे सपने टूट जाते हैं विकास रुक जाता है। कुछ ही लोग होते हैं जो इस प्रगति को रोकने का काम करते रहते हैं। ऐसे लोगों के खिलाफ सरकार ने पिछले तीन वर्षों में कई कड़े कदम उठाए हैं। नए कानून बनाए गए, पुराने कानूनों को और सख्त किया गया है। कितने ही देशों के साथ समझौते किये हैं। पुराने जो समझौते थे उनमें बदलाव किया गया है। विदेश में काले धन के कार्रवाई के खिलाफ क्या असर हो रहा है इसकी गवाही Swiss बैंकों के ताजा आंकड़ों से मिल रही है।

Swiss Bank ने बताया है कि भारतीयों द्वारा जमा राशि अब तक के record में सबसे नीचे स्तर पर पहुंच गई है। तीस साल पहले, 1987 में Swiss बैंकों ने बताना शुरू किया था कि किस देश के लोग कितना पैसा वहां जमा करा रहे हैं। पिछले साल की जो रिपोर्ट अब आई है उसके मुताबिक भारतीयों का जो पैसा वहां जमा है, उसमें नया नहीं पुराना, उसमें 45% कमी आई है। 2014 से जिस दिन मुझे आपने काम दिया, उस दिन से, 2014 से ही गिरावट का जो दौर शुरू हुआ था। वो और तेज हो गया है और आपको जानकर के दुख भी होगा कि आश्चर्य भी होगा 2013 का Swiss बैंक का record कहता है 42% Increase था। 42 प्रतिशत वृद्धि थी। और भाइयों बहनों अब से दो वर्ष बाद जब स्वीट्जरलैंड से real-time data मिलने लगेगा तब विदेश में कालाधन जमा करने वालों को और मुसीबत होने वाली है। आप के पैसे इस लायक नहीं होंगे मुझे विश्वास है, लेकिन आपके प्रति मेरा इतना प्यार है मैं बता देता हूँ, उनको कान में बता दीजिए।

साथियों में देश में एक तरफ में स्वच्छता अभियान को भी चला रहा हूँ और दूसरी तरफ अर्थव्यवस्था में सफाई अभियान भी चला रहा हूँ। इस देश में 8 नवम्बर आपको सबसे ज्यादा याद है। Demonetization का फैसला भी कालेधन और भ्रष्टाचार के खिलाफ एक बहुत बड़ा कदम था। और मैंने सुना है... सच है गलत है आप जानें। ये मैंने सुना है कि 8 नवम्बर के बाद आप लोगों को बहुत काम करना पड़ा है। आप लोगों को इतना काम करना पड़ा है, इतना काम करना पड़ा है शायद पूरी करियर में करने की नौबत नहीं आई। मैंने ये भी सुना कि बहुत Chartered Account पंथ के लोग दीवाली की छुट्टियाँ मनाने गए थे। होटल बुक थे, पैसे दे दिये थे। लेकिन सब कुछ cancel करके वापस आ गए। कहते थे कि कुछ Chartered Accountant के Offices रात-रात भर चलते थे। अब मुझे मालूम नहीं है कि वापसी के बाद आपने क्या काम किया? सही किया गलत किया! देश के लिये किया कि client के लिये किया! लेकिन किया जरूर था।

साथियों कालेधन के खिलाफ इस सफाई अभियान के दौरान मैं पहली बार कुछ बातें आज आपके सामने share कर रहा हूँ। क्योंकि आप आप उस बात की ताकत बराबर समझते हैं। सरकार ने बैंकों में जो पैसे जमा हुए उसका Data Mining के लिये एक बहुत बड़ी व्यवस्था खड़ी की। लगातार Data Mining चल रहा है। कहां से रुपया आए, कहां जमा हुए, कहां गए, कैसे गए? 8 नवम्बर के बाद क्या क्या हुआ, बहुत कुछ चल रहा है। ये जो Data Mining चला है अभी हमने किसी को पकड़ के पूछताछ नहीं की है। सिर्फ आंकड़ों का अध्ययन किया है। मेरे प्यारे साथियों मैंने पहले ही कहा आपकी देश भक्ति मेरी देश भक्ति से जरा भी कम नहीं है। लेकिन आप देखिए तीन लाख से ज्यादा मैं आज पहली बार ये सारी बातें बता रहा हूँ। देश ये सुनकर के चौंक जाएगा। तीन लाख से ज्यादा कंपनियाँ...रजिस्टर्ड कंपनियाँ ऐसी सामने दिखाई दी हैं, जिनकी सारी लेनी-देनी शक के घेरे में है। सवाल के घेरे में उन पर सवालिया निशान लगा है। और ये जितना Mining हुआ है उसमें से काफी Mining बाकि है।

ये तीन लाख से कहां बढ़ेगा मैं कह नहीं सकता। और जब उनकी जांच शुरू की तो कुछ चीजें गंभीर रूप में पाई गई है। एक आंकड़ा मैं बता रहा हूँ, शायद हिंदुस्तान को इस सरकार की सोच क्या है? राजनेताओं में दम क्या है? उसकी एक पहचान हो जाएगी। एक तरफ पूरी सरकार, पूरा मीडिया, व्यापारी जगत सबका ध्यान तीस तारीख रात को 12 बजे क्या होगा उस पर था। एक जुलाई क्या होगा उस पर था। 48 घंटे पहले एक लाख कंपनियों को कलम के एक झटके से हटाकर कर दिया। Registrar of Companies से इनका नाम हटा दिया है। ये मामूली निर्णय नहीं है दोस्तो राजनीति के हिसाब किताब करने वाले ऐसे फैसले नहीं ले सकते हैं। राष्ट्र हित के लिए जीने वाले ही ऐसे फैसले कर सकते हैं। एक लाख कंपनियों को कलम के एक झटके से खत्म करने की ताकत देश भक्ति की प्रेरणा से आ सकती है। जिन्होंने गरीब को लूटा है उन्हें गरीब को लौटाना ही पड़ेगा।

इसके अलावा सरकार ने 37000 से ज्यादा, 37 हजार से ज्यादा Shell Companies की पहचान already कर ली है। जो कालेधन को छुपाना, हवाला करना, न जाने क्या करना इनके खिलाफ कठोर कार्रवाई के लिये कदम उठाए जा रहे हैं। कानून तोड़ने वाली कंपनियों के खिलाफ आने वाले दिनों में और कठोर कार्रवाई की जाएगी। और मैं जानता हूँ कालेधन के खिलाफ एक कार्रवाई का फर्जी कंपनियों को खत्म करने का किसी भी राजनीतिक दल को कितना नुकसान हो सकता है मुझे पूरा पता है। लेकिन किसी न किसी ने तो देश के लिये लेना है यह निर्णय।

Chartered Accountants के Field के मेरे साथियों, मैं आज आपके यहां बीच आया हूँ, स्थापना दिवस पर आया हूँ। मैं आपसे, हल्का सा सवाल पूछने का मन करता है मेरा। बही को सही करने का जिसके हाथ में ताकत है। Demonetization के बाद कोई तो होगा न जिसने इन कंपनियों की मदद की होगी। ये चोर-लुटेरे, ये कंपनियाँ किसी न किसी आर्थिक डॉक्टर के पास जरूर गई होंगी। मुझे पूरा पता है आप में से किसी के पास नहीं आई होंगी। लेकिन कहीं तो गई होगी, जिनके पास गई क्या उन्हें उनको पहचानने की जरूरत पड़ेगी। और जिन्होंने ऐसे लोगों की उंगली पकड़ी हो जिन्होंने ऐसे लोगों को सहारा दिया हो, जिन्होंने ऐसे लोगों को रास्ता दिखाया हो, क्या आप में ऐसे लोगों को भीतर बैठे हुए लोगों को पहचानने की जरूरत है कि नहीं? उनको जरा किनारे करने की जरूरत लगती है कि नहीं लगती है? साथियों मुझे बताया गया है कि हमारे देश में 2 लाख 72 हजार से ज्यादा Chartered Accountants हैं। आपके साथ 'Articled Assistants' भी और उनकी संख्या भी करीब करीब दो लाख के बराबर है। और अगर हम सारे Chartered Accountants, 'Articled

Assistants' आपके साफ सुथरे कर्मचारी इन सभी को जोड़ दें तो मेरा मोटा-मोटा अनुमान है कि ये संख्या आठ लाख से भी ज्यादा है। आपका परिवार इस field का परिवार 8 लाख से ज्यादा है। यानी के सिर्फ आपके profession में...अब मैं आपके सामने कुछ और तथ्य रखता हूँ क्योंकि आप आंकड़ों से बातें जल्दी समझ जाते हैं और समझा भी देते हैं।

अनुमान है कि हमारे देश में दो करोड़ से ज्यादा इंजीनियर और मैनेजमेंट के graduates हैं। 8 लाख से ज्यादा डॉक्टर हैं। यानी जिसे cream profession माना जाता है बहुत सम्मान से देखा जाता है। ऐसे लोगों की संख्या हमारे देश में करोड़ों में है। अगर देश के तमाम शहरों में बने बड़े बड़े ऑलिशान घरों को भी जोड़ा जाए तो उनकी संख्या भी करोड़ों में है। इतना ही नहीं एक आंकड़ा ये भी है कि last year भारत से विदेश में घूमने फिरने वाले जाने की संख्या 2 करोड़ 18 लाख लोग विदेश में सैर करने कगए थे। ये आंकड़े..अब आपको ताज्जुब होगा कि इसके बाद भी क्या कारण है कि हमारे देश में सिर्फ, सिर्फ, सिर्फ 32 लाख लोग ही ये कहते हैं कि उनकी Income, उनके Taxable Income में दस लाख से ज्यादा बताई जाती है। आप में से कोई इसमें विश्वास करेगा क्या। करेगा क्या। बही को सही करने वाले मैं आप लोगों से पूछ रहा हूँ। क्या इस देश में 32 लाख लोग हैं जो दस लाख से ज्यादा कमाई करते हैं।

मेरे प्यारे साथियों देश की कड़वी सच्चाई यही है। ये संख्या देश के सिर्फ 32 लाख लोग अपनी आमदनी दस लाख रुपये से ज्यादा बताते हैं। मैं समझता हूँ ये अपने आप में ज्यादातर देश जो है सैलरी का जिनकी फिक्स आय है जिनकी तनख्वाह निकलता है, सरकारी से तनख्वाह निकलता है। इसके सिवाए देश में क्या स्थिति है। और इसलिये भाइयों बहनों में और आंकड़ों में जाना नहीं चाहता हूँ। लेकिन इससे आपको पता चलेगा कि देश में करोड़ों गाड़ियां हर वर्ष खरीदी जाती हैं। और फिर भी देश के खजाने में अपनी जिम्मेवारियां न भरी जाएं इससे बड़ा चिंता का विषय होता है।

मैं और आंकड़ों की बजाय आगे अपनी बात आपसे कहना चाहता हूँ। अगर हमारे CA भाई कोई भी व्यक्ति या clients तभी Tax देता है, जब उसका आस पास का पूरा माहौल सकारात्मक हो, उसे ईमानदारी से Tax चुकाने के लिये प्रेरित करें। अगर वो ये देखेगा कि उसको सलाह देने वाला सच्चाई छुपाने के लिये कह रहा है, तो फिर गलत रास्ते पर चलने से वो कभी डरेगा नहीं। और इसलिये गलत सलाह देने वाले ऐसे लोगों को पहचानना और उनके खिलाफ कार्रवाई करना भी बहुत आवश्यक है। और इसके लिये आप लोगों को भी कठोर कदम उठाने होंगे।

CA एक ऐसी व्यवस्था है, जिसमें Human Resource Development (HR) का काम आप ही करते हैं Curriculum आप ही बनाते हैं, Exam आप ही Conduct करते हैं, Rules Regulations भी आप ही बनाते हैं और गुनाहगार को सजा भी आप ही की Institution देती है। अब सवाल ये उठता है कि भारत के लोकतंत्र के मंदिर ने, 125 करोड़ देशवासियों की संसद ने आपको इतने अधिकार दिये हैं फिर ऐसा क्या है कि पिछले 11 वर्ष में सिर्फ 25 Chartered Accountants के खिलाफ कार्रवाई हुई है। क्या सिर्फ 25 लोगों ने ही गड़बड़ी की होगी? और मैंने सुना है कि आप के यहां 1400 से ज्यादा मामले कई वर्षों से लटके पड़े हुए हैं। एक एक केस का फैसला आने में सालों लग जाते हैं। इतने High Qualify Professionals के लिये मेरे साथियों बताइए ये चिंता का विषय है कि नहीं है?

भाइयों बहनों जब देश की स्वतंत्रता के लिये आन्दोलन चल रहा था। आजादी का आंदोलन देश के अनेक नौजवानों ने फांसी के तख्त को अपने गले लगा लिया था। देश के कई महापुरुषों ने अपनी जवानी जेलों में खपा दी थी। देश की आजादी के लिये और उस समय देश के कई Professionals थे जो आगे बढ़ कर के इस आजादी के आंदोलन में आगे आए। उसकी कमान संभाली वो सारे Professionals देखे, उसमें ज्यादातर जो वकील थे, वकालत करते थे, बैरिस्टर थे, वो बहुत बड़ी मात्रा में आजादी के आंदोलन का नेतृत्व करते थे। वो कानून जानते थे। कानून के खिलाफ कानून के रहते कानून के खिलाफ लड़ना उसकी क्या सजा होगी उनको पूरा पता था। उसके बावजूद भी उस जमाने की पूरे वकील जिनकी वकालत अच्छी खासी चलती थी, अपनी वकालत छोड़कर के इस देश के लिये आगे आए। सिर्फ महात्मा गांधी, सरदार पटेल, डॉक्टर अंबेडकर, जवाहरलाल नेहरू ही नहीं, बल्कि डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद, पंडित मदन मोहन मालवीय, बाल गंगाधर तिलक, मोतीलाल नेहरू, सी राजगोपालाचारी, देशबंधु चितरंजन दास, सैफुद्दीन किचलू, भूलाभाई देसाई, लालालाजपत राय, तेज बहादुर सप्रू, आसफ अली, गोविंद वल्लभ पंत, कैलाश नाथ काटजू, अनगिनत नाम हैं जिन्होंने देश के लिए अपनी जिंदगी

खपा दी। जो वकालत के Profession में थे। देश भक्ति से प्रेरित होकर देश की आजादी अपनी जवानी खपा रहे थे। इनमें से कई leader थे जिन्होंने देश के संविधान के निर्माण में भी बहुत ही निर्णायक भूमिका निभाई थी। और भाइयों बहनों हम नहीं भूल सकते कि इन महापुरुषों के बिना देश का इतिहास अधूरा है।

साथियों आज हमारा देश आज हमारा देश इतिहास के एक और अहम पड़ाव पर है। 1947 में स्वतंत्रता के बाद देश की राजनीतिक एकीकरण के बाद, अब आज देश आर्थिक एकीकरण के दौर से एक नई यात्रा को प्रारंभ कर रहा है। 2017 का ये वर्ष जब One Nation, One Tax, One Market का सपना साकार हुआ है। इस ऐतिहासिक अवसर पर सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण भूमिका Chartered Accountants की है। आप मेरी भावना को समझिये दोस्तों, आजादी के आंदोलन में वकील जगत के लोगों ने वकालत करने वाले लोगों ने हिन्दुस्तान की स्वतंत्रता उनके अधिकार के लिये अपनी जान की बाजी लगा दी थी। आज उस जमाने की तरह आपको जान की बाजी लगाने को नहीं बोल रहा हूँ। आपको जेल के शिकंजे के पीछे जाने की आवश्यकता नहीं है। ये देश आपका है इस देश का आने वाला भविष्य आपके सतानों का भी है। और इसलिये इस नये दौर का नेतृत्व जैसे आजादी का नेतृत्व उन वकीलों ने किया था। आज आर्थिक विकास का नेतृत्व मेरी Chartered Accountant फौज ने करना होगा। और आप देखिये आप से बढ़कर आर्थिक क्षेत्र की ऊंचाई को पाने का रास्ता और कोई मजबूत नहीं बना सकता। कालेधन को खत्म करने के लिये भ्रष्टाचार को खत्म करने के लिये, अपने clients को, मैं फिर कहता हूँ अपने clients को ईमानदारी के रस्ते पर ले चलने के लिये, आपको आगे बढ़कर के कमान संभालनी होगी।

साथियों Chartered Accountants देश के Economic System के भरोसेमंद ambassador होते हैं। आप सरकार और Tax देने वाले नागरिकों और कंपनियों के बीच Interface का काम करते हैं। आपका Signature देश के प्रधानमंत्री की वो ताकत नहीं है, जो ताकत एक Chartered Accountant के Signature में होती है। आपका Signature सत्यता की भरोसे की गवाही देता है। कंपनी बड़ी हो या छोटी, आप जिस Account पर Signature कर देते हैं, उस पर सरकार भी भरोसा करती है और देश के लोग भी भरोसा करते हैं। और कभी आपने सोचा है कि जिसकी balance-sheet के साथ आपकी सही जुड़ गई है, इस account को उसकी कंपनी के कारोबार को balance-sheet को देख कर के फाइल वहां अटकती नहीं है, दोस्तों। उस Signature के बाद एक नई जिंदगी की शुरुआत होती है, दोस्तों। मैं आज उस नई जिंदगी की आपको दर्शन कराने आया हूँ। आपने उस कंपनी के बही पर Signature कर दिया balance-sheet पर signature कर दिया सरकारी अफसरों ने उसको मान लिया। कंपनी फूली फली, आगे बढ़ रही है आप भी फूले फले आगे बढ़ रहे हैं। बात यहां अटकती नहीं है, दोस्तों। जब आप उस कंपनी की बही पर सही करते हैं और जब उस कंपनी का ब्यौरा लोगों के सामने आता है। तब कोई बुजुर्ग Mutual Funds में अपनी पेंशन का पैसा लगा देता है। कोई गरीब विधवा महिला अपनी महीने भर की बचत को शेयर मार्केट में लगा देती है। जब किसी कंपनी की सही रिपोर्ट नहीं दी जाती, तथ्यों को छुपाया जाता है और बाद में जब भेद खुलता है, वास्तव में कंपनी नहीं डूबती, मेरे प्यारे दोस्तों वो गरीब विधवा की जिंदगी डूब जाती है, उस बुजुर्ग की जिंदगी तबाह हो जाती है। उसने तो अपनी जिंदगी भर की कमाई सिर्फ आपके एक sign पर भरोसा करके निवेश किया था। इसलिये मेरी आपसे अपील है। आप सभी से मेरा आग्रह है हिन्दुस्तान के सवा सौ करोड़ देशवासियों का आपके उस Signature पर भरोसा है। उस भरोसे को कभी टूटने मत दीजिये। उसको खरोंच भी मत आने दीजिए। अगर आप अपने मन मंदिर में ये महसूस करते हैं ये भरोसा टूटा है तो इसे फिर से बनाने के लिये आगे आइये पहल कीजिए 2017 जुलाई की पहली तारीख की आपकी स्थापना दिवस आपके लिये नया अवसर लेकर आई है मैं आपको निमंत्रण देता हूँ। ईमानदारी के उत्सव में शरीक होने के लिये मैं आपको निमंत्रण देने आया हूँ। अपने काम के महत्व को समझिये फिर उसी हिसाब से रास्ते तय करके देखिए। समाज आपको कितने गर्व से देखेगा। आपको खुद इसकी अनुभूति होगी।

साथियों “Tax Return” शब्द की अलग अलग परिभाषा है। लेकिन मुझे जो लगता है देश को जो Tax मिलता है वो देश के विकास के काम में आता है यही Tax Return है। ये महंगाई को रोकने में अहम भूमिका निभाता है। इससे किसी ऐसी महिला को जिन्हें गैस connection मिलता है। जिसने पूरी जिंदगी लकड़ी पर ही खाना बनाया है। इन्हीं पैसों से किसी ऐसे बुजुर्ग को पेंशन मिलती है। जिसके बच्चों ने उसका खर्च उठाने से इंकार कर दिया है। इन्हीं पैसों से नौजवान को स्वरोजगार मिलती है। जो दिन भर इसलिये मजदूरी करता है ताकि evening class में जा सके और अपनी पढ़ाई पूरी कर सके। इन्हीं पैसों से किसी गरीब बीमार को सस्ती दवा मिलती है जिसके पास इलाज के लिये पैसे नहीं हैं, वो बीमार होने पर छुट्टी नहीं ले सकता, वो बीमारी में भी दिनभर काम करता रहता है ताकि शाम को उसके बच्चों को भूखा सोना न पड़े।

Tax से मिला पैसा देश के बहादुर सैनिकों के काम आता है। जो सीमा पर अपनी जान की परवाह न करते हुए हम सब की रक्षा करते हैं। ये पैसे उन घरों में बिजली पहुंचाने के लिये काम आते हैं जहां स्वतंत्रता के 70 साल के बाद भी बिजली नहीं पहुंची उनके घरों में आज तक एक बल्ब भी नहीं जला है, वो अंधरे में डूबे हुए हैं। देश के गरीबों को उनके अधिकार दिलाने में मदद करना इससे बड़ी सेवा क्या हो सकती है। आपका एक Signature देश के गरीबों की कितनी मदद कर सकता है, इसकी शायद कभी आपने भी कल्पना नहीं की होगी। देश के सामान्य मानवी का सपना पूरा करने में आपका बहुत बड़ा दायित्व है, आप बहुत बड़ी भूमिका अदा कर सकते हैं। जब आप लोग ठान लेंगे और मुझे विश्वास है एक जुलाई 2017 ICAI जीवन यात्रा का एक turning-point बन कर रहेगा, ये मेरी आत्मा की आवाज है।

और मेरे साथियों एक बार आप ठान लेंगे, तो मैं विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि Tax चोरी करने की हिम्मत कोई नहीं कर पाएगा। इंसान अपराध तभी करता है जब उसे पता होता है कि कोई उसे बचाने वाला है। साथियों GST आपके सामने राष्ट्र निर्माण में सहयोग का एक माध्यम बनकर आया है। आप लोगों को, आप लोगों तक पहुँचिये लोगों से बात करिये, और मुझे जब मैं आ रहा था तो नीलेश मुझे बता रहे थे कि ताकि व्यापारियों को सहायता हो, उनकी हम समझने में मदद करने वाले हैं। मैं उनको बधाई देता हूँ मैं उनका आभार व्यक्त करता हूँ। आप लोगों के पास पहुँचिये उनको जागरूक करिए। ईमानदारी की मुख्य धारा में आने के लिये प्रेरित करिए। इसी तरह Chartered Accountant Field के लोगों के लिये एक नई Opportunity सरकार ने दी है। अभी से इसकी तैयारी कीजिये, खास करके मैं इस profession के नौजवानों को आमंत्रित करता हूँ, आइए। सरकार ने पिछले दिनों जो कानून पास किये हैं Insolvency और Bankruptcy Code इसको सफल बनाने में सही तरीके से लागू करने में भी Chartered Accountant Field के लोगों की बहुत बड़ी भूमिका है। इस code के तहत जब भी कोई कंपनी दीवालिया होगी तो इसका नियंत्रण Insolvency Practitioner के पास आने वाला है। Chartered Accountant Insolvency Practitioner बनकर एक इस नये क्षेत्र में अपने कैरियर की शुरुआत कर सकता है। ये एक नया रास्ता है जो सरकार ने आपके लिये खोला है। लेकिन आज के बाद आज जो भी रास्ता चुनें उसमें CA का मतलब होना चाहिए Charter और Accuracy, Compliance और Authenticity.

साथियों, 2022 में हमारा देश अपनी स्वतंत्रता के 75 वर्ष पूरा करेगा। इस वर्ष के लिये देश ने कुछ संकल्प किये हैं। नया भारत हम सबके परिश्रम की प्रतीक्षा कर रहा है। आप भी एक institution के नाते भी और एक Chartered Accountant व्यक्ति के नाते भी और देश के नागरिक के नाते भी। 2022 जब भारत की आजादी के 75 साल हों, हम इस देश को कैसा देखना चाहते हैं, ऐसा बनाने में हम अपना योगदान दें, अपनी भूमिका निभाएं और 2022 जब आजादी के 75 साल पूरे होंगे उसके ठीक दो साल के बाद Institute of Chartered Accountant of India को भी 75 वर्ष हो जाएंगे। आप अभी से 75 वर्ष का कार्यक्रम अभी से बनाइए। और इस Institution को उसके character को किस ऊँचाई पर ले जाना है उस ऐतिहासिक अवसर की प्रतीक्षा करते हुए अभी से अपना road-map बनाइए। और तय कीजिए आप देश को क्या देंगे। देश में आशा आकांक्षा लेकर के बैठे हुए कोटी कोटी नौजवानों के भविष्य के लिये क्या करेंगे। क्या आप देश को एक पारदर्शी और भ्रष्टाचार रहित व्यवस्था देने में मदद नहीं कर सकते क्या। क्या आप ये कहेंगे क्या हिसाब किताब ये लगाएंगे कि आपने इतने लोगों को Tax देने से बचाया? क्या ये हिसाब किताब होगा कि मैंने अब इतने लोगों को Tax देकर के ईमानदारी की जिन्दगी जीने के लिये प्रेरित किया? फैसला आपको करना है। आपके लिये आप अपने लिये कुछ लक्ष्य तय करिए कि कितने लोगों को ईमानदारी से Tax चुकाने की मुख्य धारा में लाएंगे? इस लक्ष्य का आंकड़ा क्या होगा, ये आपसे बेहतर कौन बताएगा? इस बारे में सोचिए कि कैसे आप अपने profession में technology का इस्तेमाल बढ़ाएंगे? Institute of Chartered Accountant की Filed में Forensic Science का कितना बड़ा रोल हो सकता है? उसको कैसे care किया जाए, उसको कैसे cater किया जाए? इनसे जुड़े भी लक्ष्य संभव हो, ये तय करना चाहिए।

साथियों एक और मेरे मन में अपेक्षा है आपसे और ये अपेक्षा इसलिये है कि मुझे पूरा विश्वास है कि ये ताकत आप में है। आप में वो सामर्थ्य है। क्यों आप पीछे हैं मुझे समझ नहीं आता है भई। साथियों दुनिया में चार बड़ी ऐसी बड़ी Audit संस्थाएं हैं जो बेहद प्रतिष्ठित हैं। और बड़ी बड़ी कंपनियां और संस्थाएं अपनी audit का काम देती हैं। इन कंपनियों को Big Four कहा जाता है। इन Big Four में हम कहीं नहीं हैं। आप में क्षमता भी है योग्यता की कोई कमी नहीं है। क्या मेरे सारे साथी विश्व के अंदर हिन्दुस्तान को अपना नाम रोशन करना है तो, क्या आप उसका लक्ष्य तय कर सकते हैं कि 2022 जब आजादी के 75 साल देश मनाता होगा। Big four को Big Eight में बदल देंगे। और जो Big Eight होंगे उसमें बिग चार big चार यही मेरे सामने जो लोग हैं उन्हीं में से होंगे। दोस्तों ये सपना हम लोगों का हो रहा है। Big Eight में

शामिल होने के लिये चार ऐसी हमारी कंपनियां, उनकी प्रतिष्ठा उनकी professionalism मुश्किल काम नहीं है। विश्व के अंदर Chartered Accountant की दुनिया में भी आपका डंका बजना चाहिए, मेरे साथियों।

आखिर मैं आपको आपके क्षेत्र के सबसे पुराने और सबसे सम्मानित अर्थशास्त्री, चाणक्य की एक सलाह याद दिलाना चाहता हूँ। चाणक्य ने कहा है:

कालाति क्रमात् काल एव फलम पिबति

यानी कर्तव्य का समय टल जाने के बाद, समय ही उसकी सफलता को खत्म कर देता है। और इसलिये समय को इस अवसर को हाथ से मत निकलने दीजिए।

अभी कुछ देर पहले अरुण जी आपसे बात कर रहे थे वो कुछ कह रहे थे। हिन्दुस्तान के जीवन में विश्व के अंदर ऐसा मौका पहले कभी नहीं आया। आपके जीवन में भी ऐसा अवसर पहले कभी नहीं आया। ये मौका हाथ से मत जाने दीजिए दोस्तों। मैं आपको राष्ट्र निर्माण की मुख्य धारा से जुड़ने के लिये निमंत्रित करने आया हूँ। आप मत भूलिये ये एक ऐसा profession है जिस प्रोफेशन में समाज की पूरी अर्थव्यवस्था को बचाए रखना टिकाए रखने का सामर्थ है।

मैं एक बार फिर Institute को उसकी faculty को और यहां उपस्थित सभी Chartered Accountant को ICAI के स्थापना दिवस पर बहुत बहुत शुभकामनाएं देता हूँ। और देश भर में इस कार्यक्रम को वीडियो के माध्यम से देश के कोने कोने में और दुनिया के भी कुछ देशों में हमारे Chartered Accountant जो देख रहे हैं, उनका भी मैं बहुत बहुत धन्यवाद करता हूँ।

आप सबका बहुत बहुत धन्यवाद करते हुए 1 जुलाई 2017 नई दिशा, नई गति, नया उमंग, आओ हम चल पड़ें और देश के सामान्य मानवी को ईमानदारी के उत्सव में जोड़ें। इसी एक कामना के साथ, मैं आपका बहुत बहुत आभारी हूँ।

बहुत बहुत धन्यवाद दोस्तों, बहुत बहुत धन्यवाद।

AKT/AK/HS

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

11-सितम्बर-2017 19:25 IST

पण्डित दीनदयाल उपाध्याय शताब्दी समारोह तथा स्वामी विवेकानंद के शिकागो में दिए गए भाषण की 125वीं वर्षगांठ के अवसर पर छात्रों के सम्मेलन में प्रधानमंत्री के संबोधन का मूल पाठ

मुझे बताया गया कि यहां पर जगह कम पड़ी है तो किसी और कमरे में भी शायद काफी बड़ी मात्रा में लोग बैठे हैं। उनका भी मैं आदरपूर्वक स्मरण करता हूं।

आज 11 सितंबर है। विश्व को 2001 से पहले यह पता ही नहीं था कि 9/11 का महत्व क्या है। दोष दुनिया का नहीं था, दोष हमारा था कि हमने ही उसे भुला दिया था, और अगर हम न भुलाते तो शायद 21वीं शताब्दी का भयानक 9/11 न होता। सवा सौ साल पहले एक 9/11 था, जिस दिन इस देश के एक नौजवान ने कल्पना कीजिए करीब-करीब आप ही की उम्र का, 5-7 साल आगे हो सकते हैं। करीब-करीब आप ही की उम्र का गेरूव वस्त्र धारी दुनिया जिस कपड़ों से भी परिचित नहीं थी। विश्व जिसे गुलाम भारत के प्रतिनिधि के रूप में देख रहा था। लेकिन उसके आत्मविश्वास में वो ताकत थी कि गुलामी की छाया उसके न चिंतन में थी, न व्यवहार में थी, न उसकी वाणी में थी। वो कौन सी विरासत को उसने अपने अंदर संजोया होगा कि गुलामी के हजार साल के बावजूद भी उसके भीतर वो ज्वाला धधक रही थी, वो विश्वास उमड़ रहा था और विश्व को देने का सामर्थ्य इस धरती में है, यहां के चिंतन में है, यहां की जीवन शैली में है। यह असामान्य घटना है।

हम खुद सोचें कि हमारे चारों तरफ जब negative चलता हो, हमारी सोच के विपरीत चलता हो, चारों तरफ आवाज़ उठी हो और फिर हमें अपनी बात बोलनी हो तो कितना डर लगता है। चार बार सोचते हैं, पता नहीं कोई गलत अर्थ तो नहीं निकाल देगा। ऐसा दबाव पैदा होता है इस महापुरुष की वो कौन सी ताकत थी कि इस दबाव को कभी उसने अनुभव नहीं किया। भीतर की ज्वाला, भीतर की उमंग, भीतर का आत्मविश्वास इस धरती की ताकत को भली भांति जानने वाला इंसान विश्व को सामर्थ्य देने, सही दिशा देने, समस्याओं के समाधान का रास्ता दिखाने का सफल प्रयास करता है। विश्व को पता तक नहीं था। कि Ladies and Gentlemen के सिवाय भी कुछ बात हो सकती है। और जिस समय Brothers and sisters of America यह दो शब्द निकले मिनटों तक तालियों की गूंज बज रही थी। उस दो शब्दों में भारत की वो ताकत का उसने परिचय करवा दिया था। वह एक 9/11 था। जिस व्यक्ति ने अपनी तपस्या से माँ भारती की पदयात्रा करने के बाद, जिसने माँ भारती को अपने में संजोया था। उत्तर से दक्षिण पूर्व से पश्चिम, हर भाषा को हर बोली को जिसने आत्मसात किया था। एक प्रकार से भारत मां की जादू तपस्या को जिसने अपने भीतर पाया था। ऐसा एक महापुरुष पल दो पल में पूरे विश्व को अपना बना लेता है। पूरे विश्व को अपने अंदर समाहित कर लेता है। हजारों साल की विकसित हुई भिन्न-भिन्न मानव संस्कृति को वो अपने में समेट करके विश्व को अपनत्व की पहचान देता है। विश्व को जीत लेता है। वो 9/11 था विश्व विजयी दिवस था मेरे लिए। विश्व विजयी दिवस था और 21वीं सदी के प्रारंभ का वो 9/11 जिसमें मानव के विनाश का मार्ग, संहार का मार्ग, उसी अमरीका के धरती पर एक 9/11 को प्रेम और अपनत्व का संदेश दिया जाता है, उसी अमरीका के धरती पर उस संदेश को भुला देने का परिणाम था कि मानव के संहार के रास्ते की एक विकृत रूप विश्व को हिला दिया था। उसी 9/11 को हमला हुआ और तब जाकर दुनिया को समझ आया कि भारत से निकली हुई आवाज 9/11 को किस रूप में इतिहास में जगह देती हैं और विनाश और विकृति के मार्ग पर चल पड़ा ये 9/11 विश्व के इतिहास में किस प्रकार अंकुरित रह जाता है और इसलिए आज जब 9/11 के दिन विवेकानंद जी को अलग रूप से समझने की आवश्यकता मुझे लगती है।

विवेकानंद जी के दो रूप, अगर आप बारीकी से देखोगे तो ध्यान में आएगा। विश्व में जहां गए वहां, जहां भी बात करने का मौका मिला वहां बड़े विश्वास के साथ, बड़े गौरव के साथ भारत का महिमामंडन, भारत की महान परंपराओं का महिमामंडन, भारत की महान परंपराओं का महिमामंडन, भारत की महान चिंतन का महिमामंडन उसको व्यक्त करने में वो कभी थकते नहीं थे। रुकते नहीं थे, कभी उलझन अनुभव नहीं करते थे। वो एक रूप था विवेकानंद का और दूसरा रूप वो था जब भारत के भीतर बात करते थे तो हमारी बुराइयों को खुलेआम कोसते थे। हमारे भीतर की दुर्बलताओं पर कठोर घात करते थे और वो जिस भाषा का प्रयोग करते थे उस भाषा का प्रयोग तो आज भी हम अगर करें तो शायद लोगों को आश्चर्य होगा कि ऐसे कैसे बोल रहे हैं। ये समाज के हर बुराइयों के खिलाफ आवाज उठाते थे। और समय के समाज की कल्पना कीजिए जब Ritual का महत्व ज्यादा था, पूजा पाठ, परंपरा, ये सहज समाज जीवन की प्रकृति थी। ऐसे समय 30

साल का एक नौजवान, ऐसे माहौल में खड़ा होकर कह दे कि पूजा-पाठ, पूजा अर्चन मंदिर में बैठे रहने से कोई भगवान, वगवान मिलने वाला नहीं है। जन सेवा यही प्रभु सेवा, जाओ जनता जनार्दन गरीबों की सेवा करो, तब जा करके प्रभु प्राप्त होगा... कितनी बड़ी ताकत।

जो इंसान विश्व के अंदर जा करके भारत का गुणगान करता था, लेकिन भारत में आता था तो भारत के अंदर जो बुराईयां थीं वो बुराईयां पर कठोर प्रहार करता था। वे संत परंपरा से थे लेकिन जीवन में वे कभी गुरु खोजने नहीं निकले थे। ये सीखने और समझने का विषय है। वे गुरु खोजने के लिए नहीं निकले थे। वे सत्य की तलाश में थे। महात्मा गांधी भी जीवन भर सत्य की तलाश से जुड़े हुए थे। वे सत्य की तलाश में थे। परिवार में, आर्थिक स्थिति कठिन थी। राम कृष्ण देव मां काली के पास भेजते हैं। जा तूझ जो चाहिए मां काली से मांग और बाद में पूछा कुछ मांगा, बोले नहीं मांगा। कौन-सा मिजाज होगा, जो काली के सामने खड़े होकर भी मांगने के लिए तैयार नहीं है। भीतर वो कौन सा लौहत्व होगा, वह कौन सी ऊर्जा होगी जिसमें यह सामर्थ्य पैदा हुआ। इसलिए वर्तमान समाज में जो बुराईयां हैं। क्या हमारे समाज के बुराईयां के खिलाफ हम नहीं लड़ेंगे। हम स्वीकार कर लेंगे। अमरीका की धरती पर विवेकानंद जी Brothers and Sisters ऑफ अमरीका कहें। हम खुद नाच उठे। लेकिन मेरे देश में ही मैं नौजवानों को विशेष रूप से कहना चाहूंगा क्या हम नारी का सम्मान करते हैं क्या। हम लड़कियों के प्रति आदर भाव से देखते हैं क्या जो देखते हैं उनको मैं 100 बार नमन करता हूं। लेकिन जो उसके भीतर इंसान नहीं देख पाते हैं, मानव नहीं देख पाते। यह भी ईश्वर की एक कृति है, अपनी बराबरी से है। ये भाव अगर नहीं देखते हैं, तो फिर स्वामी विवेकानंद के वो शब्दशिष्ट Brothers and Sisters ऑफ अमेरिका हमें तालिया बजाने का हक है कि नहीं है। 50 बार हमें सोचना है।

हम कभी सोचे हैं विवेकानंद जी कहते थे जनसेवा प्रभु सेवा। अब देखिए एक इंसान 30 साल की उम्र में पूरे विश्व में ऐसा जय-जयकार करके आया है। उस गुलामी के कालखंड में दो व्यक्तित्व जिसने भारत में एक नई चेतना नई ऊर्जा प्रकट की थी। दो घटनाओं ने, एक जब रविंद्रनाथ टैगोर को नॉबेल प्राइज मिला और जब स्वामी विवेकानंद जी का 9/11 के भाषण के देश दुनिया में चर्चा होने लगी। भारत गुलामी के कालखंड में एक नई चेतना का एक भाव पूरे भारत में इन दो घटनाओं ने जगाया था। और दोनों बंगाल की संतान थे। कितना गर्व होता है जब मैं दुनिया में किसी को जाके कहता हूं कि मेरे देश के रविंद्रनाथ टैगोर श्रीलंका का राष्ट्रगीत भी उन्होंने बनाया, भारत का राष्ट्रगीत भी उन्होंने बनाया, बांग्लादेश का राष्ट्रगीत भी उन्होंने बनाया। क्या हम हमारी इस विरासत के प्रति गर्व करते हैं क्या और खोखला नहीं है। आज हिंदुस्तान में, दुनिया में हम एक युवा देश है। 800 मिलियन लोग इस देश में उस उम्र के हैं जो विवेकानंद जी ने शिकागो में भाषण दिया उससे भी कम उम्र के हैं। इस देश की 65 प्रतिशत जनसंख्या विश्व में डंका बजाने वाले विवेकानंद जी की उम्र से कम उम्र की 65 प्रतिशत जनसंख्या जिस देश की हो उस देश में विवेकानंद से बड़ी प्रेरणा क्या हो सकती है और इसलिए विवेकानंद जी ने काम कैसा किया, वो सिर्फ उपदेश देने वाले नहीं रहे। उन्होंने Ideas को Idealism में convert किया और Idealism और Ideas का combination करके Institutional फ्रेम वर्क बनाया। आज से करीब 120 साल पहले इस महापुरुष ने RamKrishna मिशन को जन्म दिया। विवेकानंद मिशन को जन्म नहीं दिया। RamKrishna को जन्म दिया। बात छोटी होती है, लेकिन अकलमंद को इशारा काफी होता है और उन्होंने RamKrishna मिशन का जिस भाव से उदय हुआ। आज 120 साल के बाद भी न Delusion आया है न Diversion आया है। एक ऐसी संस्था को कैसी मजबूत नींव बनाई होगी उन्होंने। फाउंडेशन कितना Strong होगा। Vision कितना क्लियर होगा। एक्शन प्लान कितना Strong होगा। भारत के विषय में हर चीज की कितनी गहराई से अनुभूति होगी तब जा करके एक संस्था 120 साल के बाद भी वो आंदोलन आज भी उसी भाव से चल रहा है।

मेरा सौभाग्य रहा है कि मुझे भी उस महान परंपरा में कुछ पल आचमन लेने का मुझे भी सौभाग्य मिला है। जब विवेकानंद जी के 9/11 की भाषण की शताब्दी थी तो मुझे उस दिन शिकागो में जाने का सौभाग्य मिला था। उस सभागार में जाने का सौभाग्य मिला था और उस शताब्दी समारोह के अवसर पर मुझे शरीक होने का सौभाग्य मिला था। मैं कल्पना कर सकता हूं कि वो कैसा विश्व भाव था। कैसा वो भाव पल था।

क्या कभी दुनिया में किसी ने सोचा है कि किसी लेक्चर के सवां सौ वर्ष मनायी जाए। कुछ पल की वो वाणी, कुछ पल के वो शब्द सवां सौ साल के बाद भी जिंदा हों, जागृत हों, और जागृति पैदा करने का सामर्थ्य रखते हों। ये अपने-आप में हम लोगों के लिए एक महान विरासत के रूप में मनाने का अवसर है।

मैं यहां आया इतनी पूरी ताकत से वंदे मातरम, वंदे मातरम, वंदे मातरम सुन रहा था। रोंगटे खड़े हो जाते हैं। हृदय के अंदर भारत भक्ति का एक भाव सहजरूप से जग जाता है। लेकिन मैं सभानुभव को नहीं पूछ रहा हूं मैं पूरे हिंदुस्तान को पूछ रहा हूं क्या हमें वंदेमातरम कहने का हक है क्या। मैं जानता हूं मेरी यह बात बहुत लोगों को चोट पहुंचाएगी। मैं जानता हूं 50 बार 50 बार सोच लीजिए क्या हमें, हमें वंदे मातरम कहने का हक है क्या। हम वो लोग पान खा करके उस भारत मां पर पिचकारी मार रहे हैं और फिर वंदेमातरम बोले। हम वो रोज सारा कूड़ा-कचरा भारत मां पर फेंके और फिर वंदेमातरम बोले। वंदेमातरम बोलने का इस देश में सबसे पहला किसी को हक है तो देशभर में सफाई का काम करने वाले

भारत मां के उन सच्चे संतानों को है जो सफाई करते हैं और इसलिए, और इसलिए हम यह जरूर सोचें कि ये हमारी भारत माता सुजलां सुफलाम् भारत माता। हम सफाई करें या नहीं करें गंदा करने का हक हमें नहीं है। गंगा के प्रति श्रद्धा हो, गंगा में डुबकी लगाने से पाप धुलते हैं। हर नौजवान के मन में रहता है कि मेरे मां-बाप को एक बार गंगा स्नान कराऊं लेकिन क्या उस गंगा को हम गंदा करने से हम अपने आप को रोक पाते हैं क्या। क्या आज विवेकानंद जी होते तो हमें इस बात पर डांटते कि नहीं डांटते। हमें कुछ कहते कि नहीं कहते और इसलिए कभी-कभी हम लोगों को लगता है कि हम स्वस्थ इसलिए क्योंकि डॉक्टरों की भरमार है, क्योंकि उत्तम से उत्तम डॉक्टर हैं। जी नहीं, हम इसलिए स्वस्थ नहीं हैं क्योंकि हमारे पास उत्तम से उत्तम डॉक्टर हैं।

हम स्वस्थ इसलिए हैं कि कोई मेरा कामदार सफाई कर रहा है। डॉक्टर से भी ज्यादा अगर उसके प्रति सम्मान रहे तब जाकर वंदे मातरम कहने का आनंद आता है। और इसलिए मुझे बराबर याद है एक बार मैंने बोल दिया पहले शौचालय फिर देवालय। बहुत लोगों ने मेरे बाल नोंच लिये थे। लेकिन आज मुझे खुशी है कि देश में ऐसी बेटियां हैं जो शौचालय नहीं, तो शादी नहीं करेंगी ऐसा तय कर लिया। हम लोग हजारों साल से टिके हैं। उसका कारण क्या है। हम समयानुकूल परिवर्तन के अनुसार लोग हैं। हम हमारे भीतर से ऐसे लोगों को जन्म देते हैं जो हमारी बुराईयों के खिलाफ लड़ाई लड़ने के लिए नेतृत्व देते हैं और वह ही हमारी ताकत है। और इसलिए स्वामी विवेकानंद जी का हम स्मरण करते हैं तब वो 9/11 शब्दों का भंडार नहीं था। वो एक तपस्वी की वाणी थी, एक तप वाणी थी, तब जा करके यह निकलता था जो दुनिया को अभिभूत कर देता था। वरना हिन्दुस्तान याद है सांप-सपेरों का देश, जादू-टोना वालों का देश एकादशी को क्या खाना और पूर्णिमा को क्या नहीं खाना, यही देश यही हमारी पहचान थी। विवेकानंद ने दुनिया के सामने कह दिया था हमारा हमारी परंपरा के नीचे उनकी परंपरा नहीं है। क्या खाना, क्या नहीं खाना यह मेरे देश की संस्कृति परंपरा नहीं है, वो तो हमारी व्यवस्थाओं का हिस्सा होगा, हमारी सांस्कृतिक व्यवस्था अलग है। आत्मवत् सर्व भूतेषु यह हमारी सोच है। अहम् ब्रह्मास्मि ऐसी निकली हुई बातें नहीं हैं। कृष्णन्तो विश्वं आर्यम् यह आर्य शब्द हम पूरे विश्व को सुसंस्कृत करेंगे, इस अर्थ में है किसी जाति परिवर्तन धर्म परिवर्तन के लिए नहीं है और इसलिए जिस महान विरासत के हम उस परंपरा से पले-बढ़े लोग हैं यह सब इस धरती की पैदावर है।

सदियों की तपस्या से निकली हुई चीजें.. इस देश के हर व्यक्ति ने इसके अंदर कुछ कुछ जोड़ा ही है। यही तो देश है भीख मांगने वाला भी तब तो ज्ञान से भरा हुआ होता है। जब कोई आता है तो कहता है देने वाला का भी भला न देने वाला का भी भला। और इसलिए स्वामी विवेकानंद जी की सफलता का मूल आधार यह था उनके भीतर आत्म सम्मान और आत्म गौरव का भाव था। और आत्म मतलब not a person जिस देश को वो represent कर रहे थे उसकी इस महान विरासत को आत्म गौरव, आत्म सम्मान के रूप में उन्होंने प्रस्तुत किया था। क्या हम कभी सोचते हैं कि हम क्या कहते हैं। किसी अच्छी जगह पर हम चले जाए, बढ़िया प्राकृतिक वातावरण हो, साफ-सुथरा हो, बहुत अच्छा लगता हो तो पहला शब्द क्या निकलता है मुंह से ...यह लगता नहीं है कि हिन्दुस्तान है.. कहते हैं कि नहीं कहते ऐसा। बताइये ऐसा होता है कि नहीं होता है। अगर भीतर आत्म-सम्मान, आत्म गौरव से पले-बढ़े होते, तो यह भाव नहीं आता, गर्व होता चलिए भाई कुछ भी हो मेरे देश में भी यह है, ऐसा है।

विवेकानंद जी, मैं सच बताता हूं दोस्तो आज के संदर्भ में विवेकानंद जी को देखें.. कुछ लोगों को लगता होगा जब मैं कहता हूं Make in India, Make in India तो बहुत लोग है जो कहते हैं कि इसका विरोध करने वाले भी लोग हैं। कुछ कहते हैं कि Make in India नहीं Made in India चाहिए। ऐसा भी कहते हैं बड़े-बड़े बुद्धिमान लोग तो भांति-भांति की चीज निकाल लेते हैं। लेकिन जिसको मालूम होगा कि विवेकानंद जी और जमशेद जी टाटा के बीच जो संवाद हुआ, अगर वो संवाद मालूम होगा। विवेक जी और जमशेद जी टाटा के बीच का जो पत्र व्यवहार है वो किसी ने देखा होगा तो पता चलेगा कि उस समय गुलाम हिन्दुस्तान था। तब भी विवेकानंद 30 साल का नौजवान जमशेद जी टाटा जैसे व्यक्ति को कह रहा है। कि भारत में उद्योग लगाओ न। Make in India बनाओ न। और स्वयं जमशेद जी टाटा ने लिखा है, स्वयं कहा कि विवेकानंद जी के वो शब्द, वो बातें मेरे लिए प्रेरणा रही। उसी के कारण मैं इस भारत के अंदर भारत के उद्योगों को बनाने के लिए गया।

आप हैरान होंगे जी हमारे देश में first agriculture revolution विवेकानंद जी के विचारों में निकलता है कि भारत में कृषि क्रांति कैसे करनी चाहिए और डॉक्टर सेन जो पहले agriculture revolution के मुखिया माने जाते हैं। उन्होंने यह institute बनाई थी उस institution का नाम विवेकानंद Agriculture Research Institution के नाम से रखा था। यानी हिन्दुस्तान में कृषि को आधुनिक बनाना चाहिए, वैज्ञानिक रिसर्च से बनाना चाहिए इस सोच की बातें विवेकानंद जी उस उम्र में करते थे।

आज जिसको ले करके के चर्चा है कि हमारा नौजवान University जाता है यह करता है। आज 9/11 पंडित दीनदयाल उपाध्याय की शताब्दी समारोह से भी जुड़ा है और आज 9/11 जिस महापुरुष ने महात्मा गांधी को जी करके दिखाया, ऐसे आचार्य बनोवा भावे की भी जन्म जयंती है और आज जब मैं इस बात को कहता हूँ तब दीनदयाल जी के विचारों को

जिन्होंने देखा होगा, सुना होगा, पढ़ा होगा। यही भावों को आधुनिक संदर्भ में प्रकटीकरण है, अन्त्योदय है, जन सेवा ही प्रभु सेवा है यह भी विवेकानंद जी कहते थे। आचार्य बिनोवा जी के बड़े निकट के साथी दादा धर्माधिकारी... गांधी जी जो सोचते थे, कहते थे उसको व्यक्त करने का काम जीवन के द्वारा बिनोवा जी ने किया और बिनोवा जी जो सोचते थे, उसको शब्दों में ढालने का काम दादा धर्माजी के चिंतन में दिखता है। दादा धर्माधिकारी जी ने एक किताब में लिखा है बड़ा मजेदार लिखा है। कोई नौजवान उनके पास आया नौकरी के लिए कोई परिचित के द्वारा आया था। वो चाहता था कि धर्माधिकारी जी कुछ सिफारिश करे, कुछ मदद करे तो कहीं काम मिल जाए। दादा धर्माधिकारी जी ने लिखा है उसको मैंने पूछा कि तुम्हें क्या आता है, तो उसने कहा कि मैं graduate हूं। उन्होंने दोबारा पूछा कि तुम्हें क्या आता है तो उसने दोबारा कहा कि मैं graduate हूं। वो समझ नहीं पाया दादा धर्माधिकारी कह रहे यह क्या पूछ रहे हैं। तीसरी बार पूछा कि भाई तुम्हें क्या आता है? नहीं बोले कि मैं graduate हूं। धर्माधिकारी ने पूछा कि तुम्हें Typing करना आता है क्या? तो बोले नहीं, खाना पकाना आता है? बोले नहीं, फर्नीचर बनाना आता है? बोले नहीं, चाय नाश्ता बनाना आता है? जी नहीं मुझे नहीं मैं तो graduate हूं। अब देखिए विवेकानंद जी ने क्या कहा था, विवेकानंद जी की हर बात हमारे दिमाग को बहुत बड़ा हिला देने वाली उनकी nature थी। और वो उसी भाषा में बात करते थे। और उन्होंने बड़ा मजेदार कहा- 'Education is not the amount of information that we put into your brain and runs riot there, undigested, all your life.' ऐसा ज्ञान का खजाना भर देते हैं कि undigested रहता है। If you have assimilated five ideas and made them your life and character, you have more education than any man who has got by heart a whole library... यानी पूरी library भरी पड़ी है सबके दिल दिमाग में लेकिन पांच उसूलों को ले कर जीता है कहने का मतलब है उन्होंने Knowledge और skill को अलग किया। आज पूरे विश्व के हाथ में Certificate है उसका महत्व है कि हाथ में हुनर है, उसका महत्व है। इस सरकार ने उसी विचार को आगे बढ़ाने की कोशिश की है- Skill Development.

हमारे देश में Skill Development नया विषय नहीं है लेकिन पहले डिपार्टमेंटों में बिखरा पड़ा था कोई उसका मालिक नहीं था। जिसकी मर्जी पड़े उस दिशा में चलता था। हमने आ करके इन सारे Skill Development को एक जगह पर लाया उसका अलग Ministry बनायी अलग Department बनाया और Focus way में Skill Development जो कि देश में ऐसे नौजवानों को तैयार करे जिसको कभी किसी पर निर्भर न रहना पड़े। मेरे देश का नौजवान Job Seeker नहीं Job Creator बनना चाहिए। मेरे देश का नौजवान मांगने वाला नहीं देने वाला बनना चाहिए और इसलिए मैं आज जब स्वामी विवेकानंद जी के विचारों को याद कर रहा हूँ तब वो Innovation के पश्चात् अनुसंधान के पश्चात् वो घिसी पीटी टूटी-फूटी चीजों का बहिष्कार करने के लिए आह्वान करते हैं। कितनी महान क्यों न हो कितनी अच्छी क्यों न लगती हो लेकिन छोड़ने के लिए वो आह्वान करते हैं।

समाज जीवन भी तभी प्रगति कर सकता है कि जब नित्य नूतन हो, नित्य नूतन प्राणवान हो तभी जाकर हम सफल हैं और इसलिए हमारे देश की युवा पीढ़ी उसमें वो साहस चाहिए, वो ज़ुबान चाहिए जिसमें Innovation कम हो। इरादा रहे कुछ लोगों को यही डर लगता है यार करूँ लेकिन फेल हो जाऊँ तो मैं करूँ तो फेल हो जाऊँ दुनिया में कोई इंसान देखा है आपने जो फेलियर हुए बिना success हुआ हो। कभी-कभी तो success का रास्ता ही failure बनाती हैं और इसलिए Failure से घबराना ये जिंदगी नहीं होती दोस्तो! जो किनारे पर खड़ा है, वो डूबता नहीं दोस्तों जो पानी में छलांग रहा है डूबता भी है और डूबते हुए तैरना भी सीख लेता है जी। किनारे पर खड़े रह करके लहरे गिनते हुए जिंदगी पूरी कर लेता है जी। जो लहरों को पार करने का सामर्थ्य आता है तालाब में, नदी में, समंदर में कूदने का लोहा ले कर के चलता है स्वामी विवेकानंद जी ऐसे युवाओं की अपेक्षा करते हैं, ऐसे नौजवानों की अपेक्षा करते हैं।

आज भारत सरकार अभियान चला रही है Start-up India, Stand-up India मुद्रा से बिना बैंक गारंटी के पैसा मिलता है। मैं चाहूंगा मेरे देश का नौजवान मेरे देश की समस्याओं का समाधान के लिए नए Innovation नए Product ले करके आए और लोगों के पास जाए हिन्दुस्तान बहुत बड़ा Market है। मेरे देश के नौजवानों के बुद्धि और सामर्थ्य का इंतजार कर रहा है। और विवेकानंद जी ने जो Knowledge और Skill को जो अलग किया है आज समय की मांग है उसी भाव से हम Skill का महात्म्य बढ़ाते चलें। रातों रात नहीं होता है- बढ़ाते चलें। आप देखिए परिणाम कुछ और होता है। Innovation हमने हमारे नीति आयोग के द्वारा अटल Innovation Mission App चला रखा है। उसके साथ अटल Tinkering Labs उसके देश के छोटे-छोटे बालक जो इस प्रकार के Innovation करते हैं उनको प्रोत्साहन देने का एक पूरा movement चल रहा है। Silent Movement है लेकिन चल रहा है। और बहुत प्रतिभावान बच्चे नयी नयी चीजें लेकर के आए। मैं राष्ट्रपति भवन में जब प्रणव दा राष्ट्रपति थे, तो देश भर से इस प्रकार के बच्चों को एक बार उन्होंने बुलाया था। 12-15 बच्चे आये थे। वो अपने अपने Innovation की चीजें लाए थे, तो प्रणव दा ने मुझे आग्रह किया की जरा इन बच्चों को मिलो मैं देखने गया। मैं हैरान था वो 12-15 बच्चे थे उसमें से आधे से ज्यादा वो चीजों को Innovate करके लाए थे और 8वीं, 9वीं, 10वीं कक्षा के बच्चे थे। कूड़े कचरे का Waste को बेस्ट में कैसे Create करना उसके Project को लेकर आए थे देखिए स्वच्छता अभियान का प्रभाव कैसा था। वो उन चीजों को लेकर के आए थे कि कूड़ों कचरों से क्या बन सकता है। कहने का मेरा तात्पर्य यह है कि भातर में कोई प्रतिभा की कमी नहीं है। और उस पर हमें सोचना चाहिए आज पूरा विश्व विदेश नीति पर ढेर सारी चर्चाएं होती हैं। ये खेमा वो खेमा, ये गुप वो गुप कोल्ड वार ये बढ़िया बढ़िया क्या क्या शब्द चुने हैं।

कभी विवेकानंद जी को किसी ने पढ़ा है क्या, उनकी विदेश नीति क्या थी। स्वामी विवेकानंद जी ने उस समय कहा था और आज 120 साल के बाद दुनिया के सामने नजर आ रहा है। उन्होंने कहा था One Asia, One Asia का concept दिया था और One Asia Concept के द्वारा उन्होंने कहा था कि विश्व जब संकटों से घिरा होगा तब उसको रास्ता दिखाने की ताकत अगर किसी में होगी तो One Asia में होगी एक सांस्कृतिक विरासत का धनी है- one Asia. आज दुनिया कह रही है कि 21वीं सदी Asia की है कोई कहता China की कोई कहता है भारत की लेकिन इसमें कोई मतभेद नहीं है कि सारी दुनिया कहती है कि 21वीं सदी Asia की सदी है।

125 साल पहले जिस महापुरुष ने ये दर्शन किया था One Asia की कल्पना की थी और विश्व के इस पूरे चित्र के अंदर One Asia क्या रोल प्ले कर सकता है समस्याओं का समाधान करने की मूलभूत ताकत इस One Asia में क्या पड़ी हुई है इसकी हजारों वर्ष की विरासत इसके पास क्या है ये दर्शन विवेकानंद जी के पास था। और इसलिए आधुनिक संदर्भ में हमें विवेकानंद जी को देखना चाहिए वे Entrepreneurship को बढ़ावा देने की बात करते हैं उनकी हर बातचीत में भारत सामर्थ्यवान, सशक्त बने उसके आधार क्या तो Agriculture Revolution की बात करते हैं तो दूसरी तरफ Innovation की बात करते थे तो तीसरी तरफ वे Entrepreneurship की बात करते थे। और समाज के अंदर जो दोष हैं उसके खिलाफ लड़ाई लड़ने की भी बात करते थे। छुआ-छूत के खिलाफ वो इतना बोलते थे, पागलपन कहते थे- ये छुआ-छूत, ऊँच-नीच के भाव को पागलपन कहते थे जिस महापुरुष ने इतना सारा दिया आज दीनदयाल जी की जन्म शताब्दी मना रहे हैं, तब वो भी अंत्योदय की बात करते थे।

महात्मा गांधी भी कहते थे कोई भी निर्णय करिए तो समाज के जो आखिरी छोर पर बैठा है उसका भला होगा की नहीं इतना देख लीजिए। आप का निर्णय सही होगा।

पिछले दिनों कुछ नौजवानों ने कार्यक्रम किया और वो कार्यक्रम था जो अटल जी के समय गोल्डन चतुष्कोण बना था उस पर ट्रेवेलिंग करने का, साइकिल ले करके गये और Relay Race किया। उन्होंने शायद 6000 किलोमीटर साइकिल पर Relay Race करते करते किया था। उनका बड़ा अच्छा मंत्र था, उन्होंने कहा था कि Follow the rule and India will Rule. हम 125 करोड़ देशवासी इतना करलें Follow the Rule फिर विवेकानंद जी का जो सपना था मेरा भारत विश्व गुरु बनेगा अपने आप India will rule मगर We must follow the rule । और इसलिए इन भावों को ले करके हम आज जब विवेकानंद जी की शताब्दी 125 सौ साल उनके भाषण के और पंडित दीनदयाल जी की शताब्दी और सौभाग्य से विनोबा जी का भी जन्म दिन और दूसरी तरफ वो भयानक 9/11 जिसने संहार किया विनाश किया दुनिया को आतंकवाद में ड्रॉक दिया। मानव मानव का दुश्मन बन गया। ऐसे समय वसुधैव कुटुम्बकम् का विचार ले करके चले हुए हम लोग प्रकृति में भी परमात्मा देखने वाले हम लोग, पौधे में भी परमेश्वर देखने वाले हम लोग, नदी को भी माँ मानने वाले हम लोग पूरे ब्रह्माण्ड को परिवार मानने वाले लोग संकटों से घिरे हुए मानवता को, संकटों से घिरे हुए विश्व का हम तब कुछ दे पाएंगे जब हम अपनी बातों पर गर्व करें और समयानुकूल परिवर्तन करें। जो गलत है, समाज के लिए विनाशक हैं कितनी ही मान्यताएं अपने जमाने में सही होंगी अगर आज के जमाने में वो नहीं है उसके खिलाफ आवाज उठाकर उसको नष्ट करने के लिए निकला चाहिए।

लेकिन मेरे नौजवानों 2022 स्वामी विवेकानंद ने जिस Ramkrishna मिशन के नाम को शुरू किया था उसको 125 साल हो गये। 2022 भारत की आजादी के 75 साल हो गए। हम कोई संकल्प ले सकते हैं क्या। और संकल्प... मेरा जीवन व्रत बनना चाहिए। मैं यह करूंगा और आप देखिए जिंदगी जीने का अलग आनंद होगा। कभी-कभी हमारे देश में ये विवाद होता है कि जो College University वाले छात्र होते हैं। University के अध्यक्ष पद पर बैठे हुए सारे चुनाव जीत करके आए छात्र नेता हैं सारे.. छात्र राजनीति कहां से शुरू और कहां पहुँची वह चिंतन का विषय है लेकिन मैं कभी कभी देखता हूँ कि छात्र राजनीति करने वाले लोग जब चुनाव लड़ते हैं तो हम ये करेंगे, हम वो करेंगे... ये सब कहते हैं लेकिन अभी तक मैंने देखा नहीं है कि किसी चुनाव में उम्मीदवारों ने ये कहा हो कि हम कैम्पस साफ रखेंगे। हमारी जो University का कैम्पस है आप किसी भी University के चुनाव होने के दूसरे दिन जाइए क्या पड़ा होता है वहां? क्या होता है... फिर वन्दे मातरम्... क्या 21वीं सदी हिंदुस्तान की सदी बनानी है 2022 आजादी के 75 साल मना रहे हैं तो गांधी के सपनों का हिंदुस्तान, भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरु के सपनों का हिंदुस्तान, सुभाष बाबु के सपनों का हिंदुस्तान, विवेकानंद के सपनों का हिंदुस्तान क्या हम लोगों का दायित्व नहीं है। और इसलिए वो Management वालों को पढ़ाते हैं न Everybody is somebody, nobody हैं जो Management विद्यार्थी हैं वो पढ़ा होगा और Ultimately कुछ नहीं और इसलिए आवश्यक है ये मैं करूंगा ये मेरी जिम्मेदारी है। आप देखिए कि हिंदुस्तान को बदलते देर नहीं लगेगी। अगर 125 करोड़ हिंदुस्तानी एक कदम चलें तो हिंदुस्तान 125 करोड़ कदम आगे बढ़ जाएगा।

मैंने देखा है कि Colleges में किसी को अच्छा लगे किसी को बुरा लगे लोग किसी का विरोध भी करते हैं ऐसे लोग भी हैं थोड़े। Colleges में Day मनाते हैं अलग-अलग डे मनाते हैं आज रोज डे है कुछ लोगों के विचार इस विरोधी हैं इसमें यहां भी बैठे होंगे मैं इसका विरोधी नहीं हूँ। देखिए हमने रोबोट तैयार नहीं करने हैं, हमें Creativity चाहिए हमारे भीतर का

इंसान हमारी संवेदनाएं उसे प्रकट होने के लिए University Campus से बड़ा कोई जगह नहीं होता है। लेकिन क्या कभी हमें विचार आता है कि हरियाणा की College हो और तय करे कि आज तमिल-डे मनाएं। पंजाब की College हो और तय करे कि आज केरल-डे मनाएं। दो गीत उसके गाएंगे दो गीत उसके सुनेंगे उनके जैसा पहनावा पहन कर उस दिन College आएंगे। हाथ से चावल खाने की आदत डालेंगे। College में कोई मलयालम फिल्म देखेंगे, तमिल फिल्म देखेंगे वहां से कुछ नौजवानों को बुलाएंगे भाई तुम्हारे तमिलनाडू के अंदर गांव में कैसे खेल खेले जाते हैं आओ खेलते हैं। मुझे बताइए डे मनेगा की नहीं मनेगा। वो डे Productive होगा कि नहीं होगा। एक भारत श्रेष्ठ भारत बनेगा कि नहीं बनेगा। हमें विविधता आप लोग तो बहुत नारा भी बोलते हैं विविधता में एकता को लेकर के, लेकिन क्या इस विविधता का गौरव जीने का प्रयास हम करते हैं क्या? जब तक हिंदुस्तान में हमारे हर राज्य के प्रति गौरव का भाव पैदा नहीं करेंगे, हर भाषा के प्रति गौरव का भाव पैदा नहीं करेंगे...मुझे याद है अभी मुझे तमिल University के तमिलनाडु के नौजवान अभी ऊपर आए मैंने उन्हें वण्णक्कम कहा एकदम से खुश हो गए। एकदम छू गया उनको. ये अपने हैं। क्या हमारा मन नहीं करता है कि हम ऐसा माहौल बनाए कि हमारे University में ऐसे भी तो डे मनाएं क्या कभी नहीं लगता है कि हमारी University में Sikh गुरुओं का डे मना करके पंजाब के सिख गुरुओं ने क्या त्याग तपस्या बलिदान किए हैं देखें तो सही या सिर्फ भांगड़े से ही अटक जाएंगे क्या। पराठा और भांगड़ा. पंजाब उससे भी बहुत आगे हैं और इसलिए हम कुछ करें तो उसमें देखिए Creativity के बिना जिंदगी नहीं है। हम रॉबोट नहीं बन सकते हमारे भीतर का इंसान हर पल उजागर होते रहना चाहिए लेकिन वो करें जिससे देश की ताकत बढ़े देश का सामर्थ्य बढ़े और जो देश की आवश्यकता है उसकी पूर्ति हो। जब तक हम इन चीजों से अछूत रहेंगे हम धीरे-धीरे सिमट जाएंगे।

विवेकानंद जी कूपमंडूपता पर एक बड़ी कथा सुनाया करते थे। कूँ के मेंढक की बात करते थे। हम वैसे नहीं बन सकते। हम तो जय जगत वाले लोग हैं पूरे विश्व को अपने भीतर समाहित करना है और हमी एक कोचले में बंध हो जाएंगे तो ये कोई हम लोगों को सोच भी नहीं सकता। उपनिषद से उपग्रह तक की हमारी यात्रा हमने विश्व के हर विचार को अगर हमारे लिए अनुकूल है मानवता के लिए अनुकूल है तो स्वीकार करने में संकोच नहीं किया है। और हम डरे भी नहीं हैं कि कोई आएगा और हमारा कुचल जाएगा जी नहीं जो आएगा उसको हम पचा लेंगे ये सोच के हम लोग हैं। उसे अपना बना लेंगे उसकी जो अच्छाई है उसको ले करके आगे चलेंगे तभी तो भारत विश्व को कुछ देने का सामर्थ्यवान बनेगा। और इसलिए कोई एक काल खंड होगा जब गुलामी की जिंदगी जी रहे थे तब हम Protective Nature के साथ अपना गुजारा किया होगा। आज हमें अपने भीतर इतना सामर्थ्य होना चाहिए कि बाहर की चीजों से हम कोई परेशान हो जाएंगे सोचने की जरूरत नहीं है दोस्तो! और मैं तो आज दुनिया में जहां जाता हूँ मैं अनुभव कर रहा हूँ हिंदुस्तान के प्रति देखने का विश्व का नजरिया बदल चुका है। ये ताकत राजनीतिक शक्ति से नहीं है ये जन शक्ति से है। ये सवा सौ करोड़ देशवासियों की ताकत का कारण। लेकिन हमें हमारी बुराइयों को अब हम दरी के नीचे डालते चले जाएंगे तो सिवाए गंध और सड़ने के सिवा कुछ नहीं होने वाला है। हमें इन बुराइयों के खिलाफ लड़ना है। हमारे भीतर की बुराइयों के खिलाफ लड़ना है। भारत को आधुनिक बनाने को हम लोगों को सपना होना चाहिए। क्यों न मेरा देश आधुनिक न हो। क्यों मेरे देश का नौजवान दुनिया की बराबरी न करे। इसे सामर्थ्यवान क्यों न होना चाहिए। और इसलिए कभी मैं एक बार किसी महापुरुष को मिला था। बहुत समय पहले की बात है तो उन्होंने कहीं मेरा भाषण वाषण पढ़ा होगा तो उसकी चर्चा निकाली। तब मैं राजनीति में नहीं था। उन्होंने मुझे कहा कि देखो भाई आप को पता है कि हमारे हिंदुस्तान की एक कठिनाई क्या है? मैंने कहा क्या? बोले हम लोग हमारे यहां पांच हजार साल पहले ऐसा था दो हजार साल पहले ऐसा था.. बुद्ध के जमाने में ऐसा था राम के जमाने में ऐसा था। इसी से बाहर नहीं निकले। बोले दुनिया आज आप कहां पर हो उस आधार पर आप का मूल्यांकन करती है। हम भाग्यवान हैं कि हमारे पास एक महान विरासत है लेकिन हमारा दुर्भाग्य है कि हम उसी के गौरवगान से आगे बढ़ने को तैयार नहीं हैं। गौरवगान आगे बढ़ने की प्रेरणा के लिए होना चाहिए, गौरवगान पीछे हट करके रुकने के लिए नहीं होना चाहिए। हमें गौरवगान से आगे बढ़ना है और युवा, युवा एक परिस्थिति का नाम नहीं है दोस्तों, युवा एक मनः स्थिति का नाम है। जो बीते हुए कल में खोया हुआ रहता है, उसे युवा नहीं मान सकते। लेकिन जो बीती हुई बातों की जो श्रेष्ठ है उसको लेकर के आगे आने वाले कल के लिए सोचता है, समझता है, सुनता है वो युवा है। उस युवा भाव को भीतर समेटते हुए कैसे आगे बढ़ें उसका संकल्प लेकर के आप चलें इसी भावना के साथ आज दीनदयाल उपाध्याय जी को मैं आज नमन करता हूँ, स्वामी विवेकानंद जी को नमन करता हूँ, श्रीमान विनोबा भावे जी को नमन करता हूँ और आप सब मेरे देशवासी नौजवानों को बहुत-बहुत शुभकामनाएं देता हूँ।

धन्यवाद!

अतुल तिवारी/हिमांशु सिंह/बाल्मीकि महतो

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

06-सितम्बर-2017 22:55 IST

06 सितम्बर, 2017 को यांगून, म्यांमार में भारतीय समुदाय के बीच प्रधानमंत्री के भाषण का मूल पाठ

म्यांमार में रहने वाले मेरे भारतीय और भारतीय मूल के मेरे प्यारे भाइयो और बहनो, नमस्कार।

अभी-अभी आप सबने गणेश चतुर्थी का त्योहार मनाया, ईद मनाई; आप सभी को इन त्योहारों की मेरी तरफ से बहुत-बहुत शुभकामनाएँ। आशा करता हूँ ये त्योहार आपके लिए बहुत सुख, समृद्धि और शांति लाएँ।

I am very happy to be here with you today. मेरी बहुत इच्छा थी कि मैं इस historical और spiritual शहर में आऊँ, इच्छा थी कि देखूँ इस Yangon को जो अपनी विरासत के लिए दुनिया भर में मशहूर है। जिसका भारत के साथ सदियों पुराना नाता भी है। और यहाँ at this historical and spiritual gateway to the East आप लोगों से मिलूँ, आप सबसे, जिन्होंने भारत और म्यांमार, दोनों देशों को अपने दिलों में समेटा हुआ है। मैं यहाँ अपने सामने एक लघु, एक mini India के मैं दर्शन कर रहा हूँ। भारत के अलग-अलग क्षेत्रों से आए हुए आप लोग एक महान राष्ट्र के दिल में एक दूसरे महान राष्ट्र की धड़कन के रूप में जी रहे हैं। आप लोगों से मिलकर मुझे और भी खुशी हो रही है, क्योंकि आप के रूप में मैं एक ही जगह उन परम्पराओं और सांस्कृतिक विरासत को देख रहा हूँ, जिन्हें गंगा, गोदावरी, कृष्णा, कावेरी, ब्रह्मपुत्र और इरावती जैसी उदार माताओं ने अपने आंचल में पाला है।

You represent thousands of years of the shared culture and civilization, geography and history, aspirations and achievements of the great sons and daughters of India and Myanmar.

हजारों वर्षों से भारत और म्यांमार की सिर्फ सीमाएं ही नहीं, बल्कि भावनाएं भी एक-दूसरे से जुड़ी हुई हैं। भारत में म्यांमार को ब्रह्मदेश या भगवान ब्रह्मा की धरती भी कहा जाता है। साथियो, ये वो पवित्र धरती है जिसने बुद्ध को सहेजा है, उनकी शिक्षाओं को संवारा है। यहां के बौद्ध ग्रंथों और भिक्षुओं ने हिन्दुस्तान के कोने-कोने में, भारत के सभी राज्यों के साथ सैकड़ों साल से भी ज्यादा एक अटूट रिश्ते को पाला-पोसा है, जिसमें न केवल धर्म, बल्कि पाली भाषा, साहित्य और शिक्षा भी शामिल रहे हैं। भारत को और विश्व को म्यांमार की पुण्य भूमि में स्वर्गीय गोयनका जी के माध्यम से विपासना का उपहार दिया है। और मुझे खुशी है कि उनके सुपुत्र आज हमारे बीच हैं।

म्यांमार में भी आज भी, रामायण को यामा के नाम से पेश किया जाता है, विद्या की देवी सरस्वती को आप लोग थरूथरी के नाम पर से पूजते हैं और शिव को परविजवा, विष्णु को विथानो कहते हैं।

भारत के स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास बिना म्यांमार को नमन किए बिना पूरा कभी नहीं हो सकता है। ये वो पवित्र धरती है, जहां से सुभाषचंद्र बोस ने गरज करके कहा था, 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा।' उनका ये नारा सुनकर भारत को अपनी जान से भी ज्यादा प्यार करने वाले हजारों, लाखों नौजवान और युवतियां अपनी जान की परवाह किए बिना, भारत में और भारत के बाहर आजाद हिन्द फौज को सहयोग देने के लिए चल दिए थे। और मुझे भी आज उस आजाद हिन्द फौज के कुछ उस समय के जिनकी जवानी लगाई थी, अब तो काफी बुजुर्ग हुए; उनके दर्शन का, उनके आशीर्वाद का मुझे आज यहां पर सौभाग्य मिला है। जब नेताजी ने यहां आजाद हिन्द सरकार का एलान किया, तो भारत में अंग्रेजी शासन की जड़ें हिल गई थीं। ये वो पवित्र धरती है जहां की Manle Jail में 6 साल कैद रहते हुए बाल गंगाधर तिलक, लोकमान्य तिलक जी ने गीता रहस्य की रचना की थी। ये वो पवित्र धरती है, जहां पर महात्मा गांधी, लाला लाजपत राय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर जैसे महा-मानवों ने कई बार इनके चरण इस धरती पर पड़े थे।

जब विदेशी ताकतों से भारत को स्वतंत्र कराने के लिए देश के वीर सपूतों को अपना घर छोड़ना पड़ता था तो म्यांमार ही उनका दूसरा घर बन जाता था। 1857 के पहले स्वातंत्र्य संग्राम के बाद बादशाह बहादुरशाह जफर को दो गज जमीन भी इसी धरती पर मिली थी।

मैं जब भी किसी देश में जाता हूँ तो भारतीय समुदाय से मिलकर उनके आशीर्वाद पाने का मुझे अवसर मिलता है। पिछले दिनों जब मैं श्रीलंका यात्रा के दौरान जाफना गया। ऐसे पहली बार हुआ कि कोई भारतीय प्रधानमंत्री जाफना गया। वहां मैं

तमिल मूल के लोगों से मिला। उनके लिए भारत की सहायता से बनाए घर उन्हें सौंपने का सौभाग्य भी मुझे मिला। इस साल मई में जब दोबारा बुद्ध पूर्णिमा के समय मुझे श्रीलंका जाने का अवसर मिला, इंटरनेशनल समारोह में भाग लेने के लिए मुझे निमंत्रण मिला था। तब मैं Central Sri Lanka के तमिल भाई-बहनों से भी मिला। वहां भारत की मदद से बने एक हॉस्पिटल का inauguration करने के बाद हजारों लोगों ने आकर मुझे इतना प्यार दिया, कि मुझे वो दिन कभी भी नहीं भूल सकता। मेरे तमिल भाइयों ने श्रीलंका की धरती पर इतना प्यार दिया। मैं साउथ अरेबिया में गया, Construction Works हों, या कीनिया में किसान और व्यापारी हों, या सिलिकोन वैली में सियोद हों, विदेशों में रह रहे भारतीयों और Indian Origin के लोगों से मिलकर मुझे अपनापन महसूस होता है। एक प्रकार से ये हमारे सरकारी व्यवस्था में राजदूत होते हैं, आप सब हमारे राष्ट्रदूत हैं। और आप पर गर्व भी होता है कि जहां आप रहते हैं, आपने वहां development और harmony को तो बढ़ाया ही है, आपने अपने भारतीय संस्कार और मूल्य भी संजो करके रखे हैं; और ये बहुत बड़ी बात होती है।

United Nations में तीन साल पहले भारत के initiative पर अंतर्राष्ट्रीय योगा दिवस का प्रस्ताव record time में record sport के साथ पारित हुआ। पिछले तीन साल से दुनिया भर में 21 जून, International Yoga Day के तौर पर व्यापक रूप से मनाया जा रहा है और जब योगा की बात आती है, तो भारत का स्मरण स्वाभाविक होता है।

This global recognition of Yoga is your achievement because it was taken to all corners of the world by the people of India.

आपका भारत से bond सिर्फ भावात्मक नहीं है, आप भारत के विकास से भी ठोस रूप से जुड़े रहे हैं। अनेक प्रवासी भारतीय अब भारत के विकास में सहयोग दे रहे हैं। वे अपने या अपने पुरखों के states में development projects में सहयोग कर रहे हैं। युवा वर्ग तो और भी अधिक active है। न सिर्फ social media के माध्यम से regular engagement है, बल्कि भारत के बारे में जानने की उनकी इच्छा भी दिनों-दिन बढ़ती चली जा रही है, और अधिक strong होती जा रही है। गत वर्ष हमने प्रवासी youth के लिए Know India, भारत को जानो, quiz प्रतियोगिता का आयोजन किया था, quiz competition, और ये निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। और मुझे ये जान करके खुशी भी हुई और आश्चर्य भी हुआ, इसमें लगभग 100 देशों के प्रवासी भारतीय युवाओं ने हिस्सा लिया। यानी वो देश जहां पर second generation, third generation Indian बच्चे हैं, उन्होंने इसमें बढ़-चढ़कर भाग लिया।

When I meet you, I also feel that communication of our people living in foreign countries with government authorities in India is not a one-way traffic any more.

यहां आने से पहले मैंने आप लोगों से Narender Modi App के माध्यम से सुझाव मांगे थे। मुझे खुशी है, कि आप लोगों ने बहुत अच्छे सुझाव मुझे भेजे हैं और मैं इसके लिए आपका आभारी हूँ।

मेरी सरकार के पहले दिन से ही प्रवासी भारतीयों का welfare, ये हमारी priority में है। OCI और PIO Schemes को merge करना, Long term Visa वालों को Police Reporting से मुक्ति दिलाना, पासपोर्ट मिलने में आसानी होना, Indian Community Welfare Fund का उचित और efficient प्रयोग, प्रवासी भारतीय दिवस को re-energise करना, और विश्व के अलग-अलग हिस्सों में क्षेत्रीय प्रवासी भारतीय दिवस का आयोजन; ऐसे अनेक कदम हमने प्रवासी भारतीयों की आवश्यकताओं और feedback को ध्यान में रखते हुए उठाया है। और मैं नहीं समझता, कि किसी अन्य देश के विदेश मंत्री, विदेश में बसे या फंसे अपने देश के लोगों के दुःख-दर्द को लेकर इतने active हैं, जितनी कि भारत की हमारी विदेश मंत्री, सुषमा स्वराज हैं।

पूरी दुनिया में किसी भारतीय नागरिक को, या भारतीय मूल के प्रवासी को किसी भी प्रकार की समस्या होती है, तो बिना हिचक वे सुषमा जी से twitter पर संपर्क करते हैं, उनकी समस्या का समाधान हो जाता है। मेरा भी यही संदेश है आप सब लोगों को कि पासपोर्ट की समस्या हो या Visa की, या परदेश में legal assistance की, भारत की Embassy के दरवाजे भारतीय समाज के लिए 24x7 = 365 days, खुले हैं।

साथियों, भारत को आज दुनिया में सम्मान की निगाह से देखा जा रहा है तो उसका कारण, उसका कारण, उसका कारण आप हैं, आप भारत के सच्चे राष्ट्रदूत हैं, और उसका कारण ये है कि भारत बहुत तेजी से बदल रहा है, आगे बढ़ रहा है।

We are not merely reforming our country, we are transforming India. We are not merely changing India, we are building a new India. We celebrated 70 years of India's Independence, last month. After five years, in 2022 it will be seventy five years of India's Independence. We have pledged to build will a new India by the time Independent India turns 75 years.

हमने संकल्प किया है कि हम गरीबी-मुक्त, आतंकवाद-मुक्त, communalism free, जातिवाद-मुक्त, भ्रष्टाचार-मुक्त, clean India बनाएंगे और बना करके ही रहेंगे। मैं आपसे भी यही कहूंगा कि New India Website पर आप भी इस महा-मिशन में शामिल हों।

साथियों, मेरा मानना है कि 19वीं शताब्दी, 19वीं सदी की design पर 21वीं सदी का Infrastructure नहीं चल सकता है। और Infrastructure का मतलब सिर्फ सड़कें बनाना और rail network बिछाना ही नहीं होता। 21वीं सदी के Infrastructure का आधार हर वो चीज है, जो लोगों को आधुनिक technique से connect करे, उनकी जिंदगी में बदलाव लाए, Quality of life में change लाए। पूरी दुनिया में Solar Energy बढ़ाने का सबसे बड़ा कार्यक्रम आज भारत में चल रहा है।

आज भारत में रेलवे, सड़क, एयरपोर्ट पर जितना निवेश किया जा रहा है, उतना पहले कभी नहीं किया गया। देश की हर ग्राम पंचायत का optical fiber बिछाकर जोड़ने का काम बहुत तेज गति से आगे बढ़ रहा है। समंदर के किनारे बसे शहरों और ports को विकसित करने के लिए सागरमाला परियोजना तेज गति से आगे बढ़ रही है।

मैं समझता हूँ इन प्रयासों से देश में Infrastructure के साथ एक नया Infraculture भी विकसित होगा। और उसका एक और अभिन्न हिस्सा होगा agriculture. हमारी सरकार भारत के किसानों की आमदनी double करने के लक्ष्य पर काम कर रही है। इसके लिए बीज से बाजार तक हम अनेक कदम उठा रहे हैं, जैसे- Soil health card, neem coated यूरिया, micro irrigation, crop insurance, food processing parks, cold storage chain, ढेर सारी बातें मैं गिना सकता हूँ। Green और White Revolution की तरह हम सब Green Revolution से परिचित हैं, White Revolution से परिचित हैं। लेकिन अब दो और revolution का भी, पर भी हमारा बल है, एक है blue revolution और दूसरा है Sweet Revolution. जब मैं blue revolution कहता हूँ तब सिर्फ मछुआरों के लिए, भला हो ऐसा नहीं है, सामुद्रिक सामर्थ्य का भी एक नया युग आरंभ हुआ है। उसी प्रकार से Sweet Revolution, यानी मधुमक्खी पालन से भी शहद के द्वारा बहुत बड़ी आय की भी संभावनाओं को हम तराश रहे हैं, प्रयास कर रहे हैं।

साथ ही हम देश के हित में बड़े, बड़े और कड़े; देश के हित में हम बड़े और कड़े फैसले लेने से जरा भी घबराते नहीं हैं। और ये इसलिए कर पाते हैं, कि हमारे लिए दल से बड़ा देश है। हमारे लिए देश सब कुछ है। चाहे surgical strike हो या नोटबंदी, या GST, इस सरकार ने देश के हित में हर फैसला बिना किसी डर या संकोच से लिया है।

जब अर्थव्यवस्था और उसको काले धन और भ्रष्टाचार से मुक्ति दिलाने के लिए कड़ा फैसला लेने की आवश्यकता हुई तो 1000 और 500 रुपये के नोट बंद करने का फैसला भी हम ले पाए। मूठ्ठीभर कुछ लोगों के भ्रष्टाचार की कीमत अब देश के सवा सौ करोड़ लोग उठा रहे थे, ये हमें मंजूर नहीं है। बेईमानी के पैसे की ये ताकत थी, वो कहां से आ रहा है, किसके पास जा रहा है; ये कागज पर नजर नहीं आता था। काले धन का कोई address नहीं होता है।

साथियो नोटबंदी के बाद अब ऐसे लाखों लोगों के बारे में पता चला है जिनके account में करोड़ों, अरबों रुपये जमा हैं, लेकिन उन्होंने कभी income tax return नहीं भरा था। ऐसी लाखों कम्पनियों का भी पता चला है जो सिर्फ काले धन को इधर से उधर करने का ही काम कर रही थीं। सिर्फ तीन महीने में, मेरे प्यारे देशवासियों, आपको जान करके संतोष होगा, सिर्फ तीन महीने में दो लाख से ज्यादा कम्पनियों का registration रद्द किया जा चुका है, और उनके bank account भी freeze कर दिए गए हैं।

अभी दो महीने पहले ही देश में GST लागू किया गया है। मैं GST को simple भाषा में Good and Simple Tax कहता हूँ। GST से भी देश में ईमानदारी के साथ कारोबार करने का नया culture पैदा हो रहा है। जितने व्यापारी पिछले 6 साल में देश के tax system से नहीं जुड़े थे, उतने GST लागू होने के बाद सिर्फ दो महीने में जुड़ चुके हैं। जो काम 6 साल में होता है, वो सिर्फ 60 दिन में हो जाए; ये अपने-आप में काम कैसे हो रहा है, उसका उदाहरण है। पिछले तीन वर्षों में भारत में परिवर्तन के एक बड़े दौर की शुरुआत हुई, minimum government, maximum governance के सिद्धांत पर चलते हुए तमाम प्रक्रियाओं को आसान बनाया जा रहा है, simplify किया जा रहा है, कानून बदले जा रहे हैं, ease of doing business के लिए नियम सरल किए जा रहे हैं, देश के लोगों में ये भरोसा लौटा है कि भारत बदल सकता है, आगे बढ़ सकता है, दशकों पुरानी जिन बुराइयों ने भारत को जकड़ करके रखा है, उनसे अब भारत मुक्त हो सकता है, ये भरोसा देशवासियों में पैदा हुआ है।

साथियो, भारत अपने विकास का लाभ सिर्फ खुद तक नहीं रखता है। अगर हमारे पास जो है, उसे हम मिलकर, बांटकर खाएं, तो उसका आनंद कई गुना बढ़ जाता है। अफ्रीका हो या साउथ एशिया, या पैसिफिक आईलैंड, हमारी क्षमताएं, हमारा अनुभव, हम सभी developing देशों के साथ खुले मन से share करते थे। 2014 में मैंने South Asian satellite का

वायदा किया था। और इस साल हमने इसे launch कर दिया है। भारत का ही नहीं, सभी पड़ोसी देश जो इससे जुड़े हैं, उन्हें भी इस satellite का लाभ मिल रहा है।

Natural disaster या किसी अन्य प्रकार की crisis के समय भी हम first responders रहे हैं, न सिर्फ भारतीयों के लिए बल्कि हर किसी के लिए, जिसकी हम सहायता कर सकते हैं; हमने करने में पहल की है, प्रयास किया है। और जब हम ऐसी मदद करते हैं तो हम कभी पासपोर्ट का रंग नहीं पूछा करते। नेपाल में भूकंप आया, मालदीव में अचानक पानी की समस्या आ गई, फिजी के अंदर समुद्री तूफान आ गया, पश्चिम एशिया में हिंसा के इलाकों में हजारों भारतीयों, विदेशियों का evacuation की बात हो, म्यांमार में cyclone के बाद राहत और re-habilitation के लिए सहायता करने में हमने एक अच्छे पड़ोसी का कर्तव्य निभाया है।

साथियों, वसुदेव कुटुम्बकम्, यानी के whole world is a family, ये विचारधारा हमारी परम्परा है और हमें इसे पर गर्व है; ये हमारी रगों में है। आज सारी दुनिया भारत को third leader के रूप में पहचानना शुरू किया है। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का प्रस्ताव हो या International Solar Alliance की नई पहल हो, या BRICS की अगले 10 वर्षों की golden decade की विचारधारा; आज भारत की आवाज विश्व में सुनाई देती है, गूंज सुनाई देती है। एक नए प्रकार का भरोसा है, विश्व को; भारत के प्रति एक नई आशा जगी है।

भाइयों और बहनों, भारत उत्तर-पूर्व के राज्यों को South-East Asia को Gateway मानता है। और इस Gateway का दरवाजा म्यांमार की तरफ ही खुलता है। और इसलिए भारत इस Gateway को जोड़ने वाली सड़कों पर तेज गति से काम कर रहा है। कुछ महीनों पहले 1600 करोड़ रुपये के Imphal-Moreh section को upgrade करने का काम हमने मंजूर कर दिया है। Moreh में एक integrated check post भी बनाया जा रहा है। इस project के बाद मणिपुर और म्यांमार के बीच व्यापार और लोगों का आना-जाना भी आसान हो जाएगा। हमने Sittwe Port तदा inland water terminal पर भी काम पूरा करके Kaladan project में निरंतर और प्रत्यक्ष प्रगति की है। रोड कम्पोटेंट पर काम शुरू हो चुका है। मुझे कोई संदेह नहीं कि ये transport corridor आसपास के क्षेत्रों को development corridor में बदल के ही रहेगा, ऐसा मेरा विश्वास है। Upper म्यांमार की जरूरत को पूरा करने के लिए भारत से high speed diesel ट्रकों द्वारा आना शुरू हो चुका है। हम border Crossing agreement तथा motor vehicles agreement करके तथा power और energy trading को और अधिक बढ़ावा देकर आपसी सहयोग को कई गुना बढ़ाना चाहते हैं। हमने अपने development co-operation और capacity building partnership के माध्यम से जो कुछ भी हासिल किया है उस पर आज भारत को गर्व है, नाज है।

भारत का लोकतांत्रिक अनुभव हम म्यांमार के साथ share कर रहे हैं। हमारे people to people तथा social culture संबंध हमारी सबसे बड़ी धरोहर हैं, और इन्हें मजबूत करने के लिए हमने भारत आने के इच्छुक म्यांमार के सभी नागरिकों को, म्यांमार के सभी नागरिकों को gratis visa देने का निर्णय कर लिया है। हमने म्यांमार के 40 मछुआरों को रिहा करने का निर्णय भी कर लिया है, जो इस समय भारत की जेलों में बंद हैं। हम आशा करते हैं कि वे जल्द ही म्यांमार में अपने परिवारों से फिर से मिल पाएंगे।

आज मैं Bagan में Ananda Temple गया था। Ananda Temple एवं अन्य ऐतिहासिक व सांस्कृतिक इमारतों में पिछले साल के भूकंप से हुए नुकसान के बाद भारत के सहयोग से renovation हो रहा है। भारत और म्यांमार के बीच इतने ऐतिहासिक संबंध हैं कि उनकी जानकारी एक बहुत बड़ा विषय है, और मेरा मानना है कि आने वाली पीढ़ियों को भी इनकी जानकारी रहनी चाहिए। इस संबंध में मिलकर रिसर्च के प्रयास होने चाहिए।

मैंने यहां अपनी बातचीत में सरकार के समक्ष एक प्रस्ताव रखा है। INA Memorial का survey हम एक साथ कर सकते हैं। एक joint history project की स्थापना की जा सकती है, इसे दोनों देशों के बीच people to people contact और मजबूत होंगे।

मुझे आपको बताते खुशी है कि हमने National Registration Card के आधार पर OCI देने का निर्णय ले लिया है। दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक संबंधों को और मजबूती देने के लिए Indian Council for Cultural Relations की scholarship की संख्या में बढ़ोत्तरी करने का भी फैसला भारत सरकार ने कर लिया है।

Friends, मैंने एक बार कहीं पढ़ा था कि भारत और म्यांमार के रिश्तों का आधार 5B है, 5B. यानी कि Buddhism, Business, Bollywood, bharatnatyam और Burma Teak. लेकिन मुझे लगता है कि इसमें सबसे महत्वपूर्ण B छूट गया है। और यह B है भरोसा, भारत और म्यांमार का एक-दूसरे पर भरोसा। इस भरोसे की बुनियाद सैंकड़ों वर्षों में मजबूत हुई है, और समय के साथ और मजबूत होती जा रही है।

भाइयो और बहनों, सबका साथ-सबका विकास के जिस मंत्र पर हमारी सरकार चल रही है, वो सीमाओं में बंधा हुआ नहीं है। सबका साथ-यानी हर देश का साथ, सबका विकास-यानी हर देश का विकास। भारत विकास के कार्यों में म्यांमार के साथ-साथ चलने के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है।

आप इसमें, आपके आशीर्वाद के लिए मैं आपको फिर नमन करता हूँ। आपके दर्शन करने का सौभाग्य मिला, आप सबका बहुत-बहुत धन्यवाद। इतनी बड़ी संख्या में आप लोग आए, देश की बातें सुनने के लिए, देश के साथ लगाव के कारण, देश के साथ जुड़ने के इरादे से, इतनी बड़ी तादाद में आप आए। मैं फिर एक बार हृदयपूर्वक आपका आभार व्यक्त करता हूँ, इस धरती को नमन करता हूँ, आप सबको नमन करता हूँ। बहुत-बहुत धन्यवाद।

अतुल तिवारी/शाहबाज हसीबी/बाल्मीकि महतो

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

29-अक्टूबर-2017 18:24 IST

प्रधानमंत्री के दिनांक 29 अक्टूबर, 2017 को उजिरे, कर्नाटक में एकत्रित जनसमूह को दिए गए सम्बोधन का मूल पाठ

विशाल संख्या में पधारे हुए प्यारे भाइयो और बहनों।

ये मेरा सौभाग्य है कि मुझे आज भगवान मंजुनाथ के चरणों में आ करके आप सबके दर्शन करने का भी अवसर मिला है। पिछले सप्ताह मैं केदारनाथ जी में था। आदि शंकराचार्य जी ने हजारों वर्ष पहले उस जगह पर राष्ट्रीय एकता के लिए कितनी बड़ी भव्य साधना की होगी। आज मुझे फिर एक बार दक्षिण की तरफ मंजुनाथेश्वर के चरणों में आने का सौभाग्य मिला है।

मैं नहीं मानता हूँ कि नरेन्द्र मोदी नाम के किसी व्यक्ति को डॉक्टर वीरेन्द्र हेगड़े जी का सम्मान करने का हक है या नहीं है? उनका त्याग, उनकी तपस्या, उनका जीवन; 20 साल की छोटी आयु में One Life, One Mission, ये अपने-आपको समर्पित किया- और आज बड़ा देर से सुना, नेचुरल है इतना देर से? ऐसे एक वृत्तस्त जीवन- उनका सम्मान करने के लिए व्यक्ति के नाते मैं बहुत छोटा हूँ। लेकिन सवा सौ करोड़ देशवासियों के प्रतिनिधि के रूप में जिस पद पर आपने मुझे बिठाया है, उस पद की गरिमा के कारण मैं इस काम को करते हुए अपने-आप को बहुत बड़ा भाग्यशाली मानता हूँ।

सार्वजनिक जीवन में और वो भी आध्यात्मिक अधिष्ठान पर ईश्वर को साक्ष्य रखके, आचार और विचार में एकसूत्रता, मन-वचन-कर्म में वही पवित्रता और जिस लक्ष्य को जीवन में तय किया, उस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, स्वः के लिए नहीं समस्ती के लिए, अहम की खातिर नहीं वयम की खातिर, मैं नहीं तू ही, उस जीवन को जीना; हर कदम पर कसौटी से गुजरना पड़ता है। हर कसौटी से, हर तराजू से, अपने हर वचन को, अपने हर कृति को तौला जाता है। और इसलिए 50 साल की ये साधना; ये अपने-आप में हम जैसे कौटि-कौटि जनों के लिए एक प्रेरणा का स्रोत है और इसलिए मैं आपको आदरपूर्वक वंदन करता हूँ, आपको नमन करता हूँ।

और जब मुझे सम्मान करने का सौभाग्य मिला बड़ी सहजता से, और मैंने देखा है हेगड़े जी को जितनी बार मिला हूँ, उनके चेहरे पर मुस्कराहट कभी हटती नहीं है। कोई भारी-भरकम काम का बोझ नजर नहीं आता है। सरल-सहज-निष्पूहः; जैसे गीता में कहा है निष्काम कर्मयोग। और सम्मान कर रहा था, उन्होंने सहज रूप से मुझे कहा- मोदीजी ये 50 साल पूरे हुए, इसका सम्मान नहीं है; आप तो मेरे से आगे 50 साल ऐसे ही काम करूँ इसकी गारंटी मांग रहे हो। इतना मान-सम्मान, प्रतिष्ठा प्राप्त होती हो, ईश्वर का आशीर्वाद हो, 800 साल की महान तपस्या विरासत में मिली हो, उसके बावजूद भी जीवन को प्रतिपल कर्म पथ पर ही आगे बढ़ाना, ये मैं समझता हूँ हेगड़े जी से ही सीखना होगा। चाहे विषय योग का हो, शिक्षा का हो, स्वास्थ्य का हो, ग्रामीण विकास का हो, गरीबों के कल्याण का हो, भावी पीढ़ी के उत्थान के लिए योजनाओं का हो; डॉक्टर वीरेन्द्र हेगड़े जी ने अपने चिंतन के द्वारा, अपने कौशल्य के द्वारा; उन्होंने इन सब चीजों को यहां की स्थल, काल, परिस्थिति के अनुसार ढाल करके आगे बढ़ाया है। और मुझे इस बात को कहने में संकोच नहीं है, कई राज्यों में और देश में भी skill development को लेकर जितने काम चल रहे हैं, उसके तौर-तरीके, काम की पद्धति क्या हो, किस प्रकार से किया जाए, उसका बहुत सारा model, डॉक्टर वीरेन्द्र हेगड़े जी ने यहां जो प्रयोग किए हैं, उसी से मिला है।

आज 21वीं सदी में दुनिया का समृद्ध से समृद्ध देश भी skill development की चर्चा करता है। skill development, prime sector के रूप में माना जाता है। भारत जैसा देश जिसके पास 800 million, 65 प्रतिशत लोग 35 साल से कम उम्र के हों, demographic dividend का हम गर्व करते हों; उस देश में skill development, वो भी सिर्फ पेट-पूजा की खातिर नहीं, भारत के भव्य सपनों को साकार करने के लिए कौशल्य को बढ़ाना, विश्व भर में human resource की जो requirement होगी आने वाले युगों में, उसको परिपूर्ण करने के लिए अपनी बाहों में वो सामर्थ्य लाना, अपने हस्त के अंदर वो सामर्थ्य लाना, उस हुनर को प्राप्त करना, ये चीज डॉक्टर वीरेन्द्र हेगड़े जी ने बहुत सालों पहले देखी थी, और उस काम को आगे बढ़ाया।

और मैं इस काम, इस महत्वपूर्ण काम को गति देने के लिए, हमारे यहां तीर्थ क्षेत्र कैसे होने चाहिए? सम्प्रदाय, आस्था,

परम्पराएं, उनका लक्ष्य क्या होना चाहिए? उस विषय में जितना अध्ययन होना चाहिए, दुर्भाग्य से नहीं हुआ है। आज विश्व में उत्तम प्रकार की business management स्कूल कैसे चल रही हैं, उसकी तो चर्चा होती है। उसका ranking भी होता है। देश के बड़े-बड़े मैगजीन भी उसका ranking करते हैं। लेकिन आज मैं जब धर्मस्थल जैसे पवित्र स्थान पर आया हूं तब, जबसे श्री वीरेन्द्र हेगड़े जी के श्रीचरणों में पहुंचा हूं तब मैं दुनिया की बड़ी-बड़ी यूनिवर्सिटियों से निमंत्रण देता हूं, हिन्दुस्तान की बड़ी-बड़ी Universities को निमंत्रण देता हूं कि हम अस्पतालों का सर्वे करते हैं, उनकी कार्यशैली का अध्ययन करते हैं। हम इंजीनियरिंग कॉलेजों का ranking करते हैं। भांति-भांति प्रकार के ranking की चर्चा भी होती है लेकिन समय की मांग है, सदियों से हमारे देश में, हमारी इस ऋषि-मुनि परम्परा ने किस प्रकार से संस्थाओं को बनाया है, किस प्रकार से इसे आगे बढ़ाया है, पीढ़ी-दर-पीढ़ी वो संस्कार संक्रमण कैसे किया है, उनकी निर्णय प्रक्रियाएं क्या होती हैं, उनकी financial management क्या होती है। Transparency and integration को उन्होंने किस प्रकार से अपनस्थ किया हुआ है, युगानुकूल परिवर्तन कैसे लाए हैं? समय और काल के अनुसार, समय की आवश्यकताओं के अनुसार उन्होंने इन संस्थाओं की प्रेरणाओं को जीवंत कैसे रखा है, और मैं मानता हूं हिन्दुस्तान में ऐसी एक-दो नहीं, हजारों संस्थाएं हैं, हजारों आंदोलन हैं, हजारों संगठन हैं, जो अभी भी कोटि-कोटि जनों के जीवन को प्रेरणा देते हैं, स्व से निकल कर समस्ती के लिए जीने की प्रेरणा देते हैं। और उसमें धर्मस्थल, 800 साल की विरासत, ये अपने-आप में एक उदाहरणीय है।

अच्छा होगा दुनिया के universities, भारत के ऐसे आंदोलनों का अध्ययन करें। देखें, दुनिया को आश्चर्य होगा कि हमारे यहां क्या व्यवस्थाएं थीं? कैसे व्यवस्थाएं चलती थीं? समाज के अंदर आध्यात्मिक चेतना की परम्परा को कैसे निभाया जाता था? हमारे भीतर जो सदियों से पली अच्छाइयां हैं उन अच्छाइयों के प्रति गर्व करते हुए समानुकूल और अच्छे बनने के लिए एक बहुत बड़ा अवसर हमारे सामने होता है। और मुझे विश्वास है कि सिर्फ आस्था तक सीमित न रहते हुए उसके वैज्ञानिक तौर-तरीकों की तरफ भी देश की युवा पीढ़ी को आकर्षित करने की आवश्यकता है।

अब आज मुझे यहां Women Self Help Group, उनको Rupay Card देने का अवसर मिला। जिन लोगों ने संसद में गत नवम्बर, दिसम्बर, जनवरी, फरवरी के दरम्यान जो भाषण दिए हैं, उसको अगर सुना होगा, न सुना हो तो रिकॉर्ड पर आप पढ़ लीजिए। हमारे बड़े-बड़े दिग्गज लोग, अपने-आपको बड़ा तीसमारखां मानने वाले लोग, विद्वत्ता में अपने-आपको बहुत चोटी के व्यक्ति मानने वाले लोग- सदन में ये बातें बोलते थे कि हिन्दुस्तान में तो अशिक्षा है, गरीबी है, ये digital transaction कैसे होगा? लोग cashless कैसे बनेंगे? ये impossible है। लोगों के पास मोबाइल फोन नहीं है। न जाने जितना बुरा बोल सकते हैं, जितना बुरा सो सकते हैं, कोई कसर नहीं छोड़ी। लेकिन आज डॉक्टर वीरेन्द्र हेगड़े जी ने सदन में उठी उन आवाजों को जवाब दे दिया है।

गांव में बसने वाली मेरी माताएं-बहनें शिक्षित हैं कि नहीं हैं, पढ़ी-लिखी हैं कि नहीं हैं; आज उन्होंने संकल्प किया है और 12 लाख लोग, कम नहीं। 12 लाख लोगों ने संकल्प किया है कि वो अपने Self Help Group का पूरा कारोबार cashless करेंगे। नकद के बिना करेंगे, digital transaction करेंगे, रुपये कार्ड से करेंगे, BhimApp से करेंगे। अगर अच्छा करने का इरादा हो तो रुकावटें भी कभी-कभी तेज गति को पाने का अवसर प्रदान कर देती हैं और वो आज डॉक्टर वीरेन्द्र हेगड़े जी ने दिखा दिया है।

मैं आपको हृदय से बधाई देता हूं कि आपने भावी भारत के बीज बोने का एक उत्तम प्रयास Digital India, Less Cash Society, उस तरफ देश को ले जाने के लिए, और उस क्षेत्र के लोगों को स्पर्श किया है; जिन तक शायद सरकार या banking system को जाते-जाते पता नहीं कितने दशक लग जाते।

लेकिन आपने नीचे से व्यवस्था को शुरू किया है और आज उसको करके दिखाया है। मैं उन Self Help Group की बहनों को भी बधाई देता हूं, डॉक्टर वीरेन्द्र हेगड़े जी को बधाई देता हूं कि आज उन्होंने देश के लिए उपयोगी एक बहुत बड़े अभियान को प्रारंभ किया है। अब वक्त बदल चुका है और ये जो currency है, जो नकद है, हर युग में बदलती रही है। कभी पत्थर के सिक्के हुआ करते थे, कभी चमड़े के सिक्के हुआ करते थे, कभी सोने-चांदी के हुआ करते थे, कभी हीरे-जवाहरात के रूप में हुआ करते थे, कभी कागज के भी आए, कभी प्लास्टिक के आए। बदलता गया है, समय रहते बदल गया है। अब, अब वो digital currency का युग प्रारंभ हो चुका है, भारत ने देर नहीं करनी चाहिए।

और मैंने देखा है कि ज्यादा नकद सामाजिक बुराइयों को खींच करके ले आती है। परिवार में भी अगर बेटा बड़ा होता है, बेटा बड़ी होती है; मां-बाप सुखी हों, सम्पन्न हों, पैसों की कोई कमी न हो; तो भी एक सीमा में ही उसको पैसे देते हैं। इसलिए नहीं- पैसे खर्च करने से वो डरते हैं, लेकिन वो चाहते हैं कि अगर ज्यादा धन उसकी जेब में होगा तो बच्चों की आदत बिगड़ जाएगी। और इसलिए थोड़ा-थोड़ा देते हैं और पूछते रहते हैं भाई क्या किया, ठीक खर्चा किया कि नहीं किया? जो परिवार में संतानों की चिंता करने वाले मां-बाप हैं वो ये भली-भांति जानते हैं कि अगर जेब में पैसे होते हैं तो पता नहीं कहां से कहां रास्ते भटक जाते हैं। और इसलिए ये बहुत बड़ा काम, समाज को स्वयं की स्वयं के साथ accountability, ये

बहुत बड़ी बात होती है। स्वयं की स्वयं के साथ accountability, ये बहुत बड़ी बात होती है।

आज जिस दिशा में डॉक्टर हेगड़े जी लिए जा रहे हैं, मैं समझता हूँ बाद के लिए बहुत बड़ा महामार्ग खोल रहे हैं। आज और भी एक काम हुआ है। इस Logo का लोकार्पण हुआ है और वो भी पृथ्वी के प्रति, ये धरती माता के प्रति हमें हमारा कर्ज चुकाने की प्रेरणा देता है। हम तो ये मानते हैं, ये वृक्ष की जिम्मेदारी है कि ये हमें ऑक्सीजन देता रहे, हमारी जिम्मेदारी नहीं इस वृक्ष को बचाना, हम तो हक लेके आए हैं कि वो वहां खड़ा रहे और हमको ऑक्सीजन देता रहे। हम तो जैसे हक लेके आए हैं, ये धरती माता है उसकी जिम्मेदारी है हमारा पेट भरती रहे। जी नहीं, अगर इस धरती मां का दायित्व है तो उसके बेटे के, संतान के नाते हमका भी दायित्व है। अगर वृक्ष का हमको ऑक्सीजन देने का दायित्व हमको लगता है तो मेरा भी कर्तव्य बनता है, उसका लालन-पालन करूं। और जब ये सौदा, ये जिम्मेदारियां असंतुलन पैदा करती हैं; देने वाला तो देता रहे, लेने वाला कुछ न करे, वो भोगता रहे; तब समाज में असंतुलन पैदा होता है, व्यवस्थाओं में असंतुलन पैदा होता है, प्रकृति में असंतुलन पैदा होता है और तब जा करके Global warming की समस्या पैदा होती है।

आज सारी दुनिया कह रही है कि पानी का संकट मानव जाति के लिए बहुत बड़ी चुनौती बनने वाला है। और ये हम न भूलें अगर हम आज एक गिलास भी पानी पीते हैं या बाल्टी स्नान भी करते हैं तो वो हमारी मेहनत का परिणाम नहीं है, और न ही वो हमारे हक का है। हमारे पूर्वजों ने सजगता से काम किया और हमारे लिए कुछ छोड़कर गए। उसके कारण वो प्राप्त हुआ है, और ये है हमारी भावी पीढ़ी के हक का। आज मैं मेरी भावी पीढ़ी का खा रहा हूँ। मेरा भी जिम्मा बनता है कि मेरे पूर्वज जिस प्रकार से मेरे लिए छोड़ करके गए, वैसे ही मुझे भी आगे आने वाली पीढ़ी के लिए छोड़कर जाना होगा। इस भावना को जागृत करने का प्रयास, पर्यावरण की रक्षा का एक बहुत बड़ा आंदोलन धर्मस्थल से प्रारंभ हो रहा है। मैं समझता हूँ ये पूरे ब्रह्मांड की सेवा का काम है।

हम किस प्रकार से प्रकृति के साथ जुड़ें। 2022, भारत की आजादी के 75 साल हो रहे हैं। धर्मस्थल से इतना बड़ा आंदोलन शुरू हुआ है। और एक बार धर्मस्थल से आंदोलन शुरू हुआ हो, डॉक्टर हेगड़े जी के आशीर्वाद मिले हैं तो मेरा तो भरोसा है कि सफलता निश्चित हो जाती है।

आज हम हमारी बुद्धि, शक्ति, लोभ के कारण इस धरती माता को जितना चूसते हैं, चूसते ही रहते हैं। हम कभी इस मां की परवाह नहीं करते हैं कि कहीं ये मेरी मां बीमार तो नहीं हो गई है? पहले एक फसल लेता था, दो लेने लग गया, तीन लेने लग गया, भांति-भांति की लेने लग गया। ज्यादा पाने के लिए ये दवाई डालता रहा, वो chemical डालता रहा, वो fertilizer डालता रहा। उसका होगा सो होगा, मुझे तत्काल लाभ मिलता जाएगा, इसी भाव से हम चलते रहे। अगर यही स्थिति चली तो पता नहीं हम कहाँ जा करके रुकेंगे।

क्या धर्मस्थल से डॉक्टर हेगड़े जी के नेतृत्व में हम आज एक संकल्प कर सकते हैं क्या? हमारे इस पूरे क्षेत्र में सब किसान ये संकल्प कर सकते हैं क्या? कि 2022, जब आजादी के 75 साल होंगे तब, हम जो यूरिया का उपयोग करते हैं, उस यूरिया को 50 प्रतिशत पर ले आएं। आज जितना करते हैं, उसको आधा कर देंगे। आप देखिए धरती मां की रक्षा के लिए कितनी बड़ी सेवा होगी। किसान का पैसा तो बचेगा, उसका खर्च बचेगा, उत्पादन में कोई कमी नहीं आएगी। और उसके बावजूद भी उसका खेत और खलिहान, वो धरती माता हमें आशीर्वाद देगी, वो ज्यादा अतिरिक्त मुनाफा का कारण बनेगा।

उसी प्रकार से पानी, हम जानते हैं कर्नाटक के अंदर अकाल के कारण कैसी स्थिति पैदा होती है। बिना पानी कैसा संकट आता है। और मैंने तो देखा है ये हमारे येदुरप्पा जी, सुपारी के दाम गिर जाएं तो मेरा गला आ करके पकड़ते थे गुजरात का मैं मुख्यमंत्री था तो भी। वो कहते थे मोदीजी आप खरीद लो लेकिन हमारे मंगलौर इलाके को बचा लो, दौड़ करके आते थे।

पानी, क्या हमारे किसान micro irrigation की ओर 2022 तक, टपक सिंचाई, Per Drop - More Crop इस संकल्प को ले करके आगे बढ़ सकते हैं क्या? बूंद-बूंद पानी, एक मोती की तरह उसका उपयोग कैसे हो, मोती से मूल्य सा बूंद-बूंद पानी का मूल्य समझ कर कैसे काम करें, अगर इन चीजों को लेकर हम चलते हैं तो मुझे विश्वास है कि हम एक बहुत बड़ा बदलाव ला सकते हैं।

जब मैं Digital India की बात कर रहा था, भारत सरकार ने एक नया अभी imitative लिया है- GeM. ये एक ऐसी व्यवस्था है जो खास करके हमारे जो Women Self Help Group हैं, उनको मैं निमंत्रण देता हूँ। जो भी कोई उत्पादन करता है, जो अपने product बेचना चाहता है, वो भारत सरकार का ये जो GeM Portal है, उस पर अपनी रजिस्ट्री करवा सकता है Online. और भारत सरकार को जिन चीजों की जरूरत है, राज्य सरकारों को जिन चीजों की जरूरत है, वे भी

उस पर जाते हैं, कहते हैं भई हमें इतनी chair चाहिए, इतने टेबल चाहिए, इतने ग्लास चाहिए, इतने refrigerator चाहिए। जो भी उनकी आवश्यकता है वो उस पर डालते हैं। और जो GeM में रजिस्टर्ड होते हैं, गांव के लोग भी वो आते हैं भई मेरा माल है, मेरे पास पांच चीज हैं मैं बेचना चाहता हूं। सारी transparency व्यवस्था है।

पिछले साल मैंने 9 अगस्त को इसको प्रारंभ किया था, नई चीज थी। लेकिन देखते ही देखते देश के करीब 40 हजार ऐसे उत्पादन करने वाले लोग उस GeM के साथ जुड़ गए। देश के 15 राज्य, उन्होंने MoU कर लिया और हजारों करोड़ रुपये का कारोबार, सरकार जो खरीदना होता है वो GeM के माध्यम से आता है। Tender नहीं होता है, परदे के पीछे कुछ नहीं होता है, सारी चीजें कम्प्यूटर पर सामने होती हैं। जो चीज पहले 100 रुपये में मिलती थी, आज स्थिति आ गई है वो सरकार को 50 और 60 रुपये में मिलना शुरू हो गया है।

Selection के लिए scope मिलता है और पहले बड़े-बड़े लोग सप्लाई करते थे, आज गांव का एक गरीब व्यक्ति भी कोई चीज बनाता है; वो भी सरकार को सप्लाई कर सकता है। ये सखी, ये हमारे जो Women Self Help Group है, वो अपने product उसमें बेच सकते हैं। मैं उनको निमंत्रण देता हूं।

और मैं कर्नाटक सरकार को भी आग्रह करता हूं। हिन्दुस्तान के 15 राज्य, इन्होंने भारत के सरकार के साथ GeM के MOU किया है। कर्नाटक सरकार भी देर न करे, आगे आए। इससे कर्नाटक के अंदर जो सामान्य व्यक्ति उत्पादन करता है उसको एक बहुत बड़ा बाजार मिल जाएगा। सरकार एक बहुत बड़ी खरीदार होती है। जिसका लाभ यहां के गरीब से गरीब व्यक्ति भी जो चीज उत्पादित करता है, उसको एक अच्छा Assured Market मिल जाएगा और उसको गारंटी amount भी मिलेगा।

मैं चाहता हूं कि कर्नाटक सरकार इस निमंत्रण को स्वीकार करेगी और कर्नाटक के जो सामान्य लोग हैं उनके फायदे में जो चीज जाती है वो उनको लाभ मिलेगा।

हमने आधार, आज देखा आपने- रुपये कार्ड को आधार से जोड़ा है, मोबाइल फोन से जोड़ा है, बैंक की सेवाएं मिल रही हैं। हमारे देश में गरीबों को लाभ मिले, ऐसी कई योजनाएं चलती हैं। लेकिन पता ही नहीं चलता है कि जिसके लिए योजना है उसी को जाता है कि किसी और जगह पर जाता है? बीच में कहीं leakage तो नहीं हो रहा है?

हमारे देश के प्रधानमंत्री ने कभी कहा था कि दिल्ली से एक रुपया निकलता है, गांव जाते-जाते 15 पैसा हो जाता है। ये रुपयों को घिसने वाला पंजा कौन होता है? ये कौन सा पंजा है जो रुपये को घिसता-घिसता 15 पैसे बना देता है? हमने तय किया कि दिल्ली से एक रुपया निकलेगा तो गरीब के हाथ में 100 के 100 पैसे पहुंचेंगे, 99 नहीं। और उसी गरीब के हाथ में पहुंचेंगे, जिसका इस पर हक है। हमने direct benefit transfer की व्यवस्था चलाई, registration किया और मैं इस पवित्र स्थान पर बैठा हूं, डॉक्टर वीरेन्द्र हेगड़े जी के बगल में बैठा हूं, यहां की पवित्रता का मुझे पूरा अंदाज है, इमानदारी का पूरा अंजाद है, और उस पवित्र स्थल से मैं कह रहा हूं; हमारे इस एक प्रयत्न के कारण अब तक, अभी तो सब राज्य हमारे साथ जुड़े नहीं हैं, कुछ राज्यों ने imitative लिया है, भारत सरकार ने कई सारे initiative लिए हैं; अब तक Fifty seven thousand crore rupees- 57 हजार करोड़ रुपया; जो किसी गैर-कानूनी लोगों के हाथों में चला जाता था, चोरी हो जाता था; वो सारा बंद हो गया और सही लोगों के हाथ में सही पैसा जा रहा है।

अब मुझे बताइए जिनकी जेब में हर साल 50-60 हजार करोड़ जाता था, उनकी जेब में जाना बंद हो गया- वो मोदी को पसंद करेंगे क्या? वो मोदी पर गुस्सा करेंगे कि नहीं करेंगे? मोदी के बाल नोच लेंगे कि नहीं नोच लेंगे?

आप हताति हैं दोस्तों, लेकिन मैं एक ऐसे पवित्र स्थान पर खड़ा हो करके कह रहा हूं हम रहें या न रहें, इस देश को बरबाद नहीं होने देंगे। हमने अपने लिए जीना ही नहीं सीखा है, हम बचपन से औरों के लिए ही जीना सीख करके आए हैं।

और इसलिए भाइयो, बहनों, मेरे लिए सौभाग्य है- एक विचार मेरे मन में आता है- वो भी मैं डॉक्टर वीरेन्द्र जी के सामने रखने की हिम्मत करता हूं। मैं उसकी वैज्ञानिक चीजों को ज्यादा जानता नहीं हूं, एक lay man के नाते बताता हूं। और मैं मानता हूं आप करके दिखाएंगे। हमारे जो समुद्री तट हैं- मंगलौर के बगल में समुद्री तट है। समुद्री तट पर हमारे जो मछुआरे भाई-बहन काम करते हैं- वो साल में कुछ महीने ही उनको काम मिलता है, बाद में बारिश आ जाती है तो छुट्टी का समय हो जाता है। एक और काम है जो हम समुद्री तट पर कर सकते हैं, अच्छी तरह कर सकते हैं, और वो है sea weed की खेती। लकड़ी का एक बनाना पड़ता है करापा- उसमें कुछ weed डाल करके समंदर के किनारे पर छोड़ देना होता है पानी में। वो तैरता रहता है और 45 दिन में फसल तैयार हो जाती है। देखने में बहुत सुंदर होती है, बहुत ही सुंदर होती है और भरपूर पानी से भरी होती है।

आज pharmaceutical world के लिए ये बहुत बड़ा ताकतवर पौधा माना जाता है। लेकिन मैं एक और काम के लिए सुझाव देता हूँ। हमारे यहां के समुद्री तट पर Women Self Help Group के द्वारा इस प्रकार की sea weed की खेती प्रारंभ की जाए। 45 दिन में फसल आना शुरू होगा, 12 महीनों फसल मिलती रहेगी और वो जो पौधे हैं, जब किसान जमीन को जोते, उसके साथ जमीन में मिक्स कर दिया जाए। उसके अंदर भरपूर पानी होता है और उसमें बहुत nutrition value होती है। एक बार हम इस धर्मस्थल के अगल-बगल के गांव में प्रयोग करके देखें। मुझे विश्वास है कि यहां की जमीन को सुधारने के लिए ये sea weed के पौधे बहुत बड़ी सेवा कर सकते हैं, बहुत मुफ्त में तैयार हो जाते हैं। उससे हमारे मछुआरे भाइयों को भी income हो जाएगी और उसमें जो पानी का तत्व है वो जमीन को पानीदार बनाते हैं। बड़ी ताकतवर बनाते हैं। मैं चाहूंगा कि धर्मस्थल से ये प्रयोग हो। अगर यहां पर कुछ प्रयोग हों तो आपके scientist हैं, आपके education के लोग हैं, उसका जो अध्ययन करेंगे, मुझे जरूर report भेजिए। सरकार को मैंने ये काम कभी कहा नहीं है, मैं पहली बार यहां कह रहा हूँ। क्योंकि ये जगह ऐसी है कि मुझे लगता है कि आप प्रयोग करेंगे और सरकार के नीति-नियमों का बंधन आ जाता है। आप खुले मन से कर सकते हैं। और आप देखिए वो जमीन इतनी बदल जाएगी, उत्पादन इतना बढ़ जाएगा, कभी सूखे की स्थिति में भी हमारा किसान कभी परेशान नहीं होगा। तो धरती माता की रक्षा के अनेक हमारे प्रकल्प हैं, उन सबको ले करके चलेंगे।

मैं फिर एक बार आज इस स्थान पर आया, डॉक्टर वीरेन्द्र जी के मुझे आशीर्वाद मिले। मंजुनाथेश्वर के आशीर्वाद मिले, एक नई प्रेरणा मिली, नया उत्साह मिला। अगर इस इलाके की सामान्य पढ़ी-लिखी माताएं-बहनें, 12 लाख बहनें, अगर cashless के लिए आगे आती हैं तो मैं इस पूरे जिले से आह्वान करूंगा, हमें उन बहनों से पीछे नहीं रहना चाहिए, उन Women Self Help Group से। हम भी BhimApp का उपयोग करना सीखें। हम भी cashless transaction को सीखें। आप देखिए देश में इमानदारी का युग प्रारंभ हुआ है। इमानदारी को जितनी हम ताकत देंगे, बईमानी की संख्या कम होना बहुत स्वाभाविक हो जाएगा। कोई वक्त था जब बईमानी को ताकत मिली थी, अब वक्त है इमानदारी को ताकत मिलेगी। और यही ताकत है अगर हम दीया जलाएंगे तो अंधियारे का जाना तय होता है। अगर हम इमानदारी को ताकत देंगे तो बईमानी का हटना तय होता है। उसी एक संकल्प के साथ आगे बढ़ें। मेरी आप सबको बहुत-बहुत शुभकामनाएं हैं। डॉक्टर वीरेन्द्र हेगड़े जी को मेरी बहुत शुभकामनाएं हैं और उनको मैं प्रणाम करता हूँ। 50 वर्ष के सुदीर्घकाल और आने वाले 50 साल तक, वो देश को, इस क्षेत्र को उतनी ही सेवा करते रहें।

बहुत-बहुत धन्यवाद।

अतुल तिवारी / शाहबाज हसीबी / निर्मल शर्मा

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

22-अक्टूबर-2017 18:24 IST

वडोदरा में प्रधानमंत्री के गुजराती में दिए भाषण का हिन्दी अनुवाद, 22 अक्टूबर 2017

आप सभी को नूतन वर्षाभिन्नंदन। बड़ी धूम धाम से दिवाली खत्म हुई और नए संकल्प के साथ नया साल का प्रारंभ हुआ मेरी ओर से नूतन वर्ष की अनेकानेक शुभकामनाएं। कैसे हो सब लोग। मजे में। आवाज में तो आज वह खनक दिख रही है।

विशाल संख्या में आए हुए वडोदरा के मेरे भाइयों और बहनों। आज इतने सारे लोकार्पण के और विकास के कार्यों का धोधा बह रहा है यहां पर। एक के बाद एक एक के बाद एक ऐसे यह सारे विकास के कार्य। राजकीय दांवपेच खेलना हो, राजकीय लाभ का विचार करना हो, यह सारे प्रोजेक्ट अगर रोज के 1 करे ना तू भी दूसरे दिन अखबार भरा होगा। इतने सारे विकास के कार्य और कार्यक्रम। आज वडोदरा शहर और जिले की जनता को अपेक्षा करने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ। आज एक ही दिन में करीब 3600 करोड़ रुपयों के कार्य उस का लोकार्पण और शिलान्यास, विकास की दुनिया में अगर सोचे तो, यह बहुत बड़ा कदम है। गुजरात, बहुत दूर की बात नहीं कर रहा हूं, पूरे गुजरात का बजट सिर्फ 8 से 10 हजार करोड़ रुपए था। जबकि आज अकेले वडोदरा शहर और जिले में, एक ही कार्यक्रम में 3600 करोड़ के विकास के काम। अब आप मुझे बताइए कि जिन्होंने यह देखा ही ना हो, सुना ही ना हो, सोचा भी ना हो उनको रात को जागना पड़ेगा या नहीं? तकलीफ होगी या नहीं? कई लोगों को तो यह भी तकलीफ है कि यह मोदी दिवाली के बाद गुजरात क्यों जाते हैं? आप मुझे बताइए कि मैं वडोदरा आऊं या ना आऊं? यह वडोदरा वालों का मुझ पर हक है या नहीं? यह शास्त्री पोल सबको याद है या नहीं? अब उसमें भी उनको तकलीफ है। अब मुझे तो कुछ कह नहीं सकते इसलिए इलेक्शन कमीशन को कोसते हैं। इस इलेक्शन कमीशन को कोसने वाले को मुझे कहना है, जो लोग चुनाव में काउंटिंग हो गए, काउंटिंग होने के बाद तय हो गया कि वह भाई हार गए, TV में भी लाइन शुरू हो गई और पता नहीं क्या हुआ, री-काउंटिंग हुआ। और जो लोग री काउंटिंग में जीत गए, हो इलेक्शन कमीशन को कोसने का काम करते हैं? और मोदी क्यों गुजरात जाते हैं इसके लिए इलेक्शन कमीशन को पूछते हैं? फ्री काउंटिंग के कारण बस गए लोग, उनके मुंह में इलेक्शन कमीशन के प्रति प्रश्न उठाने का अधिकार ही नहीं है।

आज वाघोडिया के आस-पास के गांव को पीने का शुद्ध पानी मिले उसके लिए महत्वपूर्ण योजना का शुभारंभ हो रहा है। पानी जब आता है तब सिर्फ बहनों को दो-दो तीन-तीन किलोमीटर जाना पड़ता था सिर पर मटका ले लेकर मेहनत करनी पड़ती थी, सिर्फ उसमें से मुक्ति मिल रही है ऐसा नहीं है। पानी जब पहुंचता है तब जीवन की पूरी रचना बदलने की शुरुआत होती है। शुद्ध पीने का पानी मिले इसलिए बीमारियां अपने आप कम होती जाएगी। शुद्ध पीने का पानी मिले तब घर में अपने आप तंदुरस्ती का प्रारंभ होगा। जब हम लोगों ने यहां पर जिम्मेदारी संभाली तब 100 में से तकरीबन 15, 20, 25 घरों में नल से पानी आता था। हमें संतोष है कि आज 80 % से ज्यादा घरों में नल से पानी पहुंचता है। यह बहनों की तकलीफ कम हुई? पानी उनके घर नल तक पहुंचा? इसको विकास कहेंगे या नहीं कहेंगे? यह विकास किया जाए या नहीं किया जाए? और भारत सरकार संकल्पबद्ध है भारत सरकार का स्पष्ट निर्देश है की प्रजा के पैसे एक एक पाई का उपयोग सिर्फ जनहित के लिए होना चाहिए, विकास के कामों के लिए होना चाहिए, सामान्य मानवी की जिंदगी में बदलाव आए, उसकी आशा अपेक्षाएं पूरी हो इस तरह से खजाने का उपयोग हो, सिर्फ और सिर्फ विकास के साथ ही दिल्ली की सरकार है। जिस राज्य में विकास जिसकी प्राथमिकता होगी, भारत सरकार उनको जितनी मदद चाहिए होगी वह मदद करने के लिए आतुर रहेगी। पर अगर विकास विरोधी आए और बैठे कहीं भी, विकास के विरोध के लिए भारत सरकार का 1 भी खर्च नहीं किया जाएगा। यह प्रजा के पैसे विकास के लिए होते हैं। और विकास के बिना सामान्य मानविकी जिंदगी में बदलाव अशक्य है। आप विचार करे आजादी के 70 साल हो गए, 18 या 19 वीं सदी में जो लोग घर में तेल के दीए जलाकर गुजारा करते होंगे, 21वीं सदी में भी इस देश के चार करोड़ परिवार, उनको तेल के दीए जलाकर घर में जीना पड़ता हो, यह स्थिति बदलनी चाहिए या नहीं बदलनी चाहिए? यह चार करोड़ परिवार को बिजली का कनेक्शन मिलना चाहिए या नहीं मिलना चाहिए? उनके बच्चों को पढ़ाई के लिए सुविधा होनी चाहिए या नहीं होनी चाहिए? उनके घर में मोबाइल फोन हो तो चार्जिंग की व्यवस्था होनी चाहिए या नहीं होनी चाहिए? उनको भी क्योंकि सास भी कभी बहू थी सीरियल देखनी हो तो बिजली आनी चाहिए या नहीं आनी चाहिए? भाइयों-बहनों सरकारें आई और गई यह चार करोड़ परिवार बिजली के लिए तड़पते रहे। और इसलिए मैंने बीड़ा उठाया है महात्मा गांधी जिस ग्राम राज्य की, ग्रामोदय की बात

करते थे, उस महात्मा गांधी के जब 150 साल होंगे 2019 में तब तक इस देश के हर एक परिवार चाहे वह झोपड़ियों में रहता हो, उनके घर में बिजली का बल्ब लगना चाहिए यह काम मैंने माथे पर लिया है।

प्रधानमंत्री सौभाग्य योजना द्वारा 40000000 परिवार, जिनके यहां बिजली नहीं है उनको बिजली पहुंचाने का और समयबद्ध कार्यक्रम, हमने सोचा है, हम देखेंगे, ऐसा नहीं 2019 मतलब होना चाहिए। इस देश के 18000 गांव, 18000 गांव में बिजली का खं भी नहीं था, आजादी के 70 साल बाद भी। मैं जब नया-नया प्रधानमंत्री बना था तब मैंने सरकार के अधिकारियों को पूछा था कि क्या लगता है कब तक पूरा होगा तब एक दूसरे के सामने देखने लगे और कहा साहब 7-8 साल तो लग जाएंगे। मैंने कहा हमें 7-8 साल राह नहीं देखनी है। 70 साल उन्होंने राह की है अब उनको ज्यादा राह नहीं दिखा सकते हैं। मैंने कह दिया की हम लोग 1000 दिन में 18000 गांव में बिजली पहुंचा देंगे। अभी 1000 दिन पूरे नहीं हुए हैं भाइयों-बहनों, करीब 16000 गांव में बिजली पहुंचाने का काम खत्म कर दिया गया है। और अभी भी समय बाकी है और 2000 गांव में तेज गति से काम चल रहा है। कहने का तात्पर्य यह है कि क्यों सही समय में लोगों के काम नहीं होने चाहिए?

आप सबको पता है कि पहले गैस का कनेक्शन लेना होता तो चप्पल घिस जाते थे कि नहीं? MP के घर जाना पड़ता था कूपन लेने के लिए। MP को 25 कूपन मिलती थी गैस का कनेक्शन देने के लिए। इस देश में ऐसा भी समय देखा है जब 2014 में लोकसभा का चुनाव चल रहा था, देश का प्रधानमंत्री तय करना था, इस देश में किसकी सरकार आएगी यह तय करना था, कुछ समय एक पार्टी की बहुत बड़ी मीटिंग मिली। और लोकसभा में किस मुद्दे पर चुनाव लड़ेंगे उन्होंने तय किया और बाहर आकर प्रेस के सामने बहुत बड़ी घोषणा की, आप को याद दिलाता हूं कि उन्होंने घोषणा की थी कि 1 साल में गैस के 9 बोतल के बदले अगर हमारी सरकार बनी तो 12 बोतले देंगे। अब यह उनकी दृष्टि उनके सोचने का स्तर। 9 बोतल की बजाय 12 बोतल देंगे पर हम को प्रधानमंत्री बना दो। और हमारी दृष्टि देखो हमने आ कर तै किया है हम पांच करोड़ परिवार में गैस के बोतल पहुंचाएंगे और एक सवा वर्ष के अंदर ही तीन करोड़ परिवारों में गैस के चूल्हे जलने लगे। उनका सोचने का स्तर ही नहीं है हां एक चीज में वह सोचते थे, 2014 में सारे अखबार भरे हुए थे। डेढ़ लाख का घोटाला, दो करोड़ का घोटाला, कोयला में घोटाला, सबमरीन में घोटाला, हेलीकॉप्टर में घोटाला, यही सब आता था ना अखबार में? उस समय अखबार में रोज समाचार आते थे आज इतने गए, एक लाख करोड़ गए, डेढ़ लाख करोड़ गए, दो लाख करोड़ गए और मोदी आने के बाद क्या आता है, मोदी जी कितने आए, लोग मुझे पूछते नहीं है कि कितने गए लोग पूछते हैं कि कितने आए।

भाइयों-बहनों विकास तभी होता है जब सामान्य मानवि की मुसीबतों के साथ आपका रोज का नाता हो। विकास भविष्य के बनता है जब आप उसकी उपयुक्त संसाधनों के लिए भरपूर प्रयास करते हो। विकास परिषद के बनता है जब आप एक एक पाई का सदुपयोग आवश्यकतानुसार करने के लिए बंधे हो, विकास तभी शक्य बनता है जब आप तय करें हुए कामों का मिनट टू मिनट मॉनिटरिंग करें तब विकास होता है।

रोड पहले भी बनते थे रुपए पहले भी खर्च होते थे यह तो हमारी ताकत है पहले 1 दिन में रोड बनते थे उसके बजाए आज हम उसकी डबल ताकत से रोड बना रहे हैं। रेलवे पहले भी डाली जाती थी उसके सामने आज हमने डबल रेलवे डाली है। पहले 1 दिन में जितने मीटरगेज से ब्रॉडगेज होते थे उसके सामने हम आज 1 दिन में 3 गुना करते हैं। भाइयों-बहनों इसका कारण प्रजा की एक एक पाई का उपयोग हो और इस देश को आज सामान्य नागरिक अब हमारे बच्चों के नसीब में होगा तो मिलेगा वह मनस्थिति मुझे बदलनी है, देश के नागरिक को यह दिखे की यह उसके सामने हुआ। हमने सुना था वह हुआ। मैं जब स्कूल में पढ़ रहा था तब से मैं यह सुन रहा था कि दहेज गोवा के बीच रो रो फेरी सर्विस शुरू होने वाली है। उसका अर्थ है कि रो-रो फेरी सर्विस क्या है वह मालूम था कहां डालनी चाहिए या पता था फिर भी डालने का काम मेरे सर पर आया। आज 50 साल बाद जा कर के ये हुआ है। क्योंकि उनके लिए यह प्रायोरिटी का विषय है कि नहीं है, उनको तो यह लगता है कि यह सब हमारे हक का है हम तो लिखा कर आए हैं यह कर्सी हमारी, हमारी यह सब हमें भुगतना है। जनता का जो होना है वह होगा पर अब जमाना बदल गया है, देश इस प्रकार की प्रवृत्तियों को सहने को तैयार नहीं है।

देश को परिवर्तन चाहिए, देश को बदलाव चाहिए। देश को विकास की नई ऊंचाई पर जाना है। आज यहां भारत सरकार ने, मकान में पहले भी बनते थे, यहां बनेंगे, इतने बनेंगे यह सब चलता ही रहता था। मकान बनना है तब बनेगा पर बनाने वाले का पेट भरना चाहिए। हमने तय किया कि ऐसा कुछ नहीं करना है। 2022 भारत की आजादी के 75 साल इस देश का मध्यम वर्ग हो निम्न मध्यम वर्ग हो गरीब हो उनको खुद का घर का घर होना चाहिए। और सरकार काम पर लग गई और हमने बदलाव किया। पहले भारत सरकार क्या करती थी डिजाइन बनाकर देती थी कि ऐसा मकान बनाओ, वह लोग बोलते थे कि हमारे आदिवासी विस्तार में ऐसे मकान नहीं बनते वहां पर तो लकड़ी का मकान चाहिए। हमारे गांव में पशुओं को बांधने के लिए जगह चाहिए। हमने आकर तय किया सर्वाधिक लोगों की जरूरत के मुताबिक डिजाइन बनी चाहिए, स्थानिक मटेरियल इस्तेमाल करने की आदत हो उसके द्वारा बने, पहले से बड़ा बने, पहले से मजबूत बने, पहले से ज्यादा

हवा उजास वाला बने और साथ में बिजली और टॉयलेट की व्यवस्था वाला बने। बिजली-पानी टॉयलेट यह सब मिलना चाहिए।

यह मंच पर आने से पहले यहां गुजरात सरकार ने जो काम किए हैं वह मकानों के नमूने मैंने देखे। कच्छ का हो तो अलग नमूना दाहोद जिले का हो तो अलग नमूना वलसाड जिले का अलग नमूना, वहां के मटीरिल के मुताबिक नई डिजाइन बनाई है और उसके कारण अनेक नागरिक भी यह मकान उनको ज्यादा अनुकूल रहता है खुद को पसंदीदा लगता है। यही सरकार का काम है और इसलिए यहां आज मैं हजारों मकानों का लोकार्पण का अवसर मिला और दूसरे सैंकड़ों मकानों के शिलान्यास का भी अवसर मिला। यह मकान गरीब और मध्यम वर्गीय मानविकी आशा है। पहली बार हिंदुस्तान में मध्यम वर्ग का आदमी मकान लेने जाए और बैंक में से लोन लेने पर ब्याज में राहत नहीं मिलती थी यह पहली मोदी सरकार ऐसी है जिसने अगर मध्यम वर्ग के आदमी को मकान खरीदना है तो बैंक के ब्याज में भारत सरकार राहत देती है मध्यम वर्ग का आदमी मकान बना सके उसके लिए व्यवस्था करता है।

भाइयों-बहनों आज यहां भारत के पेट्रोलियम विभाग के भी, HPCL, मुद्रा दिल्ली पेट्रोलियम प्रोडक्ट पाइपलाइन उसी कैपेसिटी का एक्सपेंशन करने का सोचा है। आप सोचो हम गैस बेज इकोनॉमिक के तरफ आगे बढ़ रहे हैं। मैं जब गुजरात बाहर कहीं जाता तो लोगों को कहता किरण ग्राम में पाइप लाइन से गैस मिलता है तो लोगों को आश्चर्य होता था आज हमने हिंदुस्तान में जगह जगह पर पाइप लाइन से घरों में गैस पहुंचाने की दिशा में काम कर रहे हैं और यही पाइप लाइन के कामों का आज शिलान्यास हो रहा है। 36 करोड़ रुपए के काम इस विस्तार के लिए, विकास की नई ऊंचाइयां प्राप्त करने का एक बड़ा है।

मैं गुजरात के लोगों को याद दिलाना चाहता हूं, पता नहीं क्यों, जबसे गुजरात अलग अलग हुआ तब से बात करें देखा होगा कि दिल्ली में गुजरात के अनुकूल कोई नेतागिरी हो, और गुजरात में अनुकूल कोई नेतागिरी दिल्ली में हो, उतना ही समय गुजरात को कुछ मिला हो। जिस वक्त सरदार वल्लभ भाई पटेल थे, उस समय इस नर्मदा योजना की बात आई थी। उस समय सोमनाथ के भव्य मंदिर की बात आई, और फिर भी उस समय के प्रधानमंत्री उसमें भी बीच में आए थे। पर वह तो सरदार साहब की ताकत थी जितना हो जीये, थोड़ा बहुत कुछ करते करके गए। फिर हमारे सामने कुछ नहीं रहा फिर से खराब दिन शुरू हो गए, बाद में मोरारजी भाई आए। मोरारजी भाई दिल्ली में थे और गुजरात में बाबू भाई जसभाई थे। इन दोनों का मेल था, ऐसे ऊपर भी और नीचे भी एक तरह के लोग थे इसके कारण हमें मोरारजी भाई का लाभ मिला और गुजरात का कुछ भला हो ऐसे कुछ काम हुए। फिर से गुजरात के विरोध में सब चला उसके बाद अटल जी की सरकार आई और गुजरात में केशुभाई की सरकार आई। सालों बाद एक ही पार्टी की नीचे सरकार और एक ही पार्टी की ऊपर सरकार आई और उस टाइम भयंकर भूकंप आया। अगर जो दिल्ली में अटल जी की सरकार ना होती जबकि सरकार ना होता तो भूकंप के बाद गुजरात 15 साल के बाद खड़ा हो सकता वह भी एक प्रश्न है। उस वक्त अटल जी की सरकार थी पूरा साथ था, मदद भी थी। नीचे भी सरकार, ऊपर भी सरकार और गुजरात जिस को पसंद है ऐसे लोगों की सरकार और उसके कारण गुजरात का भला हुआ। फिर से 10 साल का ज़ोल आया। काम में बाधा डालना, रुकावट डालना। मैं दिल्ली जाकर मुख्यमंत्री था तब प्रधानमंत्री को कहता था कि मुझे गेट डालने दो तो प्रधानमंत्री मुझे कहते थे, अच्छा मोदी जी अभी तक वह काम नहीं हुआ है? 3 महीने बाद जब जाता था तो कि मुझे कहते थे कि मोदी जी अभी तक नहीं हुआ है? 6 महीने बाद फिर से ज्यादा था तब भी पूछते अच्छा मोदी जी अभी तक नहीं हुआ है? इस तरह ही लटका के रखा था और जिस दिन हमारी सरकार बनी 14 वें दिन ही निर्णय कर दिया था। दिल्ली में गुजरात के लिए जिसको नापसंदगी ना हो ऐसी सरकार हो तब गुजरात को उसका लाभ लेने की एक भी तक गंवानी नहीं चाहिए। 70 साल का लेना बाकि पड़ा है गुजरात के लोगों का और मुझे विश्वास है कि विजय भाई के नेतृत्व में यह सरकार जिस तरह सक्रियता से काम कर रही है, एक के बाद एक नई योजना भारत सरकार के सामने रख रही है और उसके कारण विकास की संभावनाएं बनी है। उसी का कारण है कि आज यह रो रो फेरी सर्विस शुरू हुई है। आप सोचो जहां जाने के लिए 8 से 9 घंटे लगते थे वहां आप आराम से अपनी गाड़ी लेकर जा सकते हो अभी तो पहला चरण है जल्द दूसरा चरण होगा तब आप अपनी कार लेकर ही अंदर बैठ सकते हैं कार में ही बैठना है और मूंगफली खानी है और मूंगफली पूरी करो तब तक तो भावनगर आ गया होगा। यह काम तभी ही शक्य बनेगा जब भारत सरकार का पूरा साथ हो।

इसलिए भाइयों बहनों मेरे लिए सौभाग्य की घड़ी है, पावागढ़ की महाकाली, लोगों की इतनी श्रद्धा हर वक्त हम उनके लिए कुछ ना कुछ करते गए लोगों के रहने की व्यवस्था करते गए चापानेर में बहुत अच्छा वन बना दिया कारण यात्रा धाम के लोगों के लिए सुख सुविधा बड़े। आज एक बहुत महत्वकांशी काम और दीवाली के बाद नए साल में पहला काम मां काली के धाम का पुनर्निर्माण का हो उससे बड़ा आशीर्वाद कौन सा मिले? और मुझे पता है कि उत्तम से उत्तम काम होगा। गुजरात के हर भाविक भक्तों को सरलता के साथ मां काली के चरणों में जाकर खुद की आशा आकांक्षा लेकर जाने की सुगम व्यवस्था होगी। वडोदरा नगर में लंबे-लंबे फ्लाईओवर हो रहे हैं। और अभी तो इंडिया टुडे के कारण वडोदरा नगरी का जय जयकार हो रहा है। वडोदरा के नागरिक अभिनंदन के पात्र हैं। स्वच्छता की दृष्टिसे उन्होंने आज हिंदुस्तान में नंबर वन

पा लिया है। इसलिए सबसे पहले हमें वडोदरा के नागरिकों को अभिनंदन देता हूं क्या आपने स्वच्छता का बीड़ा उठाया और देश के सामने एक सीमाचिन्हरूप काम किया, आप अनेक अनेक अभिनंदन के अधिकारी हैं।

भाइयों बहनों यह विकास की इतनी सारी जो योजनाएं हैं अगर मुझे एक साथ यह सारी योजना बोलनी हो तो भी तकलीफ पड़े इतनी सारी योजना है। एक अद्भुत काम किया है और मैं आप सबको एक बात का आग्रह करता हूं कि 31 अक्टूबर सरदार वल्लभ भाई पटेल की जन्म जयंती है। 31 अक्टूबर सरदार वल्लभ भाई पटेल की जन्म जयंती, हम लोग पिछले कई सालों से समग्र देश में एक भारत श्रेष्ठ भारत का अभियान चला रहे हैं। सरदार साहब के जन्मदिन को शुरू किया है और उसके कारण बड़ा कार्यक्रम शुरू किया है रन फॉर यूनिटी, एकता के लिए दौड़। गुजरात तो पिछले 5-7 साल से यह एकता के लिए दौड़ का कार्यक्रम का आयोजन कर रहा है। इस बार भी 31 अक्टूबर को समग्र हिंदुस्तान दौड़ता होना चाहिए, एकता के लिए दौड़ता होना चाहिए, उच्च-नीच के भाव से मुक्त होकर, जातिवाद के जहर से मुक्त होकर, शिक्षित-अशिक्षित के भेद से मुक्त होकर, स्त्री और पुरुष के बीच के भेद से मुक्त होकर, कंधे से कंधा मिलाकर समग्र देश 31 अक्टूबर को सरदार साहब की जन्म जयंती एकता की दौड़।

मैं आज गुजरात की धरती से सरदार वल्लभ भाई पटेल की इस पवित्र धरती से मैं देश के हर नागरिक से आह्वान करता हूं, हर राज्य सरकारों से आह्वान करता हूं, हर नगरपालिका, महानगरपालिका से आह्वान करता हूं, स्कूल-कॉलेज के छात्रों से आह्वान करता हूं कि 31 अक्टूबर, सरदार वल्लभभाई पटेल की जन्म जयंती पर देश की एकता और अखंडता के लिए संकल्प लेने के लिए Run for Unity, एकता के लिए दौड़ यह हर जगह पर आयोजित हो। वडोदा में, गुजरात में सभी जगह पर आन-बान-शान के साथ यह करके सरदार साहब को श्रद्धांजलि दी जाए। इसी एक अपेक्षा के साथ मैं फिर एक बार आप सबका हृदय से बहुत-बहुत धन्यवाद करता हूं। मेरे साथ दोनों मुठ्ठी बंद करके पूरी ताकत से बोलिए भारत माता की जय!

भारत माता की जय! भारत माता की जय!

वन्दे मातरम्। वन्दे मातरम्। वन्दे मातरम्। धन्यवाद।

अमित कुमार / तारा / NP/RP

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

04-अक्टूबर-2017 20:05 IST

ICSI के स्वर्णिम जयंती वर्ष समारोह में प्रधानमंत्री के भाषण का मूल पाठ

मंत्रिमंडल के मेरे सहयोगी कॉर्पोरेट अफेयर्स राज्यमंत्री श्री पी पी चौधरी जी, Institute of Company Secretaries of India के अध्यक्ष, युवा अध्यक्ष श्याम अग्रवाल जी

इस कार्यक्रम में उपस्थित सभी महानुभाव और technology के माध्यम से भिन्न-भिन्न स्थानों पर भी आप के institute में बैठे हुए सारे साथियो,

आज ICSI अपने 50वें वर्ष में प्रवेश कर रहा है। इस अवसर पर मैं इस संस्था से जुड़े सभी लोगों को बहुत-बहुत बधाई देता हूँ।

करीब 49 वर्ष की यात्रा में भी जिन-जिन ने योगदान दिया है, उन सबका भी अभिनंदन करता हूँ। आज मुझे खुशी है कि एक विशिष्ट प्रकार के विद्वानों के बीच मैं आया हूँ, जो इस बात के लिए जिम्मेदार हैं कि देश में मौजूदा प्रत्येक कम्पनी कानून का पालन करे, अपने बहीखातों में गड़बड़ी न करे, पूरी पारदर्शिता रखे। आप अपनी जिम्मेदारी जिस तरह से निभाते हैं, उसी से देश का 'Corporate Culture' कैसा होगा, ये तय होता है।

आपकी संस्था का motto है- **"सत्यम वद, धर्म चर"**- यानी सत्य बोलो और नियम-कानून का पालन करो। आपकी दी हुई सही या गलत सलाह देश के Corporate Governance को प्रभावित करके ही रहती है।

साथियो, कई बार ऐसा भी होता है जब शिक्षा एक दी गई हो, लेकिन उसे ग्रहण वाले लोगों का आचरण भिन्न-भिन्न रहता है। जैसे एक ही शिक्षा युधिष्ठिर ने भी ली थी, दुर्योधन ने भी ले ली। लेकिन बर्ताव दोनों का बिल्कुल अलग रहा।

महाभारत में दुर्योधन ने कहा- आप कहते हैं सत्यम वद, धर्म चर? दुर्योधन ने कहा-

जानामि धर्म न च मैं प्रवृत्तिः।
जानामि धर्म न च मैं निवृत्तिः।

यानी ऐसा नहीं है "मैं धर्म और अधर्म के बारे में नहीं जानता, लेकिन धर्म के मार्ग पर चलना मेरी प्रवृत्ति नहीं बन पाई और अधर्म के मार्ग से मैं निवृत्त नहीं हो सका।"

ऐसे ही लोगों को आपकी संस्था का 'सत्यम वद, धर्म चर' का पाठ सही रास्ते पर जाने की दिशा देता है, उसकी याद दिलाता है। देश में इमानदारी को, पारदर्शिता को institutionalize करने में आपके संस्थान की बहुत बड़ी भूमिका है। दोस्तो, आचार्य चाणक्य ने कहा है:

एकेन शुष्क वृक्षेण दह्यमानने वह्निमना ।
दह्यते तद्वनं सर्वं कुपुत्रेण कुलं यथा॥

यानी जैसे पूरे वन में अगर एक ही सूखे वृक्ष में आग लग जाए तो पूरा वन जल जाता है, उसी प्रकार परिवार में कोई एक भी गलत काम करे तो पूरे परिवार की मान-मर्यादा, इज्जत, प्रतिष्ठा, सब धूल में मिल जाती है।

साथियो, ये बात संस्था के लिए भी लागू होती है, देश के लिए भी लागू होती है और शत-प्रतिशत लागू होती है। हमारे देश में भी मुट्ठीभर लोग ऐसे हैं जो देश की प्रतिष्ठा को, हमारी ईमानदार सामाजिक संरचना को कमजोर करने का काम करते रहते हैं। इन लोगों को सिस्टम और संस्थाओं से हटाने के लिए सरकार ने पहले ही दिन से 'स्वच्छता अभियान' शुरू किया

हुआ है। और इस 'स्वच्छता अभियान' के तहत सरकार बनते ही Special Investigation Team - SIT बनाई गई, जो सुप्रीम कोर्ट ने कई वर्षों पहले कहा था। हमारी सरकार बनने के बाद पहली ही Cabinet में वो काम कर दिया है।

विदेश में जमा काले धन के लिए बहुत कठोर Black Money Act बनाया गया। कई नए देशों के साथ Tax Treaties की गई और पुराने टैक्स समझौतों में बदलाव किया गया। उनके साथ बैठ करके नए तरीके ढूंढे। Insolvency और Bankruptcy code बनाया गया। 28 साल से अटका हुआ बेनामी संपत्ति कानून लागू किया गया। कई वर्षों से लटका हुआ Good & Simple Tax -GST लागू किया गया। Demonetization का फैसला लेने की हिम्मत भी इसी सरकार ने दिखाई।

भाइयो और बहनों, इस सरकार ने देश में संस्थागत ईमानदारी को मजबूत करने के लिए काम किया है। ये सरकार के अथक परिश्रम का ही परिणाम है कि आज देश की अर्थव्यवस्था कम cash के साथ चल रही है। Demonetization के बाद Cash to GDP ratio 9% आ गया है, नौ प्रतिशत आ गया है।

9 नवम्बर, इतिहास में भ्रष्टाचार मुक्ति के अभियान का प्रारम्भ दिवस माना जाएगा, 8 नवम्बर। 8 नवम्बर, 2016 से पहले ये ratio 12% था आज 9% है। अगर देश में, देश की अर्थव्यवस्था में ईमानदारी का नया दौर शुरू नहीं हुआ होता तो क्या ये संभव था? और आपसे अच्छा इसको कौन जानता है कि पहले जिस तरह आसानी से black money का लेन-देन होता था, अब वैसा करने में पहले लोगों को 50 बार सोचना पड़ता है; और मुझसे ज्यादा आप जानते हैं इस बात को।

साथियो, महाभारत में ही एक और किरदार थे; शल्य का नाम सुना होगा आपने? ये शल्य वैसे कर्ण के सारथी थे। उधर अर्जुन के साथ कृष्ण थे इधर कर्ण के सारथी शल्य थे। लेकिन ये शल्य जो भी युद्ध में था, उनको हतोत्साहित करने का ही काम करता। उससे क्या लड़ोगे, तुम्हारे पास तो कोई दम नहीं है, अरे, तुम्हारे घोड़े में दम नहीं है; तुम्हारे रथ में... ऐसे ही, बस ये ही काम। अब ये शल्य इसान ही ऐसा नहीं है, शल्य वृत्ति है। और कोई महाभारत के युग में ही ऐसा नहीं, आज के युग में भी है। कुछ नहीं होगा, कैसे करोगे?

जब ये डोकलाम हुआ तो लोग... निराशा, ये तो कुछ नहीं कर सकता है, हमारा....। कुछ लोगों को निराशा फैलाने में बड़ा आनंद आता है, बहुत आनंद। उनको रात को बहुत अच्छी नींद आती है। और ऐसे लोगों के लिए आजकल एक quarter की growth कम होना, जैसे सबसे बड़ी खुराक मिल गया है। अब ऐसे लोगों को पहचानने की जरूरत है। ऐसे लोगों को जब data अनुकूल होता है, तो उन्हें वो institute भी अच्छे लगते हैं, वो process भी सही लगता है। लेकिन जैसे ही ये data उनकी कल्पना के प्रतिकूल होता है, तो ये कहते हैं संस्थान ठीक नहीं है, process ठीक नहीं है, करने वाले ठीक नहीं हैं, भांति-भांति के आरोप लगाते हैं। किसी भी नतीजे पर पहुंचने से पहले ऐसे लोगों को पहचानना बहुत जरूरी है। ये शल्य वृत्ति को जब तक हम नहीं जानेंगे, हम सत्य के रास्ते की जो सोच रहे हैं ना- सत्यम वद।

साथियो क्या आपको लगता है कि ऐसा पहली बार हुआ है कि देश में GDP की growth किसी तिमाही में 5.7 percent तक पहुंची है? क्या ये पहली बार हुआ है क्या? पिछली सरकार में 6 साल में 8 बार ऐसे मौके आए, जब विकास दर 5.7 प्रतिशत या उससे नीचे गिरी थी। देश की अर्थव्यवस्था ने ऐसे quarters भी देखे हैं, जब विकास दर, भूलिए मत पुरानी बातों को, जब विकास दर 0.2 प्रतिशत, 1.5 percent, यहां तक गिरी थी। ऐसी गिरावट अर्थव्यवस्था के लिए और ज्यादा खतरनाक होती है क्योंकि उस कालखंड में... खतरनाक क्यों होती है मैं बताता हूं- क्योंकि इन वर्षों में जब ये growth rate इतनी नीचे गिरी थी, भारत Higher Inflation, Higher Current Account Deficits और Higher Fiscal Deficits से जूझ रहा था। ऐसी संकट की घड़ी में ये हाल हुआ था।

साथियो, अगर 2014 के पहले के दो वर्ष, यानी साल 2012-13 और और 13-14 देखें तो औसत वृद्धि 6 प्रतिशत के आसपास थी। अब कुछ लोग ये कह सकते हैं कि आपने दो ही साल क्यों लिए? क्योंकि आजकल शल्य वृत्ति कुछ भी काम कर सकती है।

दो साल का संदर्भ मैंने इसलिए लिया, क्योंकि इस सरकार के तीन साल और पिछली सरकार के आखिरी के दो सालों में GDP data तय करने का तरीका एक ही रहा है। Institution से, process से, और इसलिए तुलना करना स्वाभाविक, सरल होता है। जब Central Statistics Office, CSO ने इस सरकार के दौरान GDP में 7.4 प्रतिशत की वृद्धि का data release किया था, तो यही लोगों ने इसे खारिज कर दिया था। और क्या कहा था कि ground reality में हमें ऐसा लग नहीं रहा है। हमारी यो शल्य वृत्ति है, उसमें ये फिट नहीं होता है।

वो ही Institution उस समय पंसद नहीं थी, पद्धति पंसद नहीं थी, लेकिन 5.6 हुआ; एक दम मजा आ गया। हां ये

Institution अच्छी है। और ऐसे लोग कहते थे कि उन्हें feel नहीं हो रहा। अर्थव्यवस्था इतनी तेजी से आगे बढ़ रही है, ये हमारे गले नहीं उतरता है।

इसलिए इन चंद लोगों ने ये प्रचार शुरू कर दिया कि GDP तय करने के तरीके में कुछ गड़बड़ है। तब ये लोग डाटा के आधार पर नहीं, अपनी feeling पर बातें कर रहे थे। और इसलिए उन्हें अर्थव्यवस्था में विकास होता नहीं दिख रहा था।

साथियो, लेकिन जैसे ही पिछले दो quarter में विकास दर 6.1 और 5.7 प्रतिशत हुई, इन्हीं शल्य वृत्ति को ये data बहुत प्यारा लगने लगा, बहुत भाने लगा। Hashh.. कुछ हमारे मन का हो गया।

साथियो, मैं न कोई अर्थशास्त्री हूँ और न ही कभी मैंने अर्थशास्त्री होने का claim किया है। लेकिन आज जब ये अर्थव्यवस्था पर इतनी चर्चा हो रही है, तो मैं आपको जरा flash back में भी लेकर जाना चाहता हूँ। एक वो दौर था जब अंतर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के संदर्भ में भारत को एक नए group का हिस्सा बनाया गया था। और ये नया ग्रुप यानी आपको लगता होगा- G7 होगा, G8 होगा, G20 होगा, इसमें कहीं रखा होगा, जी नहीं। इस ग्रुप का नाम था Fragile Five.

इसे ऐसा dangerous group माना गया था जिसकी खुद की अर्थव्यवस्था तो एक समस्या थी, लेकिन दुनिया को लग रहा था कि वैश्विक अर्थव्यवस्था की recovery में भी ये बाधा बन रहे हैं; और उसमें भारत का नाम था। यानी हमारा काम ठीक नहीं कर पाएंगे लेकिन हम औरों का भी बुरा करेंगे, ये इसलिए Fragile Five के group में ये भारत का नाम जोड़ दिया गया था।

मेरे जैसे अर्थशास्त्र के कम जानकार को अब भी ये समझ नहीं आ रहा है कि उस समय बड़े-बड़े अर्थशास्त्रियों के रहते ऐसा कैसे हो गया? आपको ये अवश्य याद होगा कि हमारे देश में उस समय GDP growth से ज्यादा Inflation में growth थी, इसी की चर्चा होती थी। Fiscal Deficit और Current Account Deficit में growth पर चर्चा प्रमुख रहती थी।

रुपए के मुकाबले डॉलर की कीमत में growth होने पर अखबारों में Headline खबरें बना करती थीं। यहां तक की Interest Rate में growth भी सभी की चर्चा में शामिल हुआ करता था। देश के विकास को विपरीत दिशा में ले जाने वाले ये सभी Parameters तब कुछ लोगों को पसंद आते थे।

अब जब वही Parameters सुधरे हैं, विकास को सही दिशा मिली है तो ऐसे कुछ लोगों ने आंखों पर पर्दा डाल लिया है। इस पर्दे के कारण उन्हें दीवार पर स्पष्ट लिखी चीजें भी नहीं दिखाई दे रहीं हैं। और मैं आपके सामने रखना चाहता हूँ। मैं वो slide भी आपको दिखा रहा हूँ-

10 प्रतिशत से ज्यादा की Inflation कम होकर अब इस साल औसतन 2.5 प्रतिशत पर आ गई है। कहां 10 कहां अढ़ाई? लगभग 4 प्रतिशत का Current Account Deficit, औसतन 1 प्रतिशत के आसपास आ गया है। आप देख सकते हैं।

इन सारे Parameters को सुधारते समय, केंद्र सरकार अपना Fiscal Deficit पिछली सरकार के 4.5% प्रतिशत से घटाकर 3.5% प्रतिशत पर ले आई है।

आज विदेशी Investors भारत में रिकॉर्ड निवेश कर रहे हैं। भारत का Foreign Exchange Reserve लगभग 30 हजार करोड़ डॉलर से बढ़कर 40 हजार करोड़ डॉलर के पार कर गया है। 25 प्रतिशत वृद्धि।

अर्थव्यवस्था में ये सुधार, ये विश्वास, ये सफलताएं शायद उनकी नजर में मायने नहीं रखती हैं। इसलिए देश के लिए अभी ये सोचने का समय है कि कुछ लोग देशहित साध रहे हैं या किसी और का हित साध रहे हैं।

साथियों, ये बात सही है कि पिछले तीन वर्षों में 7.5 प्रतिशत की औसत ग्रोथ हासिल करने के बाद इस वर्ष अप्रैल-जून की तिमाही में GDP ग्रोथ में कमी दर्ज की गई, हम इसका इंकार नहीं करते हैं। लेकिन ये बात भी उतनी ही सही है कि सरकार इस trend को reverse करने के लिए पूरी तरह से प्रतिबद्ध है, क्षमतावान है और हम फैसले लेने के लिए तैयार हैं।

कई जानकारों ने इस बात पर सहमति जताई है कि देश की अर्थव्यवस्था के fundamentals strong हैं। हमने reform से जुड़े हुए कई महत्वपूर्ण फैसले लिए हैं और ये प्रक्रिया लगातार जारी है। देश की financial stability को भी maintain रखा जाएगा। निवेश बढ़ाने के और आर्थिक विकास को गति देने के लिए हम हर आवश्यक कदम उठाते रहेंगे।

मैं आश्वस्त करना चाहता हूँ कि सरकार द्वारा लिए गए कदम, देश को आने वाले वर्षों में विकास की एक नई league में रखने वाले हैं। आज भी, आज भी रिजर्व बैंक ने कहा है कि next quarter के जो आने वाले हैं, आंकड़े की संभावना बताई है, उन्होंने बढ़ते-बढ़ते 7.7 तक ले जाएगा, ये आज रिजर्व बैंक ने भी अनुमानित किया है।

वर्तमान में अगर इन structural reform की वजह से किसी सेक्टर को तत्काल सहायता की आवश्यकता है, तो सरकार उसके प्रति सजग भी है और वो चाहे MSME हो, या Export सेक्टर हो या फिर हमारी Non-Formal Economy का हिस्सा। और आज इस मंच पर मैं अपनी एक बात फिर दोहराना चाहूंगा और आपके माध्यम से जल्दी पहुंचेगा, कि बदलती हुई देश की इस अर्थव्यवस्था में अब ईमानदारी को premium मिलेगा। ईमानदारों के हितों की सुरक्षा की जाएगी।

मैं ये जानता हूँ कि जो लोग अब मुख्यधारा में लौट रहे हैं, ऐसे कुछ व्यापारियों के मन में एक डर रहता है कि कहीं ये नए कारोबार को देख करके पुराने की कल्पना कर करके पुराने रिकॉर्ड तो नहीं खंगाले जाएंगे? मैं फिर एक बार विश्वास दिलाता हूँ ऐसा नहीं होने दिया जाएगा। क्योंकि पहले सरकार, सरकारों के नियम, लोगों का आचरण ऐसा था, ये सब शायद करना पड़ा होगा। और उस मात्र के उसके कारण अब आपको सही धारा में आने से रोकना, इससे बड़ा कोई पाप नहीं हो सकता है। और इसलिए हमारी सरकार का इरादा है कि जितने लोग ईमानदारी की मुख्यधारा में आना चाहते हैं, उनके लिए स्वागत है। और पुरानी चीजों को वहीं छोड़ करके आइए। आप चिंता मत कीजिए, आगे के लिए हम आपके साथ रहेंगे।

उसी प्रकार से मैं आज GST के संबंध में भी कहना चाहता हूँ। तीन महीने हुए। तीन महीने के बाद क्या हो रहा है, क्या नहीं- हर चीज को हमने भली-भांति देखा है। बारीक से बारीक चीजों के feedback लिए हैं। और GST Council की मीटिंग के लिए मैंने उनसे कहा है कि अब तीन साल हो गए हैं, हम पूरी तरह उसका review करें, और जहां-जहां कठिनाइयां हैं, व्यापारी आलम को दिक्कत है, technology की दिक्कत है, form भरने की दिक्कत है, जो भी दिक्कत है- उसको एक बार review किया जाए और सभी political पार्टियां, सभी सरकारें, क्योंकि सभी राज्य सरकारों में कोई न कोई पॉलिटिकल पार्टी है- मिल करके क्या बदलाव करने की आवश्यकता होगी, उस पर करें और मैं देश के व्यापारी आलम को विश्वास दिलाना चाहता हूँ हम लकीर के फकीर नहीं हैं। और हम कभी ये दावा नहीं करते हैं सब ज्ञान हमको ही है। लेकिन सही दिशा में जाने का प्रयास है। जहां कहीं रुकावटें हैं, तीन महीने में जो अनुभव आया है, उसके आधार पर आवश्यक जो भी बदलाव करना होगा, सुधार करना होगा, ये सरकार आपके साथ है।

साथियों, वर्तमान आर्थिक स्थिति की चर्चा करते हुए मैं कुछ जानकारियां आपके सामने रखना चाहता हूँ। इन जानकारियों से क्या मतलब निकलता है, उसका निर्णय मैं आप लोगों पर छोड़ता हूँ, मैं मेरे देशवासियों पर छोड़ रहा हूँ।

साथियों, मुझे पक्का यकीन है कि जब आपने अपनी पहली गाड़ी खरीदी थी, मैं नहीं मानता हूँ कि आपमें से किसी ने उसे मजबूरी में खरीदा होगा। गाड़ी खरीदने से पहले आपने रसोई का बजट देखा होगा, बच्चों की पढ़ाई का खर्च देखा होगा, बड़े-बुजुर्गों की दवाई का खर्च देखा होगा। और इसके बाद अगर पैसे बचते हैं, तब जाकर घर या गाड़ी के बारे में सोचा होगा। सीधी-सीधी बात है? ये हमारे समाज की बहुत basic सोच है कि ऐसे में अगर देश में जून महीने के बाद passenger कारों की बिक्री में लगभग 12 प्रतिशत वृद्धि हुई हो, तो आप उसको क्या कहेंगे भाई?

आप क्या कहेंगे जब आपको पता चलेगा कि जून के बाद commercial गाड़ियों की बिक्री में 23 प्रतिशत से ज्यादा वृद्धि हुई है? आप क्या कहेंगे जब देश में दो पहिया वाहनों की बिक्री में 14 प्रतिशत से ज्यादा वृद्धि हुई है। आप क्या कहेंगे जब Domestic Air Traffic, हवाई जहाज में जाने वाले यात्रा करने वालों की संख्या में पिछले दो महीने में 14 प्रतिशत वृद्धि हुई है। आप क्या कहेंगे जब अंतरराष्ट्रीय Air freight (फ्रेट) Traffic यानि हवाई जहाज के जरिए माल ढुलाई में लगभग 16 प्रतिशत वृद्धि हुई है। आप क्या कहेंगे जब देश में Telephone Subscriber में 14 प्रतिशत से ज्यादा वृद्धि हुई है।

साथियों, ये वृद्धि संकेत दे रही हैं कि लोग गाड़ियां खरीद रहे हैं, phone connection ले रहे हैं, हवाई यात्राएं कर रहे हैं। ये Indicators शहरी क्षेत्रों में Demand की growth को दर्शाते हैं। अब अगर ग्रामीण Demand से जुड़े, Indicators को देखें तो हाल के महीनों में ट्रैक्टर की बिक्री में 34 प्रतिशत से ज्यादा वृद्धि हुई है।

FMCG के क्षेत्र में भी Demand-Growth का trend सितंबर महीने में बढ़ता हुआ दिखाई दे रहा है। साथियों, ऐसा तब होता है जब देश के लोगों का विश्वास बढ़ता है। जब देश के लोगों को लगता है कि अर्थव्यवस्था मजबूत है। अभी रिलीज हुआ PMI का Manufacturing Index Expansion Mode ये दर्शा रहा है कि Future Output Index तो 60 का आंकड़ा पार कर चुका है। हाल में आए आंकड़ों को देखें तो कोयले, बिजली, Steel और natural gas से production में भी काफी

अच्छी वृद्धि दर्ज की गई है।

साथियों, personal loan के disbursal में भी तेज वृद्धि देखी जा रही है। Housing Finance Companies और Non-Banking Finance Companies के द्वारा दिए गए लोन में भी काफी वृद्धि हुई है। इतना ही नहीं, capital market में अब mutual fund और Insurance में अधिक निवेश हो रहा है।

कंपनियों ने IPO's के द्वारा इस साल पहले 6 महीने में ही 25 हजार करोड़ रुपए से ज्यादा की राशि mobilize की है। पिछले साल पूरे वर्ष में ये राशि 29 हजार करोड़ तक ही पहुंची थी। Non-Financial Entities में कॉर्पोरेट बॉन्ड और Private Placement के द्वारा सिर्फ चार महीने में ही 45 हजार करोड़ रुपयों का निवेश किया गया है।

ये सारे आंकड़े देश में Financing के broad base को दर्शाते हैं, यानि भारत में अब financing केवल बैंकों के लोनों तक ही सीमित नहीं रह गई है। इस सरकार ने समय और संसाधन, दोनों के द्वारा उसके सही इस्तेमाल पर लगातार जोर दिया है। पिछली सरकार के तीन साल के काम की रफ्तार और हमारी सरकार के तीन साल के काम की रफ्तार का फर्क आपको साफ-साफ आयेगा।

ये roads देख लीजिए, पिछली सरकार के आखिरी तीन सालों में गांवों में 80 हजार किलोमीटर सड़क बनी थी, तीन सालों में। हमारी सरकार के तीन साल में 1 लाख 20 हजार किलोमीटर सड़क बनाई है। यानि 50 प्रतिशत से ज्यादा ग्रामीण सड़कों का निर्माण हुआ है। पिछली सरकार ने अपने आखिरी के तीन साल में 15 हजार किलोमीटर National Highways बनाने के काम award किया था।

हमारी सरकार ने अपने तीन साल में 34 हजार किलोमीटर से ज्यादा National Highways बनाने का काम award किया है। कहां 15 हजार, कहां 34 हजार। अगर इसी सेक्टर में Investment की बात की जाए, तो पिछली सरकार ने अपने आखिरी के तीन वर्षों में भूमि लेने और सड़कों के निर्माण पर 93000 करोड़ की राशि खर्च की थी। इस सरकार में ये राशि बढ़कर 1 लाख 83000 करोड़ रुपए से ज्यादा हो गई है। यानि लगभग दोगुना investment इस सरकार ने करके दिखाया है।

आपको भी पता होगा कि Highways के निर्माण में सरकार को कितने प्रशासनिक और वित्तीय कदम उठाने पड़ते हैं। ये आंकड़े दिखाते हैं कि कैसे सरकार ने Policy Paralysis से निकल करके Policy Maker और Policy Implementer का रोल अदा करके दिखाया है।

अगर इसी तरह रेलवे सेक्टर की बात करें तो पिछली सरकार के आखिरी तीन वर्षों में लगभग 1100 किलोमीटर नई रेल लाइन का निर्माण हुआ था। इस सरकार ने तीन वर्षों में 1100 से 2100 किलोमीटर से ज्यादा तक पहुंच गए हम। यानि हमने लगभग दोगुनी गति से नई रेलवे लाइन बिछाई है।

पिछली सरकार के आखिरी तीन सालों में 1300 किलोमीटर रेल लाइनों का दोहरीकरण हुआ, double line. जबकि इस सरकार के तीन साल में 2600 किलोमीटर रेल लाइन का दोहरीकरण हुआ है। यानि हमने दोगुनी रफ्तार में रेल लाइनों का दोहरीकरण करके दिखाया है।

साथियों, पिछली सरकार के आखिरी के तीन वर्षों में लगभग 1 लाख 49 हजार करोड़ का capital expenditure किया गया था। इस सरकार के तीन वर्षों में लगभग 2 लाख 64 हजार करोड़ रुपए का capital expenditure किया गया है। यानि ये भी 75 प्रतिशत से ज्यादा है।

अगर अब मैं Renewable Energy की बात करूं- Solar Energy, Wind Energy, और उसके विकास की मैं चर्चा करूं- पिछली सरकार के आखिरी के तीन वर्षों में कुल 12 हजार मेगावाट की Renewable Energy की नई क्षमता जोड़ी गई थी, 12 हजार मेगावाट। अगर इस सरकार के तीन सालों की बात करें, तो 22 हजार मेगावाट से ज्यादा Renewable Energy की नई क्षमता को ग्रिड पावर से जोड़ा गया है। यानि यहां भी सरकार का Performance लगभग दोगुना अच्छा है। पिछली सरकार ने अपने आखिरी के तीन सालों में Renewable Energy पर 4 हजार करोड़ रुपया खर्च किया था। हमारी सरकार ने अपने तीन साल में इस सेक्टर पर 10600 करोड़ रुपए से भी अधिक खर्च किए हैं।

पिछली सरकार की तुलना में shipping industry में विकास की बात करें तो जहां पहले जहां Cargo Handling की growth Negative थी, वहीं इस सरकार के तीन सालों में 11 प्रतिशत से ज्यादा वृद्धि हुई है।

साथियों, देश के Physical Infrastructure से जुड़े रेल-सड़क-बिजली जैसे महत्वपूर्ण सेक्टरों के साथ-साथ, सरकार Social Infrastructure को भी मजबूत करने पर पूरा ध्यान दे रही है।

हमने Affordable Housing के क्षेत्र में ऐसे-ऐसे नीतिगत निर्णय लिए हैं, वित्तीय सुधार किए हैं, जो इस क्षेत्र के लिए अभूतपूर्व हैं।

साथियों, पिछली सरकार ने अपने पहले के तीन वर्षों में सिर्फ 15 हजार करोड़ रुपए के projects को मंजूरी दी थी, 15 हजार करोड़। इस सरकार ने अपने पहले के तीन वर्षों में 1 लाख 53 हजार करोड़ रुपए की परियोजनाओं को मंजूरी दी है। और ये वो project हैं जो गरीबों को, मध्यम वर्ग को घर देने के हमारे commitment को उस commitment की ताकत दिखाता है।

साथियों, देश में हो रहे इन चौतरफा विकास कार्यों के लिए अधिक पूंजी निवेश की भी आवश्यकता है। ज्यादा से ज्यादा विदेशी पूंजी कैसे भारत आए, इस पर भी सरकार बल दे रही है।

मुझे उम्मीद है कि आप में से कुछ को याद होगा कि जब देश में Insurance Sector के Reform की चर्चा हुई थी तो अखबारों की हेडलाइन बनती थी- मैं पिछली सरकार की बात करता हूँ- हेडलाइन बनती थी कि ऐसा हो गया तो बहुत बड़ा आर्थिक Reform माना जाएगा। खैर पिछली सरकार नहीं कर पाई। वो सरकार चली गई, लेकिन Insurance Sector में Reform नहीं हुआ। बहुत अच्छे काम हैं वो हमारे लिए छोड़कर गए हैं।

ये Reform हमने किया, इस सरकार में हुआ। और पहले जो मानसिकता थी उससे काफी अच्छा किया और अधिक किया। लेकिन वो शल्य वृत्ति की समस्या है कि उनको ये Reform नजर ही नहीं आया। जो कभी headline हुआ करता था कि ऐसा होगा तो ऐसा होगा, होने के बाद शल्य वृत्ति रुकावट बन गई। क्योंकि ये पसंद इसलिए नहीं आता है ये Reform उस दौर में नहीं हुआ। लेकिन उनकी पसंद की सरकार ने नहीं किया, इसलिए उन्हें ये Reform अब Reform बड़ा लगता। और जो लोग Reform-Reform के गीत गाने वालों को भी मैं बताना चाहता हूँ कि पिछले तीन वर्षों में 21 sectors में 87 छोटे-बड़े Reform करने का काम इस सरकार ने करके दिखाया है। चाहे Construction सेक्टर हो, चाहे Defence सेक्टर हो, चाहे Financial Services का सेक्टर हो, चाहे Food Processing का हो, जैसे कितने ही सेक्टरों में निवेश के नियमों में बड़े बदलाव हुए हैं।

देश के आर्थिक क्षेत्र को खोलने के बाद से लेकर अब तक जितना विदेशी निवेश भारत में हुआ है, उसकी तुलना अगर पिछले तीन वर्षों में हुए निवेश से करेंगे, तो आपको पता चलेगा कि हमारी सरकार जो Reform कर रही है, उसका नतीजा क्या मिल रहा है।

ये जो मैं आंकड़े बताने वाला हूँ- आप इस क्षेत्र के हैं, आप इसी क्षेत्र में डूबे हुए लोग हैं। लेकिन अब मैं जो आंकड़े दे रहा हूँ, मैं बिल्कुल बताता हूँ, आप चौंक जाएंगे। 1992 के बाद liberalization का कालखंड शुरू हुआ। अगर मैं उसी को एक आधार मानू तो क्या स्थिति है उसका हिसाब देखिए- liberalization से ले करके 2014 तक, 2014 से 2017 तक क्या हुआ है- Construction Sector में अब तक के Total विदेशी पूंजी निवेश का 75 percent सिर्फ इस तीन साल में आया है।

Air Transport Sector में भी अब तक के Total विदेशी पूंजी निवेश का 69 percent पिछले तीन वर्ष में आया है।

Mining Sector में अब तक के Total विदेशी पूंजी निवेश का 56 प्रतिशत, पिछले तीन साल में आया है।

Computer Software और Hardware में भी अब तक के Total विदेशी पूंजी निवेश का 53 प्रतिशत पिछले तीन वर्ष में आया है।

Electrical Equipments में भी अब तक के Total विदेशी पूंजी निवेश का 52 प्रतिशत, इसी सरकार ने तीन वर्षों में हासिल किया है।

Renewable Energy, इस सेक्टर में भी अभी तक के कुल विदेशी पूंजी निवेश का 49 प्रतिशत, इसी सरकार के तीन साल में देश ने प्राप्त किया है।

Textile Sector में अब तक के कुल विदेशी पूंजी निवेश का 45 percent इन तीन साल में आया है।

और एक चौंकाने वाली बात बताता हूं। 1980 से हमारे यहां auro-mobilization में liberalization की चर्चा रही है, 80 से। automobile industry, जिसमें पहले से ही काफी विदेशी पूंजी निवेश हो चुका है, उस सेक्टर में भी, ये आपको हैरानी होगी सुन करके, उस सेक्टर में भी कुल विदेशी पूंजी निवेश का 44 percent इसी तीन साल में आया है।

भारत में FDI inflow का बढ़ना इस बात का सबूत है कि विदेशी निवेशक देश की अर्थव्यवस्था पर कितना भरोसा कर रहे हैं। एक सरकार ने विश्वास पैदा किया है। इसी को ये नतीजा है। नीतियों के कारण विश्वास पैदा हुआ है। नीति और रीति के कारण पैदा हुआ है। और उससे भी ऊपर हमारी नीयत के कारण पैदा हुआ है।

ये सारे निवेश देश के विकास की गति को तेज करने और Job Creation में बड़ी भूमिका निभा रहे हैं। इतने road बढ़ाना, इतने रेल बढ़ाना, इतनी ये वृद्धि होना, क्या Job Create नहीं होते हैं क्या। ऐसे ही हो गया होगा क्या? लेकिन अब शल्य वृत्ति चल रही है।

साथियों, मेहनत से कमाए गए आपके एक-एक पैसे की कीमत ये सरकार भली-भांति समझती है। और मैं देशवासियों को विश्वास दिलाता हूं। और इसलिए सरकार की नीतियों और योजनाओं में इस बात का भी ध्यान रखा जा रहा है कि वो गरीबों और मध्यम वर्गों की जिंदगी तो आसान बनाएं हीं, उनके पैसों की बचत हो।

साथियों, ये सरकार की लगातार कोशिश का ही नतीजा है कि पिछली सरकार के समय, अब ये भेद देखिए कि same मध्यम वर्गीय परिवार, निम्न- वर्गीय परिवार का पैसा कितना बच रहा है। पिछली सरकार के समय जो LED बल्ब था उसकी कीमत 350 रुपए थी, अब इसकी कीमत सरकार ने 'उजाला स्कीम' का बड़ा अभियान चलाया, साढ़े तीन सौ का LED बल्ब 40-45 रुपये पर आ गया। अब मुझे बताइए जो LED बल्ब खरीदने वाला मध्यम वर्गीय, निम्न-मध्यम वर्गीय, उसकी जेब में पैसा बचा कि नहीं बचा? उसको मदद हुई कि नहीं हुई? और अब समझ में नहीं आता है उस समय 350 क्यों थे? अब वो खोज का विषय है।

साथियों, अब तक देश में 26 करोड़ से ज्यादा LED बल्ब बांटे गए हैं। अगर एक बल्ब की कीमत में औसतन 250 रुपए की भी कमी मानें तो देश के मध्यम वर्ग को इससे लगभग साढ़े 6 हजार करोड़ रुपयों की बचत हुई है। ये छोटा आंकड़ा नहीं है।

इतना ही नहीं, ये बल्ब हर घर में बिजली की खपत कम कर रहे हैं, तो इसमें बिजली का consumption कम होता है और बिजली बिल कम कर रहे हैं। इससे भी देश के मध्यम वर्ग में सिर्फ एक साल में, ये LED बल्ब लगाने वाले परिवारों में एक साल में देश में करीब-करीब 14 हजार करोड़ रुपये से ज्यादा अनुमानित राशि की बचत हुई है जी, Fourteen thousand crore. पहले मैंने बताया LED बल्ब खरीदी में 6 हजार, बिजली consumption में 14 हजार करोड़। 20 हजार करोड़ रुपये करीब-करीब बचना। ये अपने-आप में मध्यम वर्गीय परिवारों में कितनी ताकत देता है।

सरकार ने कोशिश की और उसकी वजह से जहां local bodies हैं, अपनी street light, local bodies की जो street light हैं, उसमें भी LED बल्ब लग रहे हैं। काफी शहरों ने लगाए हैं। उन नगरपालिका, महानगर पालिकाओं को भी आर्थिक फायदा हो रहा है। अगर हम Tier-II cities देखें, जिसका एक मोटा-मोटा मैं अंदाज करता हूं, तो करीब-करीब सालाना उनका बिजली बिल 10 से 15 करोड़ रुपये कम हुआ है। 10-15 करोड़ रुपये एक नगरपालिका में खर्चा कम होने का मतलब, उस नगर के अंदर सुविधाएं बढ़ाने के लिए उसके पास आर्थिक व्यवस्था पनपी है।

सरकार ने मध्यम वर्ग को घर बनाने के लिए पहली बार- हमारे देश में मध्यम वर्ग को घर बनाने में ब्याज दर कभी भी राहत नहीं दी गई। पहली बार ये सरकार है जिसने मध्यम वर्ग के लोगों को अपना घर बनाने के लिए ब्याज के अंदर मदद करने के लिए फैसला किया है। मध्यम वर्ग का बोझ कम करने, निम्न मध्यम वर्ग को अवसर प्रदान करने, और गरीबों का सशक्तिकरण करने के लिए ये सरकार लगातार ठोस कदम उठाती रहती है। नीतियां बनानी होती हैं, और उसे समयबद्ध तरीके से लागू भी करना होता है। और इस मकसद को पूरा करने के लिए हम हर कदम उठाते रहे हैं।

मैं जानता हूं, राजनीति का स्वभाव मैं भलीभांति जानता हूं, समझता भी हूं कि रेवड़ी बांटने के बजाय- चुनाव आए रेवड़ी बांटो। लेकिन क्या रेवड़ी बांटने के बजाय भी देश को मजबूत करने के लिए कोई और रास्ता नहीं हो सकता है? क्या सिर्फ सत्ता और वोट की ही चिंता करेंगे? हमने वो रास्ता चुना है, कठिन है; लेकिन वो रास्ता चुना और और उसमें हम

empowerment of people, उसको हम कर रहे हैं।

और उसके कारण मेरी आलोचना भी होती है, क्योंकि रेवड़ी बांटो तो जय-जयकार करने वाले बहुत लोग हो जाते हैं। मेरी आलोचना भी होती है। बहुत आलोचना होती है, हितधारक तत्वों को काफी तकलीफ होती है। अगर मैं Direct Benefit Transfer से पैसे भेजता हूँ, तो कई जो भूतिया लोग, ghost लोग फायदा उठाते थे, अब उनके नाम कमी हो रहे हैं।

तब वो मोदी को पसंद कैसे करेगा जी? और इसलिए सामान्य मानवी को Empower करना, देश के सामान्य नागरिक को Empower करना, उस पर बल दे रहे हैं। और मैं एक बात देशवासियों के सामने नम्रतापूर्वक कहना चाहता हूँ कि मैं अपने वर्तमान की चिंता में, मैं अपने वर्तमान की चिंता में देश के भविष्य को दांव पर नहीं लगा सकता हूँ।

साथियों, इस सरकार ने Private Sector और Public Sector के साथ Personal Sector पर भी जोर दिया है। वरना हमारे देश में दो ही Private Sector, Public Sector इसी की चर्चा हो रही थी। एक और भी आयाम है Personal Sector, उसका भी उतना ही तवज्जो होना चाहिए। Personal Sector, जो लोगों की Personal aspiration से जुड़ा हुआ है। और इसलिए ये सरकार ऐसे नौजवानों को हर संभव मदद दे रही है, जो अपने दम पर कुछ करना चाहते हैं, अपने सपने पूरे करना चाहते हैं।

‘मुद्रा योजना’ से, बिना बैंक गारंटी 9 करोड़ से ज्यादा खाता धारकों को पौने चार लाख करोड़ रुपये से ज्यादा कर्ज दिया गया है। आप कल्पना कर सकते हैं without guarantee. 9 करोड़ लोगों को पौने चार करोड़ रुपया और इन 9 करोड़ में से 2 करोड़ 63 लाख नौजवान ऐसे हैं जिन्होंने पहली बार बैंकों से कारोबार के लिए ‘मुद्रा योजना’ से ये धन पाया है, कर्ज लिया है।

सरकार, Skill India Mission, Standup India, Startup India जैसी योजनाओं के माध्यम से भी स्वरोजगार को बढ़ावा दे रही है। ज्यादा से ज्यादा लोगों को Formal सेक्टर में लाने के लिए कंपनियों को आर्थिक प्रोत्साहन भी दिया जा रहा है।

साथियों, Formal सेक्टर में Employment के कुछ indicators को देखें, तो मार्च 2014 के अंत में ऐसे 3 करोड़ 26 लाख कर्मचारी थे, जो सक्रिय रूप से Employees Provident Fund Organization में हर महीने PF का पैसा जमा करा रहे थे। ये आंकड़ा याद रखना। पिछले तीन साल में ये संख्या बढ़ करके 4 करोड़ 80 लाख पहुंच गई है। कुछ लोग, शल्य- यह भी ये भूल जाते हैं कि बिना रोजगार बढ़े ये संख्या कभी बढ़ती नहीं है।

साथियों, हम सारी योजनाओं को उस दिशा की तरफ ले जा रहे हैं जो गरीब, निम्न मध्यम वर्ग और मध्यम वर्ग की जिंदगी में Qualitative Change लाए।

जनधन योजना के तहत अब तक 30 करोड़ से ज्यादा गरीबों के बैंक अकाउंट खोले जा चुके हैं, ‘उज्ज्वला योजना’ के तहत 3 करोड़ से ज्यादा महिलाओं को मुफ्त गैस कनेक्शन दिया जा चुका है, लगभग 15 करोड़ गरीबों को सरकार की बीमा योजनाओं के दायरे में लाया गया है। कुछ दिन पहले ही हर गरीब को मुफ्त बिजली कनेक्शन देने के लिए ‘सौभाग्य योजना’ की शुरुआत की गई है।

इस सरकार की सारी योजनाएं गरीबों को सशक्त कर रही हैं। लेकिन उन्हें सबसे ज्यादा नुकसान अगर किसी चीज से होता है, तो वो है भ्रष्टाचार, वो है कालेधन। भ्रष्टाचार और कालेधन पर रोक लगाने में आपके संस्थान और देश की कंपनी सेक्रेटरीज की बहुत बड़ी भूमिका है।

नोटबंदी के बाद जिन तीन लाख संदिग्ध कंपनियों के बारे में पता चला था, जिनके माध्यम से कालेधन का लेन-देन किए जाने की आशंका है, उनमें से 2 लाख 10 हजार कंपनियों का registration रद्द किया जा चुका है। हमारे देश में एक कम्पनी भी अगर बंद करो ना तो काले झंडों के जुलूस निकलते हैं। 2 लाख 10 हजार की हैं, कोई समाचार ही नहीं आ रहा है। न कोई मोदी का पुतला जला रहे हैं, यानी कितनी झूठी दुनिया चली होगी, आप कल्पना कर सकते हैं?

मुझे उम्मीद है कि Shell कंपनियों के खिलाफ इस सफाई अभियान के बाद डायरेक्टरों में भी जागरूकता बढ़ेगी और इसके असर से कंपनियों में पारदर्शिता भी आएगी और आप उस भूमिका को बहुत अच्छी तरह निभाएंगे।

साथियों, देश के इतिहास में ये कालखंड बहुत बड़े परिवर्तन का है, बहुत बड़े बदलाव का है। देश में ईमानदार और पारदर्शी शासन का महत्व समझा जाने लगा है। Corporate Governance Framework के निर्धारण के समय ICSI

Recommendations की काफी सकारात्मक भूमिका रही थी। अब समय की मांग है कि आप एक नया Business Culture पैदा करने में भी सक्रिय भूमिका निभाएं।

जीएसटी लागू होने के बाद Indirect Tax के दायरे में 19 लाख नए नागरिक आए हैं। छोटा व्यापारी हो या बड़ा, जीएसटी में समाहित ईमानदार व्यवस्था को अपनाए, इसके लिए व्यापारी वर्ग को प्रेरित करते रहना, ये मेरी आप सबसे अपेक्षा है।

आपके संस्थान से लाखों छात्र जुड़े हुए हैं और सब कोई आखिरी तक पहुंचते नहीं हैं। तो उनके लिए भी तो काम ढूँढना चाहिए ना? जो बीच में लटक जाते हैं, उनके लिए मैं काम ले आया हूँ। क्या आपका संस्थान ये बीड़ा उठा सकता है, भी मैंने बताया थोड़ी कौन सा? कम से कम एक लाख नौजवानों को GST से जुड़ी छोटी-छोटी जानकारियों की ट्रेनिंग देना।

हफ्ते-दस दिन की ट्रेनिंग के बाद ये छात्र अपने-अपने इलाकों में छोटे दुकानदारों को मदद कर सकते हैं, उन्हें GST नेटवर्क से जोड़ने में काम कर सकते हैं, रिटर्न फाइल करने में काम कर सकते हैं, मदद कर सकते हैं। उनका एक नया रोजगार का क्षेत्र खुल सकता है। और बहुत आसानी से उनकी कमाई अपने इलाके में शुरू हो जाएगी। और अगर organize way में आप इस काम को उठाते हैं, आप देखिए शायद एक लाख भी कम पड़ जाएंगे।

साथियों, 2022 में देश आजादी के 75 साल मनाएगा और हमारे दिल में एक सपना होना चाहिए कि जिन महापुरुषों ने देश की आजादी के लिए अपनी जवानी खपा दी, मौत को गले लगाया, ज़िंदगी जेलों में बिता दी, आजीवन संघर्ष करते रहे, मां भारती के लिए अनेक सपने देखे हुए थे। 2022 में उस आजादी के 75 साल हो रहे हैं।

हर हिन्दुस्तानी के लिए 2022 ऐसा ही सपना होना चाहिए कि 1942 में 'Quit India Movement' के समय देशवासियों के अंदर ज्वार आया था कि अब तो अंग्रेजों को निकाल कर रहेंगे। हम भी 2022, 75 साल के लिए ऐसे कुछ सपनों को ले करके चलें।

क्या आपका संस्थान, अगर मैं उनसे कुछ वादा चाहूँ, मैं नहीं चाहता हूँ आज ही मुझे हां कर दीजिए। लेकिन आप सोचिए, क्या आप 2022 तक कुछ संकल्प ले सकते हैं क्या? वो वादों में आपके संकल्प होंगे और उन संकल्पों को आप ही को सिद्ध करना होगा। क्या आप 2022 तक देश को एक High tax Compliant सोसाइटी बनाने का बीड़ा उठा सकते हैं?

क्या आप ये सुनिश्चित कर सकते हैं कि 2022 तक देश में एक भी Shell कंपनी नहीं रहेगी? क्या आप ये सुनिश्चित कर सकते हैं कि 2022 तक देश में हर कंपनी ईमानदारी से टैक्स भरेगी? तालियां कम हो गईं, वो कठिन कार्य था। क्या आप अपनी मदद का दायरा बढ़ाकर 2022 तक देश में एक ईमानदार Business Culture स्थापित कर सकते हैं?

मैं उम्मीद करता हूँ कि 49 साल की यात्रा आपने पूरी की है। Golden Jubilee वर्ष की शुरुआत है। ICSI इन लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए अलग से कुछ दिशा-निर्देश तय करेगा और उन्हें अपनी कार्य संस्कृति में भी शामिल करेगा।

मैं आपको इस Golden Jubilee Year के लिए अनेक-अनेक शुभकामनाएं देता हूँ। और मैं देशवासियों को भी विश्वास दिलाना चाहता हूँ, पिछले कुछ दिनों में आर्थिक विषयों पर हमारी जो आलोचना हुई है, उन आलोचनाओं को हम बुरा नहीं मानते हैं। हम एक संवेदनशील सरकार हैं। हम कठोर से कठोर आलोचना को भी हृदय से स्वीकार करते हैं और उचित स्थान पर, संवेदनापूर्ण तरीके से उन आलोचनाओं पर भी गंभीरता से सोच करके और पूरी नम्रता के साथ देश की अर्थव्यवस्था को आज पूरा विश्व भारत की तरफ जो अपेक्षाएं कर रहा है, सवा सौ करोड़ देशवासी जो अपेक्षा कर रहे हैं उसी rhythm से, उसी तेज गति से, उसी व्याप से चला के रहेंगे। ये मैं हमारे आलोचकों को भी विश्वास दिलाना चाहता हूँ। नम्रतापूर्वक विश्वास दिलाना चाहता हूँ। आलोचकों की हर बात गलत होती है, ऐसा हम मानने वालों में से नहीं हैं। लेकिन देश में निराशा का माहौल पैदा करने से बचना चाहिए।

देश में जो एक पैरामीटर मैंने दिखाया, ऐसे कई पैरामीटर हैं जो भारत की अर्थव्यवस्था की मजबूती का सबूत देते हैं, सरकार की निर्णय शक्ति का सबूत देते हैं। सरकार की दिशा और गति का सबूत देते हैं। और देश और दुनिया में भारत के प्रति जो विश्वास बढ़ा है, उसकी भलीभांति उसमें ताकत नजर आती है।

इसको हम नजरअंदाज न करें और हम नए भारत के निर्माण के लिए नया उत्साह, नया विश्वास, नई उमंग, नई संस्कृति लेकर चल पड़ें। मैं भी आप लोगों को Golden Jubilee के लिए बहुत-बहुत बधाई देते हुए, आपके क्षेत्र के होने के कारण मेरा मन कर गया इन्हीं विषयों पर आज आपसे चर्चा करूँ और इन बातों को आपके माध्यम से देशवासियों तक पहुंचाऊँ।

इसी एक विश्वास के साथ फिर एक बार बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

धन्यवाद।

अतुल तिवारी / अमित कुमार / निर्मल शर्मा

पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय

02-अक्टूबर-2017 16:57 IST

स्वच्छ भारत मिशन की तीसरी वर्षगांठ के अवसर पर प्रधानमंत्री के भाषण का मूल पाठ

उपस्थित सभी स्वच्छाग्रही भाइयो और बहनों।

आज 2 अक्टूबर है; पूज्य बापू की जन्म-जयंती, लाल बहादुर शास्त्री की जन्म-जयंती। तीन साल में हम कहां से कहां पहुंचे। मुझे बराबर याद है कि मैं अमेरिका में था UN की मीटिंग के लिए और 1 अक्टूबर रात देर से आया, और 2 अक्टूबर सुबह झाड़ू लगाने निकला था। लेकिन उस समय के सारे अखबार, मीडिया, हमारे सभी साथी दल के साथियों, यानी राजनीतिक दलों सभी, मेरी इतनी आलोचना की थी, इतनी आलोचना की थी कि 2 अक्टूबर छुट्टी का दिन होता है; हमने बच्चों की छुट्टी खराब कर दी। बच्चे स्कूल जाएंगे कि नहीं जाएंगे, बच्चों को ये क्यों काम में लगाया; बहुत, बहुत कुछ हुआ।

अब मेरा स्वभाव है बहुत चीजें में चुपचाप झेलता रहता हूं क्योंकि दायित्व भी ऐसा है कि झेलना भी चाहिए और धीरे-धीरे मेरी capacity भी बढ़ा रहा हूं झेलने की। लेकिन आज तीन साल के बाद बिना डगे, बिना हिचकिचाए इस काम में हम लगे रहे और लगे इसलिए रहे कि मुझे पूरा भरोसा था कि महात्मा जी ने जो कहा है, बापू ने जो कहा है, वो रास्ता गलत हो ही नहीं सकता।

वही एक श्रद्धा, इसका मतलब ये नहीं है कि कोई चुनौतियां नहीं हैं। चुनौतियां हैं, लेकिन चुनौतियां हैं इसलिए देश को ऐसे ही रहने दिया जाए क्या? चुनौतियां हैं इसलिए उन्हीं चीजों को हाथ लगाया जाए जहां वाह-वाही होती रहे, जयकारा बोला जाए? क्या ऐसे काम से भागना चाहिए क्या? और मुझे लगता है और जो आज देशवासी एक स्वर से उस बात से अपनी वाणी को प्रगट कर रहे हैं। ऐसा नहीं है कि गंदगी हमारी आंखों के सामने नहीं होती थी। ऐसा नहीं है कि गंदगी में हम भी कुछ योगदान नहीं देते थे और ऐसा भी नहीं है कि हमें स्वच्छता पसंद नहीं है। कोई इंसान ऐसा नहीं हो सकता है कि जिसको स्वच्छता पसंद न हो।

अगर आप रेलवे स्टेशन पर जाइए, चार बेंच पड़ी हैं, लेकिन दो में कुछ गंदगी है तो आप वहां नहीं बैठते, जहां अच्छी जगह है वहां जाकर बैठते हैं, क्यों? मूलतः प्रकृति स्वच्छता पसंद करने की है। लेकिन हमारे देश में एक ही gap रह गया और वो gap ये रह गया कि ये मुझे करना है। स्वच्छता होनी चाहिए इसमें देश में किसी को मतभेद नहीं है। समस्या यही रही कि कौन करे? और एक बात मैं बता दूं और मुझे ये निःसंकोच कहने में कोई संकोच नहीं है, ये मेरे वाक्य के बाद हो सकता है मेरी कल ज्यादा धुलाई भी हो जाए, लेकिन अब देशवासियों से क्या छिपाना? अगर 1000 महात्मा गांधी आ जाएं, एक लाख नरेन्द्र मोदी आज जाएं, सभी मुख्यमंत्री मिल जाएं, सभी सरकारें मिल जाएं, तो भी स्वच्छता का सपना कभी पूरा नहीं हो सकता है, नहीं हो सकता है। लेकिन अगर सवा सौ करोड़ देशवासी आ जाएं, तो देखते ही देखते सपना पूरा हो जाएगा।

दुर्भाग्य से हमने बहुत सी चीजें तो सरकार ने कि बना दीं, सरकारी बना दीं। जब तक वो जनसामान्य की रहती हैं, कठिनाई नहीं आती ऐसी। अब आप देखिए कुंभ का मेला होता है। हर दिन गंगा के तट पर कुंभ के मेले में यूरोप का एक छोटा सा देश इक्ठठा होता है। लेकिन वो ही सब कुछ संभाल लेते हैं, अपनी चीजें कर लेते हैं और सदियों से चला आ रहा है।

समाज की शक्ति को अगर स्वीकार करके हम चलें, जन-भागीदारी को स्वीकार करके चलें, सरकार को कम करते चलें, समाज को बढ़ाते चलें; तो ये आंदोलन कोई भी प्रश्नचिन्ह के बाद, बावजूद भी सफल होता ही जाएगा ये मेरा विश्वास है। और आज मुझे खुशी है, कुछ लोग हैं जो अभी भी इसकी मजाक उड़ाते हैं, आलोचना करते हैं, वे कभी गए भी नहीं स्वच्छता के अभियान में। उनकी मर्जी, उनकी शायद मुश्किलें होंगी। और मुझे विश्वास है, आप देखिए 5 साल आते-आते देश का मीडिया ये खबर नहीं छापेगा कि स्वच्छता में कौन काम कर रहा है, कौन भाग ले रहा है। खबर में उनकी तस्वीरें छपने वाली हैं कि इससे कौन-कौन दूर भाग रहे थे, इसके खिलाफ कौन थे? उनकी तस्वीरें छपने वाली हैं। क्योंकि जब देश स्वीकार कर लेता है तो आप चाहें या न चाहें, आपको उसके साथ जुड़ना ही पड़ता है।

आज स्वच्छता अभियान, ये न पूज्य बापू का रहा है, न ये भारत सरकार का रहा है, न ही ये राज्य सरकारों का रहा है, न ही ये municipality का रहा है। आज स्वच्छता अभियान देश के सामान्य मानवी का अपना सपना बन चुका है। और अब

तक जो सिद्धि मिली है, वो सिद्धि सरकार की है, ऐसा मेरा रस्ती भर claim नहीं है। न ये भारत सरकार की सिद्धि है, न ये राज्य सरकार की सिद्धि है, अगर ये सिद्धि है तो स्वच्छाग्रही देशवासियों की सिद्धि है।

हमें स्वराज्य मिला है, स्वराज्य का शस्त्र था सत्याग्रह। श्रेष्ठ भारत का शस्त्र है स्वच्छता, स्वच्छाग्रही। अगर स्वराज्य के केंद्र में सत्याग्रही था तो श्रेष्ठ भारत के केंद्र में स्वच्छाग्रही है। और हम भी जानते हैं दुनिया में किसी भी देश में जाते हैं, वहां की सफाई देखते हैं तो आ करके चर्चा करते हैं, अरे यार कितना साफ-सुथरा है भाई मैं तो देखता ही रह गया। ऐसे लोग मुझे कहते हैं मैं पूछता हूं, वो साफ देखा आपको आनंद आया लेकिन किसी को कूड़ा-कचरा फेंकते देखा था क्या? बोले वो नहीं देखा। मैं बोला तो हमारी समस्या वो है।

और इसलिए खुल करके इसके लिए चर्चा, हम डरते थे, पता नहीं क्यों चर्चा नहीं करते थे। राजनेता इसलिए चर्चा नहीं करते थे, सरकारें इसलिए चर्चा नहीं करती थीं, उनको डर लगता था कि ये कहीं हमारे माथे पर न पड़ जाए। अरे भाई, पड़ेगा तो पड़ेगा, क्या है जी? हम जवाबदेह लोग हैं, हमारी accountability है।

और आज स्वच्छता के कारण क्या स्थिति बनी है। ये जो स्वच्छता के लिए ranking हो रहा है और सबसे स्वच्छ शहर कौन सा, दूसरा कौन सा, तीसरा; और जब उसके अंक बाहर आते हैं तो उस हर शहर में चर्चा होती है। दबाव पैदा हो रहा है नीचे से राजनेताओं के ऊपर भी, सरकारों पर भी कि देखो उस शहर को तो स्वच्छता में नंबर लग गए हैं, तुम क्या कर रहे हो? फिर civil society भी मैदान में आती है कि भाई ये तो हमसे पीछे था, आगे निकल गया; चलो हम भी कुछ करें। एक positive competitive, एक माहौल बना है। और उसका भी एक अच्छा परिणाम इस सारी व्यवस्था में नजर आ रहा है।

ये बात सही है कि toilet बनाते हैं लेकिन उपयोग नहीं होता है। लेकिन जब ये खबरें आती हैं वो बुरी नहीं हैं। ये जगती हैं हमें इससे नाराज नहीं जाना चाहिए। हां, उसमें अगर ये आए तो अच्छा होगा कि भाई ये समाज का दायित्व है, परिवार का दायित्व है, व्यक्ति का दायित्व है कि वो इस toilet के ऊपर आग्रही बने।

मैं बराबर हूं, मैं तो पहले सामाजिक संगठन में काम करता था, राजनीति में बहुत देर से आया। गुजरात में मैं काम करता था, वहां Morvi में Machu Dam की हुनारत हो गई थी, हजारों लोग मारे गए थे, पूरा शहर पानी में डूब चुका था, तो बाद में वहां सफाई सेवा कार्य के लिए वहां लगा हुआ था काम करता था। सफाई-स्वच्छता, ये सब काम चल रहे थे, करीब महीने भर चला था। बाद में हम लोगों ने कुछ civil societies, NGO के माध्यम से तय किया कुछ जिनके घर-वर तबाह हो गए, कुछ मकान बनाएंगे, तो हमने एक गांव गोद लिया। लोगों से धन संग्रह किया और गांव का पुनर्निर्माण करना था; छोटा सा गांव था, कोई 350-400 घर होंगे। तो design बना रहे थे, मेरा बड़ा आग्रह था toilet तो होना ही चाहिए। गांव वाले कहते थे नहीं जी toilet की जरूरत नहीं, हमारे यहां तो खुला बहुत मैदान है, toilet मत बनाइए थोड़ा कमरा बड़ा बना दीजिए। मैंने कहा वो compromise नहीं करूंगा। कमरा जितने हमारे पास पैसे हैं उतने से बनाकर देंगे आपको लेकिन toilet तो होगा। खैर उनको तो मुफ्त में मिलने वाला था तो फिर ज्यादा उन्होंने झगड़ा नहीं किया, बन गया।

करीब 10-12 साल के बाद मैं उस तरफ गया तो मुझे लगा चलो यार पुराने लोगों से मिलके आऊं कि मैंने कई महीनों तक वहां रह करके काम किया था, तो मिलने चला गया। और जा करके मैं अपने माथे पर हाथ पटक रहा था। जितने toilet बनाए थे, सब में बकरियां बंधी हुई थीं। अब यह समाज का स्वभाव है, न बनाने वाले का दोष नहीं है, न सरकार का दोष है कोई आग्रह करती है। समाज का एक स्वभाव है। इन मर्यादाओं को समझते हुए भी हमें बदलाव लाना है।

कोई मुझे बताए क्या हिन्दुस्तान में अब आवश्यकता के अनुसार स्कूल बने हैं कि नहीं बने हैं? आवश्यकता के अनुसार टीचर employ हुए कि नहीं हुए? आवश्यकता के अनुसार स्कूल में सुविधाएं स्कूल के अंदर किताबें, सब हैं कि नहीं? बहुत एक मात्रा में हैं। उसकी तुलना में शिक्षा की स्थिति पीछे है। अब सरकार ये कोशिश करने के बाद भी, धन-खर्च के बाद भी, मकान बनाने के बाद भी, टीचर रखने के बाद भी, समाज का अगर सहयोग मिलेगा तो शिक्षा शत-प्रतिशत होते से नहीं देर लगेगी। यही infrastructure, इतने ही टीचर शत-प्रतिशत तरफ जा सकते हैं। समाज की भागीदारी के बिना ये संभव नहीं है।

सरकार सोचे कि हम इमारतें बना देंगे, टीचरों को तनखा दे देंगे तो काम हो जाएगा। हमें संतोष होगा, हां पहले इतना था इतना कर दिया। लेकिन जन-भागीदारी होगी, एक-एक अब स्कूल में बच्चा भर्ती होता है फिर आना बंद कर देता है। अब मां-बाप भी उसको पूछते नहीं हैं। ये toilet का भी वैसा ही मामला है जी। अब इसलिए स्वच्छता एक जिम्मेवारी के रूप में, एक दायित्व के रूप में, जितना हम एक वातावरण बनाएंगे तो हर किसी को लगेगा हां भाई जरा 50 बार सोचो।

और आप देखिए हमारे जो kids हैं, छोटे बच्चे हैं जिन घरों में, बेटे हैं, पोते हैं, पोती। वो एक प्रकार से मेरे स्वच्छता के सबसे बड़े ambassador हैं। ये बच्चे घर में दादा भी कहीं फेंक देता है, दादा उठा लो, दादा ये यहां मत डालो, ये घर में वातावरण बनाएं। अगर जो बात बच्चों के गले उतर गई है, हमारे गले क्यों नहीं उतरती?

सिर्फ हाथ धोना- हाथ न धोने से, कितने बालकों के खाने से पहले हाथ साबुन से साफ न कर पाने से कितने बालकों की मौत हो रही है। लेकिन ये विषय जैसे ही आप कहोगे, लोग साबुन कहां से लाएंगे, लोग पानी कहां से लाएंगे? मोदी को तो भाषण करना है। लोग हाथ कहां से धोएंगे? अरे भई नहीं धो सकते नहीं पर जो धो सकता है उनको तो धोने दो।

मोदी को गाली देने के लिए हजार विषय हैं अब। आपको हर दिन में कुछ न कुछ देता हूं, आप उसका उपयोग करो यार। लेकिन समाज में जो बदलाव लाने की आवश्यकता है, उसको ऐसे हम मजाकिया विषय या राजनीति के कटघरे में खड़ा न करें। एक सामूहिक दायित्व की ओर हम चलें, आप देखें बदलाव दिखेगा।

आप देखिए इन बच्चों ने जो काम किया। मैं daily इन बच्चों के चित्रों को social media में post कर रहा था, बड़े गौरव से post करता था। मैं उस बच्चे को जानता भी नहीं था। लेकिन मैंने चित्र देखा, बच्चे ने उत्साह दिखाया स्वच्छता का, मैं उसको post करता था और करोड़ों लोगों तक वो पहुंचता था, चलो भाई। ये क्यों कर रहे हैं, ये निबंध स्पर्धा, निबंध स्पर्धा से स्वच्छता होती है? तुरंत तो यही लगेगा नहीं होती है, drawing स्पर्धा से सफाई होती है, नहीं।

स्वच्छता के लिए वैचारिक आंदोलन भी जरूरी है। व्यवस्थाओं के विकास से ही परिवर्तन नहीं आता है जब तक कि वैचारिक आंदोलन पैदा नहीं होता। ये जो प्रयास हैं, फिल्म बनाइए, creativity लाइए, निबंध लिखिए; ये सारी चीजें इसको एक वैचारिक अधिष्ठान देने का प्रयास है। और जब कोई बात हमारे जेहन में विचार के रूप में घुस जाती है, तत्वों के रूप में स्थान पा लेती है, फिर- फिर उसको करना बड़ा सरल हो जाता है। तो ये जो और activity इसके साथ जोड़ी जाती हैं, उसके पीछे भी मकसद ये है। और मैं चाहूंगा, अब आप देखिए, एक समय ऐसा था और मुझे तब ये बड़ी पीड़ा होती थी; दोष ऐसा करने वालों का जरा भी नहीं है, और इसलिए उनका दोष मैं नहीं देता। लेकिन commercial world है, जिसमें से कमाई होती है उसको जरा आगे बढ़ाने का हर एक को शौक रहता है, हर एक को तो कमाई का interest रहेगा ही रहेगा।

आज से चार-पांच साल पहले के आप कई टीवी पर ऐसे कार्यक्रम देखोगे जिसमें किसी स्कूल में अगर बच्चे सफाई करते पाए गए तो बड़ी story बनती थी, टीचरों पर वार होता था कि बच्चों से सफाई करवाते हो स्कूल में? और फिर तो parents को भी मजा आ जाता है मौका मिला है, वो भी पहुंच जाते थे। क्यों मेरे बच्चों को पढ़ाई कराओगे या स्वच्छता कराओगे? आज इतना बदलाव आया है कि किसी स्कूल में बच्चे स्वच्छता कर रहे हैं तो टीवी की main खबर बन जाती है जी। ये छोटी चीज नहीं है जी।

और मैं मानता हूं इस पूरे आंदोलन को इस देश के मीडिया ने अपने कंधों पर न उठाया होता; तीन साल हो गए देश का print media, electronic media, पूरी तरह स्वच्छता के साथ अपने-आपको जोड़ दिया है, दो कदम कभी-कभी हमसे आगे चल रहे हैं।

मैंने देखा है इन बच्चों की, जितनों को बच्चों की फिल्मों को कुछ TV channels ने लगातार समय दे करके निश्चित समय दे करके निश्चित समय दिया। यही है सब लोग कैसे जुड़ें, जितना ज्यादा लोग जुड़ेंगे, आप देखिए दुनिया के अंदर अगर हमें अब अवसर है देश को आगे बढ़ाने का जी, 2022 तक हमें देश को ऐसी जगह पहुंचा कर रहना है, ऐसे चुप नहीं बैठने जी। अगर ये करना है तो ये एक बड़ी बात है जी।

कोई भी व्यक्ति, अगर हमारे घर में गंदगी पड़ी है और मेहमान आ जाए। शादी के लिए भी आए हो लेकिन थोड़ा इधर-उधर

पड़ा होगा तो सोचेंगे यार बाकी सब तो ठीक, लड़का तो बहुत पढ़ा-लिखा है लेकिन घर की हालत ऐसी है, यहां हम बेटी देकर क्या करेंगे, वापिस चला जाएगा। अगर कोई आएगा बाहर से तो हिन्दुस्तान देखेगा, आगरा-ताजमहल इतना बढ़िया, और जाकर कोई अगल-बगल में देखेगा तो परेशान हो जाएगा तो कैसे चलेगा जी?

कौन दोषी है मेरा मुद्दा नहीं है। हम सब मिल करके करेंगे तो ये हो सकता है; ये पिछले तीन साल में मेरे देशवासियों ने दिखा दिया है जी, Civil society ने दिखा दिया है, Media ने दिखा दिया है। और अगर इतना साथ-समर्थन हो और फिर भी अगर चीजों में गति हम न लाएं, फिर तो हम सबको अपने-आपको जवाब देना पड़ेगा।

मैं चाहता हूं इन बातों को हम बल दें, इसे आगे बढ़ाएं। आंकड़ों में तो आपको बताया, कहां से कहां पहुंचे हैं, लेकिन अभी भी, बनने के बाद भी ये एक लगातार करने का काम होता है, तभी जा करके होता है।

गांव में मंदिर होते हैं लेकिन सब लोग थोड़े मंदिर में जाते हैं जी। मनुष्य का स्वभाव है, नहीं जाते हैं। मंदिर होने के बाद भी नहीं जाते हैं। मस्जिद है तो भी नहीं जाएंगे, गुरुद्वारा होगा तो भी नहीं जाएंगे, एकाध उत्सव में चले जाएंगे। तो ये समाज का स्वभाव है, दुनिया चलती है वो अपनी दुनिया में चलता है। हमने उसको connect करना पड़ता है, कोशिश करनी पड़ती है। जब कोशिश करते हैं तो ठीकठाक से गाड़ी चल जाती है।

आंकड़ों के हिसाब से तो लग रहा है कि गति भी ठीक है, दिशा भी ठीक है। स्कूलों में toilet की दिशा में अभियान चलाया। अब स्कूलों में बच्चियां जाती हैं तो इन बातों में बढ़ी जागरूक रहती हैं। पूछती हैं, व्यवस्था देखती हैं, उसके बाद admission लेती हैं। पहले नहीं था जी, ठीक है, जो है झेल लेंगे। क्यों, झेले क्यों? हमारी बेटियां झेले क्यों?

और ये स्वच्छता के विषय को जब तक आप उस महिला के नजरिए से नहीं देखोगे, कभी इस स्वच्छता की ताकत का अंदाज नहीं आएगा। आप उस मां को देखिए कि जिसमें घर में हर किसी को कूड़ा-कचरा, चीजें इधर-उधर फेंकने का हक है। एक अकेली मां है, जिसको सब लोग नौकरी, स्कूल चले जाएं, दो घंटे तक वो सफाई करती रहती है। कमर टूट जाए तब करती रहती है, उस मां को पूछिए कि जब हम लोग जाने से पहले अपनी-अपनी चीजें ठीक रखते हैं तो मां तुम्हें कैसा लगता है? मां जरूरी कहेगी कि बेटे मेरी कमर टूट जाती थी, अच्छा हुआ अब तुम सारी चीजें जहां डालनी चाहिए, वहां डालते हो तो मेरा काम दस मिनट में निपट जाता है। मुझे बताइए हर मध्यम वर्ग के हो, उच्च-मध्यम वर्ग की हो, निम्न-मध्य वर्ग की हो, गरीब मां हो, जिसको घर की सफाई में आधा दिन चला जाता था; अगर परिवार के सब लोग अपनी चीज अपनी जगह पर रखें, मां को गंदगी साफ करने में मदद करें या न करें; सिर्फ अपनी चीज अपनी जगह पर रखें तो भी उस मां को कितनी राहत मिलती होगी, क्या ये काम हम नहीं कर सकते थे?

और इसलिए स्वच्छता का पूरा एक ही तराजू मेरे दिमाग में है। आप कल्पना कर सकते हैं जी। पुरुषों को मैं जरा पूछना चाहता हूं। आपको तो कहीं भी चौराहा मिल जाए खड़े हो जाते हो। माफ करना मुझे इस प्रकार की भाषा से। उस मां की, बेटी की, बहन की हालत देखी होगी, वो भी कभी बाजार जाती है कुछ खरीदने जाती हैं, क्या उसको भी तो प्राकृतिक requirement रहती होगी? लेकिन वह खुले में कभी कोई क्रिया नहीं करती हैं, घर पहुंचने तक अपने शरीर को दमन करती हैं, झेलती रहती हैं। वो कौन से संस्कार हैं? अगर उस मां के अपने ही घर में अपनी बहन, अपनी बेटी में संस्कार हैं, मेरे में क्यों नहीं हैं? क्योंकि हमें पुरुष के नाते हम मान के चलें, ये सब तो हमें इजाजत है? जब तक ये बदलाव नहीं आयेगा हम स्वच्छता को सही रूप में समझ नहीं पाएंगे।

आप कल्पना कीजिए गांव में रहने वाली माताएं-बहनें, even शहरों में भी झुग्गी-झोंपड़ी में रहने वाली माताएं-बहनें सुबह जल्दी उठ जाएंगी और सूरज उगने से पहले प्राकृतिक कामों के लिए बाहर जाएंगी, जंगलों में जाएंगी। डर रहता है इसलिए पांच-सात सहेलियों को ले करके जाती हैं और अगर एक बार उजाला हो गया फिर भी कभी requirement रही, अंधेरे तक इंतजार करती हैं; शरीर पर कितना दमन होता है, आप कल्पना कीजिए जी। उस मां के स्वास्थ्य का क्या होता होगा, उसको सुबह 9-10 बजे शौच जाने की इच्छा हुई लेकिन उजाला है इसलिए जा नहीं पा रही और शाम को 7 बजे तक का इंतजार करती है, कहीं अंधेरा हो जाए तब जा करके जाऊं। उस मां की हालत क्या होती होगी, मुझे बताइए। अगर इतनी सी संवेदना हो तो स्वच्छता के विषय में आपको किसी टीवी चैनल को नहीं देखना पड़ेगा, किसी टीवी वालों के संबोधन को नहीं समझना पड़ेगा, किसी प्रधानमंत्री की जरूरत नहीं पड़ेगी, किसी राज्य सरकार की जरूरत नहीं पड़ेगी, ये अपने-आप में

एक जिम्मेवारी का हिस्सा बनेगा।

और इसलिए मैं सभी देशवासियों से आग्रह करता हूँ। अभी यूनिसेफ ने एक रिपोर्ट दी है, उसने करीब भारत में 10 हजार उन परिवारों का सर्वे किया, जिन्होंने अब toilet बनाया है, और पहले की तुलना की। और उनका आकलन है कि एक परिवार में toilet न होने से, स्वच्छता की जागरूकता न होने से बीमारी के पीछे सालाना 50,000 रुपये औसत खर्चा होता है। परिवार का एक मुखिया बीमार हो गया, बाकी सारे काम ठप्प हो जाते हैं। ज्यादा बीमार हो गया तो परिवार के और दो लोगों को उसकी सेवा में लगना पड़ता है। बीमारी से बचने के लिए किसी से, साहूकार से ज्यादा ब्याज से पैसा लाना पड़ता है। एक प्रकार से 50 हजार रुपये का बोझ एक गरीब परिवार पर आ जाता है।

अगर हम स्वच्छता को अपना धर्म मान लें, स्वच्छता को अपना कार्य मान लें, एक-एक गरीब परिवार में 50 हजार रुपयों की और बीमारी के कारण जो मुसीबत आती है, उससे हम बचा सकते हैं। उसके जेब में हम रुपये डालें या न डालें, लेकिन उसके जीवन में ये 50 हजार रुपया बहुत काम आता है जी। और इसलिए ये जो सर्वे आते हैं, जो जानकारी आती है, इसको एक सामाजिक जिम्मेवारी के रूप में हम सबने निर्वाह करना चाहिए।

मैं जब से प्रधानमंत्री बना हूँ बहुत सारे लोग मुझे मिलते हैं। राजनीतिक कार्यकर्ता मिलते हैं, जो retired अफसर हैं वो मिलते हैं, कुछ समाज जीवन में काम करने वाले भी मिलते हैं। और बहुत विवेक और नम्रता से मिलते हैं, बहुत प्यार से मिलते हैं। और चलते-चलते फिर एक बायोडाटा मुझे पकड़ा देते हैं और धीरे से कहते हैं कि मेरे लिए कोई सेवा है तो बताना। बस मैं हाजिर हूँ आप जो भी कहेंगे। इतना प्यार से बोलते हैं जी, तो मैं धीरे से कहता हूँ, ऐसा करिएगा स्वच्छता के लिए कुछ समय दीजिए ना; वो दोबारा नहीं आते हैं।

अब मुझे बताइए मेरे से काम मांगने आते हैं, बढ़िया बायोडाटा लेकर आते हैं, और सब देखकर मैं कहता हूँ ये करो तो आते नहीं हैं। देखिए कोई काम छोटा नहीं होता है जी, कोई काम छोटा नहीं होता है। अगर हम हाथ लगाएंगे तो काम बड़ा हो जाएगा जी और इसलिए हमने बड़ा बनाना चाहिए।

मैं उन सबको हृदय से बधाई देना चाहता हूँ, उस 15 दिन में फिर से एक बार इस में गति देने में बहुत बड़ा काम किया है। लेकिन ये सब चीजें, अभी भी मैं कहता हूँ ये शुरुआत है, करना बहुत बाकी है। जिन बालकों ने उत्साह के साथ हिस्सा लिया है, जिन स्कूलों के teachers ने उनको प्रोत्साहित किया- किसी ने फिल्म बनाई होगी, किसी ने निबंध लिखे होंगे, कुछ लोग खुद स्वच्छता के अंदर जुड़े, कुछ स्कूलों ने तो लगातार सवा-सुबह आधा घंटा गांवों के अलग-अलग इलाकों में जा करके माहौल बनाया।

कुछ लोगों ने महापुरुषों के statue, मैं तो हैरान हूँ जी। महापुरुषों के statue लगाने के लिए हम इतना झगड़ा करते हैं, सब राजनेता, सब political पार्टियां, सब लोग। लेकिन बाद में सफाई करने के लिए कोई जिम्मेवारी लेने के लिए तैयार नहीं। हर एक को लगता है मैं उनको मानता हूँ उनका पुतला लगना चाहिए, मैं उनको मानता हूँ उनका पुतला लगना चाहिए। लेकिन उसी समाज के, उसी के पीछे लगे हुए लोग उनको उसकी सफाई में interest नहीं है, फिर उसके ऊपर आ करके कबूतर बैठकर जो करना है करें, मैदान खुला है।

ये, ये समाज जीवन के दोष हैं। और इसलिए ये हम सबका दायित्व बनता है। कोई अच्छा है कोई बुरा है इससे मेरा मत नहीं है, हम सबने सोचना है। और अगर हम सब सोचेंगे तो अवश्य परिणाम मिलेगा। और इसलिए मैं सत्याग्रही स्वच्छाग्रही, स्वच्छाग्रही सभी मेरे देशवासियों को हृदय से बहुत-बहुत शुभकामनाएं देता हूँ। पूज्य बापू और लाल बहादुर शास्त्री की जन्म-जयंती पर हम फिर एक बार अपने-आपको देश को समर्पित करें, स्वच्छता को हम प्राथमिकता से लें और ये स्वच्छता ऐसा काम है, कुछ नहीं कर सकता, जो देश की सेवा के लिए और कुछ करने की ताकत नहीं रखता है, ये कर सकता है। ये इतना सरल काम है जी। जैसे आजादी के आंदोलन में गांधी ने कहा, 'कुछ नहीं कर सकते हो, तकलि लेकर बैठो बस' ये आजादी का काम है। मुझे लगता है श्रेष्ठ भारत बनाने के लिए ये छोटा सा काम हर हिन्दुस्तानी कर सकता है। चलिए रोज 5 मिनट, 10 मिनट, 15 मिनट, आधा घंटा, कुछ न कुछ मैं करूंगा। आप देखिए, देश में बदलाव स्वाभाविक आएगा और ये बात साफ है जी दुनिया के सामने हमने भारत को दुनिया की नजरों से देखने की आदत रखनी है, वैसा करना ही होगा और करके रहेंगे।

बहुत-बहुत धन्यवाद।

अतुल तिवारी / शाहबाज हसीबी / निर्मल शर्मा

